शुक्रवार, 20 दिसम्बर 2024

मौसम

तापमान 27 – 16
आर्द्रता 64%
सूर्योदय: 6:12 सूर्यास्त: 16:57

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।

www.samagya.in

समाज्ञा

स्थानीय खबरें पृष्ठ तीन, चार और पांच पर

कोलकाता, पौष कृष्णपक्ष पंचमी, वि.स. 2081, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रुपये

सुशासन का प्रतीक माने जाते हैं अटल बिहारी वाजपेयी : मुख्यमंत्री योगी –पृष्ठ 6

सुविचार : कैसे वक्त को बुरा कह दें भाई, यही तो सबकी असलियत बताता है।

RED-X
B.W.P. PLY,
BOARDS& DOORS
'X' Factor that Makes A Difference
Stockist :
GULAB CHAND
LAL CHAND& Co.
9831114555
9874415555

सियासत धक्कामार, मर्यादा तार-तार!

सत्तापक्ष और विपक्ष का संसद परिसर में आमने-सामने प्रदर्शन

शेयर बाजार में लगातार चार दिन की गिरावट से निवेशकों की संपत्ति 9.65 लाख करोड़ रुपये घटी

नयी दिल्ली : शेयर बाजार में चार दिन की तेज गिरावट में निवेशकों की संपत्ति 9.65 लाख करोड़ रुपये घट गई है। इन चार सत्रों में बीएसई सेंसेक्स 2,915.07 अंक यानी 3.54 प्रतिशत टूटा है। शेयर बाजार में बृहस्पतिवार को लगातार चौथे दिन गिरावट रही और बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 964.15 अंक टूटकर 79,218.05 अंक पर बंद हुआ। दिन में कारोबार के दौरान यह 1,162.12 अंक टूटकर 79,020.08 अंक पर आ गया था। शेयर बाजारों में कमजोरी के रुख के चलते बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का बाजार पूंजीकरण चार दिन में 9,65,935.96 करोड़ रुपये घटकर 4,49,76,402.63 करोड़ रुपये (5,290 अरब डॉलर) रह गया। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने बुधवार को 1,316.81 करोड़ रुपये के शेयर बेचे। बीएसई पर 2,315 शेयरों में गिरावट आई, जबकि 1,680 शेयरों में तेजी आई और 100 शेयरों में कोई बदलाव नहीं हुआ।

बकाया कर्ज से दो-गुना से अधिक वसूलने के लिए राहत की मांग करूंगा: विजय माल्या पृष्ठ 7

दिल्ली पुलिस ने राहुल गांधी के खिलाफ दर्ज किया मामला

नयी दिल्ली : बाबासाहेब आंबेडकर से संबंधित मुद्दे पर विपक्ष और सत्तापक्ष के सदस्यों ने बृहस्पतिवार को संसद परिसर में प्रदर्शन किया और इस दौरान उनकी कथित तौर पर धक्का-मुक्की भी हुई। भारतीय जनता पार्टी का आरोप है कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने धक्का-मुक्की की जिस वजह से उसके बुजुर्ग सांसद प्रताप सारंगी चोटिल हुए। सारंगी को राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया। दूसरी तरफ, राहुल गांधी ने दावा किया कि भाजपा सांसदों ने उन्हें और अन्य विपक्षी सदस्यों को संसद भवन में जाने से रोका और धक्का-मुक्की की। गृह मंत्री अमित शाह की, बाबासाहेब आंबेडकर से संबंधित टिप्पणी को लेकर विरोध जताते हुए विपक्षी सदस्यों ने मार्च निकाला तो भाजपा सांसदों ने कांग्रेस पर बाबासाहेब के अपमान का आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया। संसद भवन के 'मकर द्वार' के निकट सत्तापक्ष और विपक्ष के सदस्य एक दूसरे के सामने आ गए और जमकर नारेबाजी की। कांग्रेस ने एक वीडियो जारी कर दावा किया कि भाजपा सदस्यों ने संसद परिसर में राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और प्रियंका गांधी वाद्रा समेत कई महिला सांसदों के साथ धक्का-मुक्की की, जो भाजपा की तानाशाही को दिखाता है। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने संवाददाताओं से बातचीत में आरोप लगाया, ''राहुल गांधी मारपीट करने के लिए बीच में घुसे थे। उनका व्यवहार मानो गुंडे का व्यवहार था, यह देश गुंडे को बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने हमारे एक बुजुर्ग सांसद को धक्का देकर गिरा दिया।''

राहुल गांधी के खिलाफ एफआईआर

दिल्ली पुलिस ने गुरुवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ संसद में धक्का-मुक्की मामले में एफआईआर दर्ज कर ली। बीजेपी सांसदों ने गुरुवार को ही कांग्रेस सांसद के खिलाफ संसद मार्ग थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। हालांकि बीजेपी की शिकायत के बावजूद हत्या के प्रयास के आरोप वाली धारा में राहुल गांधी पर केस दर्ज नहीं हुआ है। दिल्ली पुलिस ने बीएनएस की धारा 115 (स्वेच्छा से चोट पहुंचाना), धारा 117 (स्वेच्छा से गंभीर चोट पहुंचाना), धारा 125 (दूसरों के जीवन या व्यक्तिगत सुरक्षा को खतरे में डालने का कार्य), धारा 131 (आपराधिक बल का प्रयोग), धारा 351 (आपराधिक धमकी) और धारा 3(5) के तहत मामला दर्ज किया है। पीटीआई के मुताबिक दिल्ली पुलिस के अधिकारी ने बताया कि राहुल गांधी को मामले के संबंध में पूछताछ के लिए बुलाया सकता है। पुलिस लोकसभा सचिवालय से उस क्षेत्र की सीसीटीवी फुटेज उपलब्ध कराने का अनुरोध करेगी, जहां कथित घटना हुई थी। राहुल गांधी के खिलाफ लगाई गई सभी धाराएं जमानती हैं, सिवाय धारा 117 के, जिसके लिए सजा चोट की गंभीरता पर निर्भर करती है। इस धारा में सात साल से लेकर आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान है।

ध्यान भटका रही है भाजपा, शाह की माफी और इस्तीफा होना चाहिए: राहुल

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने बृहस्पतिवार को भारतीय जनता पार्टी पर गृह मंत्री अमित शाह के डॉ बी आर आंबेडकर संबंधित बयान के मुद्दे से ध्यान भटकाने के प्रयास करने का आरोप लगाया और कहा कि शाह को माफी मांगनी चाहिए एवं इस्तीफा देना चाहिए। उन्होंने यहां पार्टी मुख्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में यह आरोप भी लगाया कि भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सोच संविधान और बाबासाहेब आंबेडकर के खिलाफ है। उन्होंने कहा, भाजपा और आरएसएस की सोच संविधान और आंबेडकर विरोधी है। ये लोग आंबेडकर की स्मृति और योगदान को मिटाना चाहते हैं। गांधी ने दावा किया कि संसद परिसर में आज जो हुआ, वो शाह के बयान से ध्यान भटकाने के लिए किया गया। कांग्रेस नेता ने कहा कि गृह मंत्री को मांगनी चाहिए और उन्हें इस्तीफा देना चाहिए।

भाजपा के घायल दोनों सांसद आईसीयू में भर्ती, रक्तचाप नियंत्रण में

संसद परिसर में बृहस्पतिवार को विपक्ष और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के सांसदों के बीच हुई 'धक्का-मुक्की' के कारण सिर में चोट लगने के बाद राम मनोहर लोहिया (आरएमएल) अस्पताल में भर्ती कराए गए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के दोनों सांसद अभी गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में हैं और उनके स्वास्थ्य पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है। चिकित्सकों ने यह जानकारी दी।

बिरला का निर्देश: संसद भवन के किसी द्वार पर प्रदर्शन नहीं कर सकते सांसद

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बृहस्पतिवार को सत्ता पक्ष और विपक्ष के सांसदों के बीच धक्का-मुक्की की घटना के बाद निर्देश दिया कि कोई भी राजनीतिक दल, सांसद और सांसदों का समूह संसद के किसी भी द्वार पर प्रदर्शन नहीं कर सकते। सूत्रों ने यह जानकारी दी। सूत्रों ने बताया, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सख्त निर्देश जारी किए हैं कि कोई भी राजनीतिक दल, संसद सदस्य या सदस्यों का समूह संसद भवन के गेट पर कोई धरना और प्रदर्शन नहीं करेगा।

खड़गे के घुटने में लगी चोट!

बीजेपी के राहुल गांधी पर आरोपों के बीच कांग्रेस भी सत्तारूढ़ पार्टी पर धक्कामारी के आरोप लगा रही है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि बीजेपी सांसदों के धक्कों की वजह से उनके घुटने में चोट लग गई।

खड़गे ने इस सबंध में लोकसभा स्पीकर को चिट्ठी लिखी है, जिसमें उन्होंने कहा है कि जब मैं इडिया ब्लॉक के सांसदों के साथ मकर द्वार पहुंचा तो वहां बीजेपी सांसदों ने मेरे साथ धक्का-मुक्की की। इससे मैं अपना संतुलन खो बैठा और जमीन पर बैठ गया।

शिक्षक भर्ती घोटाला

चीफ जस्टिस ने उठाए गंभीर सवाल..'दाल में कुछ काला है या सब कुछ काला है'

नई दिल्ली/कोलकाता : बंगाल में 25,000 शिक्षकों और स्कूल कर्मियों की भर्ती में हुए घोटाले में सुप्रीम कोर्ट में गुरुवार को एक महत्वपूर्ण सुनवाई हुई, जिसमें चीफ जस्टिस संजीव खन्ना ने तीखी टिप्पणियां कीं। इस मामले की सुनवाई के दौरान, राज्य सरकार की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश द्विवेदी पैरवी कर रहे थे। उन्होंने शीर्ष न्यायालय से कहा कि राज्य सरकार इस मामले में पूरी तरह से जांच में सहयोग कर रही है और हाईकोर्ट के आदेश का समर्थन करती है, जिसमें दागी और बेदाग उम्मीदवारों के बीच अलगाव की बात की गई थी। सुप्रीम कोर्ट की पीठ की अध्यक्षता कर रहे चीफ जस्टिस ने इस मामले में गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि हमें यह स्पष्ट करना होगा कि क्या ओएमआर शीट का सभी डेटा सर्वर में सुरक्षित है, या कुछ डेटा गायब है? चीफ जस्टिस खन्ना ने राज्य सरकार से यह भी पूछा कि क्या अनियमितताओं के बावजूद अतिरिक्त पदों का सृजन किया गया और क्या राज्य ने यह सुनिश्चित किया कि अवैध नियुक्तियां जारी रहें। इसके अलावा, चीफ जस्टिस ने भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा 65बी के संदर्भ में भी एक महत्वपूर्ण बात कही। उन्होंने कहा कि साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किए गए डेटा और प्रमाण पत्र केवल सर्वर से डाउनलोड किए गए हैं, लेकिन हार्ड डिस्क में डेटा की प्रामाणिकता धारा 65बी के अंतर्गत पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो सकती। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने इस घोटाले में गड़बड़ियों का संकेत दिया और कहा कि यह स्पष्ट है कि दागी उम्मीदवारों को बेदाग उम्मीदवारों से अलग करना संभव नहीं है। और यह स्पष्ट है कि आपकी तरफ से कुछ गड़बड़ी हुई है, और अब हमें यह जांचना होगा कि पंकज भंसाल ने भी कोई गलत काम किया है या नहीं।

कुलगाम मुठभेड़: पांच आतंकवादी ढेर, दो सुरक्षाकर्मी घायल

श्रीनगर : जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में बृहस्पतिवार को सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में हिज्बुल मुजाहिदीन के एक स्वयंभू शीर्ष कमांडर सहित संगठन के पांच आतंकवादी मारे गए। अधिकारियों ने यहां यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ में सुरक्षाबलों के दो जवान घायल हुए हैं। उन्होंने कहा कि संदिग्ध आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद सुरक्षाबलों ने बीती रात जिले के बेहिबाग इलाके के कद्देर गांव में घेराबंदी कर तलाश अभियान शुरू किया। उन्होंने बताया कि तलाश अभियान के दौरान आतंकवादियों ने सुरक्षाबलों पर गोलियां चलाईं जिसके बाद अभियान मुठभेड़ में तब्दील हो गया। अधिकारियों के अनुसार, मारे गए आतंकवादियों में हिज्बुल मुजाहिदीन का स्वयंभू शीर्ष कमांडर फारूक अहमद भट उर्फ नाली भी शामिल है जो कथित तौर पर दक्षिण कश्मीर क्षेत्र में आतंकवाद से जुड़े कई अपराधों में संलिप्त था।

संवेदनशील व्यवहार व पुनर्वास पर ही जोर

बीते सोमवार सुप्रीम कोर्ट ने नशीले पदार्थों के खिलाफ लड़ाई में संवेदनशील व्यवहार व मानवीय दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया। इस मुहिम से जुड़े महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए अदालत ने दोटूक शब्दों में कहा कि नशे की लत के शिकारों का दानवीकरण करने के बजाय उनके उपचार व पुनर्वास को प्राथमिकता बनाया जाए। यह हकीकत है कि हाल ही के वर्षों में विभिन्न घातक नशीले पदार्थों का प्रयोग तेजी से बढ़ा है, लेकिन ऐसे लोगों के प्रति समाज में दुराग्रहपूर्ण नकारात्मकता होती है। समाज को ऐसे लोगों की पहचान संवेदनशील ढंग से करके, उन्हें इस लत से बचाने के लिये मनोवैज्ञानिक प्रयास करने चाहिए। निस्संदेह, कठोर व्यवहार करने से यह समस्या और जटिल हो जाती है। चिंता की बात यह है कि देश के तमाम इलाकों में नशे की दलदल के विस्तार की खबरें आ रही हैं। लेकिन उस अनुपात में सरकारों की तरफ से इस चुनौती के मुकाबले युद्धस्तर पर पहल होती नजर नहीं आ रही है। वहीं समाज की उदासीनता भी चिंता बढ़ाने वाली है। निस्संदेह, हमें नशे करने वालों को खतरनाक व्यक्ति के रूप में देखने के बजाय, समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास करना चाहिए। समाज के कठोर व तिरस्कारपूर्ण व्यवहार के चलते नशे के शिकार लोग और गहरी दलदल में उतरते चले जाते हैं। यदि हम इन युवाओं में नशे की दलदल से निकलने इच्छाशक्ति पैदा करें तो नशे के खिलाफ हमारी जंग कामयाब हो सकती है। लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि उनके प्रति नकारात्मक धारणा व उपेक्षा से उपजे मनोवैज्ञानिक द्वंद्व से व्यक्ति गहरे नशे की ओर उन्मुख हो जाता है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि जब हमने वर्ष 2047 तक नशामुक्त भारत बनाने का लक्ष्य रखा है तो उसे पाने के लिये कारगर रणनीति अपनाने की भी जरूरत है। विशेषकर सामाजिक स्तर पर व्यापक व्यावहारिक पहल, जो जमीनी स्तर पर बड़े बदलाव का वाहक बन सके।

यह तार्किक है कि सुप्रीम कोर्ट की पीठ को कहना पड़ा कि नशे की लत के शिकार लोगों को अपराधी की तरह देखना गलत है। निश्चित रूप से विभिन्न हितधारकों मसलन केंद्र व राज्य सरकारों, नागरिक समाजों, परिवारों व शैक्षणिक संस्थानों को संकट से निपटने के लिये खुलकर की जाने वाली चर्चाओं पर ध्यान देना चाहिए। इसके विपरीत यदि हम उन्हें अपराधियों की तरह देखते रहे तो उन्हें हम पतन के गर्त की ओर उन्मुख कर देंगे। हम स्वीकार करें कि देश के युवाओं के भविष्य पर संकट मंडरा रहा है। उन्हें करुणा और संवेदनशीलता की दृष्टि से देखे जाने की जरूरत है ताकि उन्हें अपनी स्थिति पर आत्ममंथन का मौका मिल सके। दरअसल, नशे के शिकार ये लोग इस नशे की नदी की छोटी मछलियां हैं। बड़ी मछलियां तो नशीली दवाओं के व्यापारी और तस्कर हैं। जो एक फलते-फूलते अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क का हिस्सा हैं। जो कानून व पुलिस की गिरफ्त में आने से बचने के लिये धनबल से तमाम तरीके इजाद कर लेते हैं। इसे पंजाब के हालात के रूप में भी देखा जाना चाहिए। दरअसल, यह सीमा पार से चलाये जा रहे नशे के चक्रव्यूह में फंस रहा है। साल की शुरुआत में अत्यधिक नशे की डोज से मरने की घटनाओं से पंजाब हिल गया था। जरूरी है कि नशे के खिलाफ लड़ाई में युवाओं की माताओं व बहनों को शामिल किया जाए। परिवार का भावनात्मक संबल कई युवाओं को नशे की अंधी गलियों से बाहर निकालने में सहायक होगा। लेकिन नशे के खिलाफ अभियान चलाने के बड़े-बड़े दावे करने वाले तंत्र को बरनाला में नशे के खिलाफ बुलंद आवाज उठाने वाले एक सरपंच की हत्या पर आत्ममंथन करना चाहिए। सोचना होगा कि यदि समाज में नशे के खिलाफ उठने वाली आवाजों को संरक्षण न दिया गया तो लोग नशे के खिलाफ आवाज उठाने से डरने लगेंगे। निश्चित रूप से नशे के खिलाफ जन आंदोलन ही स्थिति को बदलने में सहायक होगा। साथ ही नशीले पदार्थों के सेवन के पीछे छिपे बहुआयामी कारकों पर भी मंथन की जरूरत है ताकि पता चले कि क्यों युवा भावनात्मक पलायन के कारण नशा करते हैं।

आज का पंचांग

कोलकाता : 20 दिसम्बर, शुक्रवार, 2024, विक्रम सम्वत् 2081, पौष कृष्णपक्ष पंचमी, 10:52 तक, नक्षत्र : मघा, 27:44 तक, योग : विष्कंभ, 18:14 तक, सूर्योदय: 6:12, सूर्यास्त: 16:57 चन्द्रोदय : 21:46, चन्द्रास्त: 10:10, शक सम्वतः 1945 सुभाकृतु, सूर्य राशि : धनु, चन्द्र राशि : सिंह, राहू काल : 10:14 से 11:34

राशिफल

मेष : मेष राशि वालों के लिए आज का दिन कुछ खास व्यवस्थाएं करने में बीतेगा। आपको पूरे दिन लगातार काफी भागदौड़ करनी पड़ेगी। किसी काम में आपका मन नहीं लगेगा।

वृष : वृषभ राशि वालों के लिए आज का दिन शुभ है। नए लोग किसी काम में आपकी मदद करेंगे और कारोबार में आपको भाग्य का साथ मिलेगा। आपको धन लाभ भी हो सकता है।

मिथुन : मिथुन राशि वालों को करियर और कारोबार के मामले में भागदौड़ और चिंता का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी की सेहत का ध्यान रखें। मेहमानों का आगमन भी हो सकता है।

कर्क : कर्क राशि वालों के लिए दिन आर्थिक लाभ से भरा होगा। आपकी संतान तरक्की करेगी और कारोबार में आपकी सभी का है। संतान से खुशखबरी मिलेगी और घर में खुशी का माहौल रहेगा।

सिंह : सिंह राशि के लोगों के लिए कार्यक्षेत्र के मामले में बदलाव से भरा होगा और आपको कारोबार में सफलता प्राप्त होगी। आपके सम्मान में वृद्धि होगी और दिन सफलता से भरा होगा।

कन्या : कन्या राशि के लोगों को करियर के मामले में सफलता प्राप्त होगी और आपकी योजनाएं सफल होंगी। आपको व्यापार में मनचाहा लाभ होगा। कई लोग मदद मांगने आ सकते हैं।

तुला : तुला राशि वालों के लिए दिन आनंददायक रहेगा। किसी दोस्त की सलाह से आपके बिगड़े काम बन सकते हैं। आपके लिए धन वृद्धि के योग हैं और कारोबार में भाग्य का पूरा साथ मिलेगा।

वृश्चिक : वृश्चिक राशि वालों के लिए दिन अनुकूल फल देने वाला होगा। आपके लिए धन सम्मान में वृद्धि होगी। आज का दिन शानदार बीतेगा। किसी विशेषज्ञ की सलाह से आपको लाभ होगा।

धनु : धनु राशि वालों को अचानक धन लाभ हो सकता है। अपनी समस्याओं का खुद समाधान ढूंढें, इससे स्थायी सफलता मिलेगी। आपके लिए शुभ योग बनने से सफलता प्राप्त होगी।

मकर : मकर राशि वालों को व्यापार के मामले में लाभ होगा और आपका दिन तरक्की से भरा होगा। दोपहर तक बिखरे काम समेट लें, आगे समय नहीं मिलेगा।

कुम्भ : कुंभ राशि वालों के लिए दिन बहुत अच्छा है। धन, धर्म और कीर्ति में वृद्धि होगी। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। हर काम में सफलता मिलेगी। आपके भाग्य में वृद्धि होगी।

मीन : आज का दिन आपके लिए धन संबंधित मामलों में अच्छा रहने वाला है। यदि आपका धन को लेकर कोई काम अटका हुआ था, तो वह भी पूरा होगा।

विश्व साहित्यिक आलोचना पद्धति में बदलाव के प्रतिबिम्ब

डॉ.राम आह्लाद चौधरी
प्रोफेसर, कलकत्ता विश्वविद्यालय

विश्व साहित्य क आलोचना पद्धति केवल साहित्य को परखने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन और जगत की वास्त-विकताओं को समझने और सुधारने का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण बन चुकी है। इसके माध्यम से साहित्य को नए अर्थ, संदर्भ, और दिशा प्रदान की जाती है।

साहित्य की आलोचना पद्धति में नया बदलाव तेजी से शुरू हुआ है , हालांकि दुनिया यही मानती है कि परिवर्तन शाश्वत नियम है।परिवर्तन ही जीवन और जगत की गति है।इस गति को तेज करने में आलोचना पद्धति काफी सक्रिय होती है।मानव ने इसी पद्धति के जरिए इस दुनिया को सुंदर बनाने का संकल्प लिया है। सच यही है की आलोचना पद्धति के जरिए संवाद के द्वार खुलते हैं ,अर्थ के विविध आयाम सामने आते हैं तथा संबंध में मजबूती आती है।इन तमाम संकेतों से यही लगता है कि कहीं उत्पादन की पद्धतियों में परिवर्तन तो शुरू नहीं हो गया है।उत्पादन की पद्धतियों में भी परिवर्तन होता है, जिसका असर जीवन पर पड़ता है।

यह परिवर्तन वास्तविकता की जमीन पर होता है, पर सर्जकों की कल्पना जारी रहती है।यदि इस दृष्टि से विचार किया जाए तो स्पष्ट होगा कि कविता से लेकर उपन्यास तक, छोटी कहानी से लेकर यात्रा वृत्तांत तक ; एक भारी परिवर्तन शुरू हो चुका है। यही कारण है कि विश्व साहित्य की आलोचना पद्धति में भी परिवर्तन लक्षित होने लगा है।

खासकर इस युग में साहित्य की आलोचना ने एक अद्भुत रास्ता बनाया है। इस रास्ते की मंजिल कहां है , कहना मुश्किल है पर इस रास्ते पर चलने वालों की संख्या कम नहीं है। इस संख्या का अंतिम परिणाम क्या होगा, इस प्रश्न पर एक तरह का संवाद जारी है , लेकिन अभी तक कोई सुनिश्चित परिणाम सामने नहीं आया है। इस संदर्भ में फिलहाल कुछ कहना पूरी तरह गलत होगा यदि कुछ कहना भी है तो यही की सारी चीजें अनुमान पर आधारित नहीं हैं। अनुमान अचानक अनुभव में तब्दील नहीं होता है। अनुभव तभी हासिल होता है जब कोई घटना घटे। हर घटना के अपने अनुभव होते हैं तथा सभी अनुभवों को किसी एक स्थान पर एकत्रित करना भी मुश्किल होता है। इस प्रयास के रागात्मक संबंधों पर विद्वान अक्सर विचार करते हैं और जब विद्वान इन संबंधों पर विचार करते हैं तब यही कहा जाता है कि अनुभव अनंत है।

जाहिर है कि चर्चा ही आलोचना पद्धति को सफल बनाती है क्योंकि आलोचना पद्धति के केंद्र में चर्चा होती है और यही सर्जना की मार्मिकता बताती है। सबसे बड़ी बात यह है कि विद्वानों ने यह बताने की कोशिश की है कि इस सर्जना का आधार दार्शनिक होता है। दार्शनिकता के बिना रचना नहीं हो पाती है। ऐसी स्थिति में निजी अनुभव कभी भी दर्शन नहीं बन पाता है, हालांकि मानव सभ्यता और संस्कृति में ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं जहां अनुभव धीरे-धीरे दर्शन के चौखट में प्रविष्ट करता है।

प्रचार और प्रौद्योगिकी के युग में प्रविष्टि का प्रसंग तब सामने आता है,जब साहित्यिक आलोचना के बदलते स्वरूप को संबोधित करने का सवाल उठता है।इस प्रश्न पर ध्यान देने से पता चलता है इस डिजिटल युग में समावेशी आलोचना पद्धति को एक नया आयाम दिया गया है।इस नए आयाम की चर्चा विश्व स्तर पर जोर से आरंभ हुई है। इस चर्चा का नया अर्थ सामने आया है यानी लिखित शब्दों के संसार ने पुरानी शब्दावली को खारिज किया है। नई शब्दावली रचने की प्रक्रिया तेज हुई है।नए शब्दों के जरिए नई रोशनी की खोज की जाती है।

गहराई में जाने पर पता चलता है कि संतुष्टि तुच्छता का पर्याय है। यही कारण है कि इस युग के संतुष्टि किसी मायने में सही नहीं हैं, क्योंकि संतुष्ट व्यक्ति अपनी तुच्छता के लिए जाना जाता है।दरअसल ऐसे व्यक्ति संघर्ष के मैदान से पलायन करते हैं।इसलिए ऐसे व्यक्तियों में मुहब्बत नहीं दिखती और जहां मुहब्बत नहीं है, वहीं सारी समस्याएं दिखती हैं।यदि इन समस्याओं का जिक्र करने से आलोचना पद्धति चूक जाती है, तो उसकी सीमाएं सामने आ जाती हैं।

आलोचना पद्धति का प्रमुख काम है - वस्तु की सीमा को विस्तार देना, यदि सीमाओं को तोड़ने में आलोचना पद्धति काम नहीं आती है तो उस पद्धति का जिक्र नहीं होता है। सच तो यह है की आलोचना जीवन को समर्थ और समृद्ध करती है। यही कारण है की आलोचना की कई शाखाएं हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों की सर्जना को उर्वरता देती हैं।वर्तमान में आलोचना का दायरा विस्तृत होते नजर आता है।

समकालीन साहित्यिक आलोचना में नई प्रवृत्तियां दिखीं हैं। उन प्रवृत्तियों ने सांस्कृतिक सामाजिक बदलाव को प्रतिबिंबित किया है।

प्रौद्योगिकी के युग में तकनीकी बदलाव को प्रकट करना उन प्रवृत्तियों की प्रमुख वाणी बन गयी है। यही कारण है कि विश्व स्तर पर पोस्ट क्रिटिक की काफी चर्चा बढ़ गई है। पारंपरिक आलोचनात्मक सिद्धांतों को इस पोस्ट क्रिटिक ने एक नया रूप दिया है।

इस पोस्ट क्रिटिक में आलोचना और प्रशंसा के बीच संतुलन कायम करने की प्राथमिकता होती है। इस आलोचना पद्धति में साहित्यिक कृतियों के भावनात्मक और सौंदर्यात्मक पहलुओं पर गंभीरता से विचार किया जाता है।

वर्तमान में डिजिटल मानविकी पर विशेष चर्चा शुरू हुई है।साहित्यिक अध्ययन में डिजिटल उपकरण का उपयोग बढ़ा है। कंप्यूटर आधारित विश्लेषण पर जोर देने की प्रवृत्ति बढ़ी है।दूरस्थ पठन से साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना इसी का शुभ परिणाम है।पारिस्थितिक आलोचना के जरिए साहित्य और पर्यावरण के बीच के रिश्तों को उजागर करने की प्रवृत्ति भी बढ़ी है।इस आलोचना पद्धति ने समाज में प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण को बदलकर रख दिया है।

विश्व स्तर पर यह देखा जाता है कि साहित्यिक आलोचना ने विविध आवाजों को समेटने का प्रयास शुरू किया है। इस पद्धति से साहित्यिक आलोचना परंपरा समृद्ध होती है।विद्वानों ने आलोचना को मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और सांस्कृतिक अध्ययन से जोड़ा है।इसके चलते साहित्यिक आलोचना पद्धति की गति तीव्र हुई है।

दरअसल पहले साहित्यिक आलोचना में करीबी पठन पर जोर दिया जाता था, अभी उसके बदले दूरस्थ पठन पर जोर देने की प्रवृत्ति बढ़ी है। व्यापक स्तर पर ग्रंथों का अध्ययन करने के लिए सांख्यिकीय उपकरणों का इस्तेमाल बढ़ा है।आत्म-कथात्मक आलोचना ने नई जमीन तैयार की है। इस साहित्यिक आलोचना से यह पता चलता है कि आत्मकथा किस तरह से स्मृतियों और व्यक्तिगत जीवन के साथ संवाद स्थापित करती है। इस संवाद को आगे बढ़ाने में ब्लॉग ,ऑनलाइन समीक्षा तथा डिजिटल फोरम का सबसे बड़ा हाथ है।ब्लॉग,ऑनलाइन समीक्षा तथा डिजिटल फोरम ने साहित्यिक आलोचना को नई गति दी है। इस गति ने स्थापित किया है कि साहित्यिक आलोचना का परिप्रेक्ष्य ग्लोबल है। इस आलोचना ने अपने देश की सीमाओं का अतिक्रमण किया है, इसलिए विभिन्न भाषाओं और विभिन्न संस्कृतियों के साहित्यिक कृतियों का अध्ययन सहज हो पाया है तथा इस अध्ययन के जरिए आत्मलोचन की पद्धति धीरे-धीरे विकसित होने लगी है।

पारंपरिक साहित्यिक आलोचना में लिंग, लैंगिकता और पहचान के मुद्दों को अक्सर केंद्रित नहीं किया जाता था लेकिन वर्तमान में इन मुद्दों को केंद्र में रखकर आलोचना को विकसित करने पर जोर दिया गया है।मीडिया लेखन और मीडिया अध्ययन ने साहित्यिक आलोचना की जमीन को उर्वर बनाया है। फिल्म,टीवी शो ,संगीत ,वीडियो गेम इत्यादि का विश्लेषण साहित्यिक दृष्टि से शुरू हुआ है। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक घटनाओं और सामूहिक आघातों की समीक्षा शुरू हुई है।

युद्ध, विस्थापन, उपनिवेशवाद के अध्ययन पर जोर देने की प्रवृत्ति बढ़ी है। वर्तमान में यह स्पष्ट हुआ है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जरिए साहित्य का सृजन करना सहज है।साहित्यिक सृजन और उसके विश्लेषण ने साहित्यिक समावेशी के युग की वकालत शुरू की है।

पहले यह देखा जाता था कि पश्चिम और पुरुष केंद्रित रचनाएं ज्यादा लिखी जाती थीं और उन रचनाओं की चर्चाएं भी काफी की जाती थी।अभी इस परंपरा में टूटन शुरू हुआ है,और इसके स्थान पर भौतिक वस्तुओं, वातावरण और मानवीय अनुभवों को स्थान देने की प्रवृत्ति तेज हुई है।

साहित्यिक आलोचना में उत्तर मानवता की बातें तेजी से सुनने को मिलती है। इसके तहत गैर मानव और साहित्य के संबंधों की चर्चा आरंभ हुई है। उत्तर उपनिवेशवादी अध्ययन, तकनीकी कथात्मकता,क्लाइमेट फिक्शन , क्लिफी' पर विशेष चर्चा शुरू हुई है।जलवायु संकट को वैश्विक मुद्दा से जोड़ने की कोशिश जारी है।

साहित्यिक आलोचना पद्धति में आत्म संदर्भात्मकता बढ़ी है। आत्म संदर्भात्मक तत्त्वों ने साहित्यिक आलोचना के सामने एक तरह से चुनौती प्रस्तुत की है। इस आलोचना पद्धति में लेखक और पाठ स्वयं आलोचना का हिस्सा बनते हैं। इसके अतिरिक्त बहुसंवेदी आलोचना की पद्धति भी देखने को मिलती है। इसके तहत गंध, ध्वनि, दृश्य सहित संवेदनाओं को विश्लेषण करने का काम शुरू हुआ है।

असंख्य विविधिताएं साहित्यिक आलोचना को बहुसमावेशी तथा बहुआयामी बनाती हैं। यही वज़ह है कि साहित्यिक आलोचना धीरे-धीरे शाश्वत प्रासंगिकता की तरफ तेजी से आगे बढ़ती है। इससे यही संकेत मिलता है कि साहित्यिक आलोचना आने वाले दिनों में व्यापक से व्यापकतम बनेगी ,जो जीवन के कठिन संघर्षों और उसके अंतर्विरोधों को बड़ी सहजता के साथ उद्घाटित और उद्घाषित करेगी।

यह स्पष्ट है कि समकालीन साहित्यिक आलोचना पद्धति बहुआयामी, समावेशी और तकनीकी दृष्टि से उन्नत होने की राह पर है। यह साहित्य को केवल एक शिल्प के रूप में नहीं देखती, बल्कि उसे जीवन, समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से जोड़ती है। इसके जरिए साहित्यिक आलोचना नई संभावनाओं के द्वार खोलती है।आने वाले समय में इसके दायरे में और विस्तार होने के लक्षण दिखते हैं।

आंबेडकर पर संसद परिसर में बवाल : दो सांसद चोटिल

बाल मुकुन्द ओझा

लोकतंत्र का मंदिर आज उस समय शर्मसार हो गया जब संसद परिसर के मकर द्वार पर भाजपा और कांग्रेस के सांसद नारेबाजी करते हुए आमने सामने हो गए। डॉ आंबेडकर को लेकर सच और झूठ की सियासत अब धक्कमपेल में बदल गई है। दलितों के मसीहा माने जाने वाले डॉ भीमराव आंबेडकर आजकल सियासी संग्राम के सबसे चर्चित केंद्र बिंदु बने हुए है। संसद परिसर प्रदर्शन और धरने का केंद्र बन गई है। कांग्रेस के सांसद कई दिनों से प्रदर्शन कर रहे थे और गुरुवार को भाजपा के सांसदों ने भी जवाबी प्रदर्शन शुरू कर दिया जिसकी परिणीति आरोपों - प्रत्यारोपों के साथ धक्का मुक्की में बदल गई। भाजपा के सांसद प्रताप सारंगी और मुकेश राजपूत इस धक्कामुक्की में चोटिल हो गए। मुकेश राजपूत को इतनी चोटें आई हैं कि आईसीयू में भर्ती कराया गया है। सांसद प्रताप चंद्र सारंगी का सिर फूट गया, वह लहूलुहान हो गए। उनका आरोप था ऐसा राहुल गाँधी द्वारा धक्का देने से हुआ, वहीं राहुल का कहना है भाजपा सांसदों ने संसद में प्रवेश का मार्ग बाधित कर दिया था। नागालैंड से भाजपा की राज्यसभा सदस्य फांगनोन कोन्याक ने भी राहुल पर अभद्रता का आरोप लगाया। राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने भी राज्यसभा में बताया कि महिला सांसद उनके चेंबर में रोती हुई आई और अपने साथ घटित घटना का विवरण दिया। कांग्रेस अध्यक्ष मलिकार्जुन खड़गे ने अपने साथ धक्कामुक्की का आरोप लगाया है। भाजपा ने आरोप लगाया है राहुल गांधी ने गुंडागर्दी का खुलमखुला प्रदर्शन किया। दोनों पक्षों के बीच तीखी तकरार देखने को मिली। कांग्रेस सहित इंडिया ब्लॉक गृह मंत्री अमित शाह का इस्तीफा और उनसे माफी की मागं कर रहे हैं। वहीं भाजपा सांसदों का कहना है कि कांग्रेस ने आंबेडकर का अपमान किया है। इस घटना के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दोनों सांसदों ने फोन पर बातचीत की और उनका हाल जाना है, वहीं, केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल, धर्मेंद्र प्रधान और शिवराज सिंह चौहान ने रामनोहर लोहिया अस्पताल पहुंचकरप्रताप सारंगी और मुकेश राजपूत का हालचाल जाना। मुलाकात के बाद शिवराज ने कहा राहुल गांधी की गुंडागर्दी का ऐसा दूसरा उदाहरण नहीं मिलेगा। भाजपा की ओर से पुलिस में शिकायत भी दर्ज़ कराने के समाचार मिले है।

बहरहाल आंबेडकर का मुद्दा देशभर में गरमा गया है। आश्चर्य की बात तो यह है जिस कांग्रेस पार्टी ने आम्बेडकर को लोकसभा में नहीं पहुँचने दिया वह भी आम्बेडकर की सबसे बड़ी भक्त और अनुयायी होने का दावा कर रही है। आंबेडकर को लेकर नया विवाद राज्य सभा में संविधान पर चर्चा के दौरान गृह मंत्री अमित शाह के भाषण को लेकर शुरू हुआ। कांग्रेस आरोप लगा रही है कि अमित शाह ने अपने भाषण में बाबा साहेब का अपमान किया है वहीं अमित शाह कांग्रेस पर गलत और भ्रामक बातें फैलाने का आरोप लगा रहे है। इसे लेकर संसद से सड़क तक कांग्रेस और भाजपा में आरपार का संग्राम छिड़ गया है। सच तो यह भी है यह समूचा विवाद दलित वोटों पर अपनी अपनी पकड़ को लेकर उठ खड़ा हुआ है। पिछले लोकसभा चुनाव में दलित वोट भाजपा से छिटक कर कांग्रेस की झोली में गिर गए थे। भाजपा का आरोप है कांग्रेस ने दलितों के आरक्षण को लेकर भ्रम फैलाया था जिसके जाल में दलित फंस गए थे। मगर जल्दी ही दलित समुदाय कांग्रेस की कुत्सित चाल को समझ गए और महाराष्ट्र तथा हरियाणा विधानसभा चुनावों में भाजपा के साथ हो गए परिणाम स्वरुप भाजपा को दोनों राज्यों में जीत मिली।

यह उल्लेखनीय है लोकसभा अथवा किसी भी राज्य में विधानसभा चुनाव आते ही सियासी पार्टियां आम्बेडकर को केंद्र बिंदु में रखकर अपना चुनावी अभियान संचालित करती है। सियासी पार्टियों की नज़र एक मुश्त दलित वोटों पर रहती है। आजकल सियासत में डॉ आम्बेडकर का नाम लेना एक फैशन हो गया है। भीमराव अंबेडकर को लोग भारत के संविधान का निर्माता के रूप में जानते है मगर अम्बेडकर का जयकारा लगाने वाले बहुत से लोग यह नहीं जानते है कि 1952 में हुए देश के पहले लोकसभा चुनाव में वे बुरी तरह हार गए थे। यही नहीं कांग्रेस ने 1954 में भंडारा लोकसभा के लिए हुए उपचुनाव में भी अम्बेडकर को एक बार फिर हराया। भाजपा का आरोप है देश के पहले प्रधानमंत्री प. जवाहर लाल नेहरू ने भी इन चुनावों में आंबेडकर को हराने के लिए सभाएं की थी। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि जीते जी डॉ अम्बेडकर की बात लोगों ने नहीं सुनी थी और आज जिसे देखो वह उनके आदर्शों पर चलने की बात कह रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है इनमें वो लोग और पार्टी भी शामिल है जिन्होंने लोकसभा में जाने से आम्बेडकर को रोक दिया था। -वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

विदेश की खबरें

डोभाल-वांग वार्ता के बाद चीन ने संबंधों को सुधारने के लिए व्यापक आम सहमति पर जोर दिया

बीजिंग : राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल के चीनी विदेश मंत्री वांग यी के साथ वार्ता के एक दिन बाद चीन ने बृहस्पतिवार को कहा कि बैठक के बाद दोनों देशों द्वारा जारी किए गए बयानों में 'बहुत समानता' है, जो व्यापक आम सहमति को दर्शाता है। संबंधों को सामान्य बनाने के लिए बुधवार को डोभाल ने वांग यी के साथ महत्वपूर्ण वार्ता की थी। डोभाल बृहस्पतिवार को भारत के लिए रवाना हुए। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता लिन जियान ने यहां मीडिया ब्रीफिंग में वार्ता के परिणाम पर पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहा कि सीमा मुद्दे के लिए विशेष प्रतिनिधियों - वांग और डोभाल ने 'सकारात्मक और रचनात्मक रुख' के साथ 'सार्थक वार्ता' की और चीन-भारत सीमा मुद्दे पर छह सूत्री 'सहमति' पर पहुंचे। उन्होंने कहा, 'दोनों पक्षों के बयानों का सार और तत्व बहुत हद तक समान हैं।' लिन ने कहा कि दोनों देशों के मूल्यवान संसाधनों को विकास की दिशा में लगाना महत्वपूर्ण है।

यूक्रेन में सैन्य अभियान से रूस मजबूत हुआ है: पुतिन

मॉस्को : रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने बृहस्पतिवार को अपने सालाना संवाददाता सम्मेलन और 'कॉल-इन शो' कार्यक्रम में दावा किया कि यूक्रेन में उनके सैन्य अभियान से रूस मजबूत हुआ है। उन्होंने इस बात से इनकार किया कि सीरिया में प्रमुख सहयोगी बशर अल-असद को अपदस्थ किए जाने से मॉस्को की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची है। यह ऐसा एक वार्षिक कार्यक्रम है जिसका इस्तेमाल वह अपने प्रभुत्व का अहसास बनाए रखने और देश के राजनीतिक परिदृश्य पर व्यापक नियंत्रण होने का प्रदर्शन करने के लिए करते रहे हैं। यह कार्यक्रम लगभग साढ़े चार घंटे तक चला। उन्होंने दावा किया कि 2022 में यूक्रेन में सेना भेजने से रूस की सैन्य और आर्थिक ताकत बढ़ी है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें लगता है कि ऐसा निर्णय पहले लिया जाना चाहिए था और रूस को इसके लिए पहले से और अधिक गहन तैयारी करनी चाहिए थी'। पुतिन ने कहा, 'पिछले दो या तीन वर्षों में रूस बहुत मजबूत हो गया है क्योंकि यह वास्तव में एक संप्रभु देश बन गया है।' उन्होंने कहा, 'हम अर्थव्यवस्था के मामले में मजबूती से खड़े हैं, हम अपनी रक्षा क्षमता को मजबूत कर रहे हैं और हमारी सैन्य क्षमता अब दुनिया में सबसे मजबूत है।'

वर्ग पहेली नं. 2951

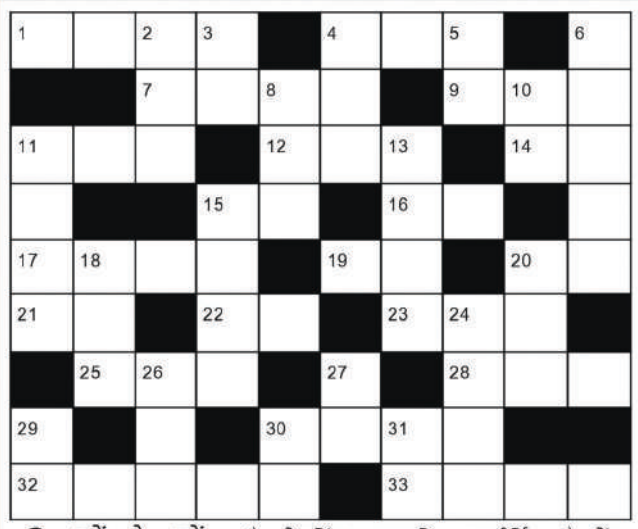

➲ *बायें से दायें:-* 1) लोकनिंदा; कुख्याति; अपकीर्ति, 4) झेंपू; लजीला, 7) चेतन और जड़ *(सृष्टि)*, 9) सौ का समुदाय, 11) प्रेमी, 12) वध, 14) हाथी, 15) अफ़वाह; वायु, 16) ढेर; समूह, 17) दौड़-धूप, 19) महत्त्वपूर्ण, 20) नाश; ढहन, 21) आघात, 22) और भी, 23) अद्भुत काम, 25) एक कीड़ा जो अपने तंतुओं से जाला बुनता है, 28) बनावटी, 30) देवर की पत्नी, 32) आक्रमक, 33) संपत्ति.

➲ *ऊपर से नीचे:-* 2) झूमना; थिरकना, 3) एक कृष्णभक्त संत कवयित्री, 4) एक ऋतु, 5) प्रेत, 6) जोड़ घटा गुणा भाग, 8) एक पक्षी, 10) खिंचा; धड़ *(वृक्ष का)*, 11) कृष्ण की पट्टरानी, 13) हिजड़ा, 15) जल्दी, 18) संतप्त; उष्ण, 20) शरणदाता; *गार्ज़ियन*, 24) आदरणीय, 26) लक्ष्मी, 27) डोंगा, 29) गहरा साँस, 30) काल; विलंब, 31) नृप.

(उत्तर: अगले अंक में)

पिछली पहेली का उत्तर

ने	स्त	ना	बू	द	■	बे	कु	सू	र
■	■	का	■	स	त	ह	■	ज	ज
अ	ध	म	रा	■	ब	त	ला	ना	■
ल	■	■	ह	र्ज	■	र	क्षा	■	अ
ग	फ़	ल	त	■	पा	■	र	ब	ड़
■	व्वा	■	■	आ	स	पा	स	■	क
वि	रा	ज	मा	न	■	य	■	सू	ना
स्त	■	ल	■	न	के	ल	■	ति	■
र	से	दा	र	■	तु	■	अ	का	ल

सुडोकू-पहेली-2911

						5	2	
6			3					
3							4	
	2			4				
			5			6		
	1							
5						7		
				1	2			
			4		8			

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरना आवश्यक है। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है।

••••

आड़ी और खड़ी में एवं 3-3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका ध्यान जरूर रखें।

सूडोकू पहेली - 2910 का उत्तर

6	4	8	2	3	7	5	9	1
1	9	3	4	8	5	7	6	2
5	2	7	1	6	9	8	3	4
9	7	5	6	4	2	1	8	3
4	8	1	7	9	3	2	5	6
3	6	2	8	5	1	4	7	9
8	1	9	3	7	4	6	2	5
2	5	6	9	1	8	3	4	7
7	3	4	5	2	6	9	1	8

बी. आर. आंबेडकर पर शाह की टिप्पणी से मैं हैरान हूं : ममता

मुख्यमंत्री ने एलेन पार्क में क्रिसमस महोत्सव का किया उद्घाटन

कोलकाता, समाज्ञा : मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी ने भारत रत्न डा. बीआर आंबेडकर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बयान को हैरान करने वाला बताया है। गुरुवार को कोलकाता के एलेन पार्क में क्रिसमस उत्सव के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए ममता ने कहा कि आंबेडकर पर (अमित शाह के) बयान को लेकर मैं हैरान हूं। इस दौरान, ममता ने एक बार फिर केंद्र सरकार पर क्रिसमस पर राष्ट्रीय अवकाश रद्द करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि हमारे राज्य में क्रिसमस पर अवकाश रहता है ताकि लोग चर्च जा सके। मैं की क्रिसमस की रात चर्च जाती

हूं और खुद को भाग्यशाली मानती हूं। क्रिसमस का अर्थ प्रेम, आनंद, स्नेह, एकता, शांति व एक अच्छी सीख है। इससे पहले, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोशल मीडिया पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा कि साल का वह समय फिर आ गया है जब पूरा शहर त्योहारी सीजन की खूबसूरती में सराबोर होने के लिए एक साथ आता है। सड़कें रोशनी से जगमगा रही हैं, घर में बने व्यंजनों की खुशबू हवा में फैल रही है और कैरोल और घंटियों की आवाज खुशी के माहौल में चार चांद लगा रही है। मुझे एलन पार्क में 2024 के कोलकाता क्रिसमस महोत्सव का उद्घाटन करने का सौभाग्य मिला। 2011 में उक्त उत्सव के आगाज के बाद से, यह त्योहार पिछले कुछ वर्षों में लोकप्रियता में बढ़ा है और कोलकाता के सबसे उत्सुकता से प्रतीक्षित वार्षिक समारोहों में से एक बन गया है। मैं इस प्रिय परंपरा को कायम रखने के लिए आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं। कोलकाता पुलिस, कोलकाता नगर निगम और पश्चिम बंगाल पर्यटन विभाग को मेरा विशेष धन्यवाद। साथ ही, मैंने दार्जिलिंग पुलिस और जीटीए द्वारा आयोजित दार्जिलिंग मेलो टी फेस्ट के दूसरे संस्करण का भी वर्चुअल उद्घाटन किया। उत्सव को और बढ़ाते हुए, मैंने इस विशेष अवसर को चिह्नित करने के लिए राज्य भर के 14 चर्चों को रोशन किया, जिसमें संबंधित डीएम, एसपी और वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। यह समय खुशी, शांति लाए और सर्वशक्तिमान आप सभी पर अपनी भरपूर कृपा बरसाए।

आज गृह मंत्री शाह सिलीगुड़ी में एसएसबी के स्थापना दिवस समारोह में होंगे शामिल

कोलकाता, समाज्ञा : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह दो दिवसीय दौरे पर गुरुवार की रात पश्चिम बंगाल पहुंचे और शुक्रवार को सिलीगुड़ी में सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के सीमांत मुख्यालय में स्थापना दिवस समारोह में शामिल होंगे तथा अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय बैठकें करेंगे। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, कार्यक्रम के तहत शाह गुरुवार की रात 10.30 बजे राज्य के उत्तरी हिस्से में स्थित बागडोगरा हवाई अड्डे पर उतरे, जहां प्रदेश भाजपा अध्यक्ष व केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार उनका स्वागत किया। केंद्रीय गृह मंत्री का कार्यक्रम आज सुबह 11 बजे सिलीगुड़ी में

एसएसबी सीमांत मुख्यालय के परेड ग्राउंड में स्थापना दिवस समारोह में भाग लेने के साथ शुरू होगा। अधिकारियों ने बताया कि इस अवसर पर परेड और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। शाह बाद में एसएसबी अधिकारियों के साथ क्षेत्र मूल्यांकन रजिस्टर की समीक्षा के लिए एक बैठक की अध्यक्षता करेंगे। यह समीक्षा बैठक भी एसएसबी सीमांत मुख्यालय में होगी, जिसमें पूर्वी और पूर्वोत्तर सीमा पर सीमा प्रबंधन व सुरक्षा गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित किए जाने की उम्मीद है। प्रदेश भाजपा के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि वह (शाह) एसएसबी सीमांत मुख्यालय में क्षेत्र मूल्यांकन रजिस्टर समीक्षा बैठक के बाद शुक्रवार अपराह्न नई दिल्ली के लिए रवाना होंगे। प्रदेश भाजपा के सूत्रों के अनुसार, शाह का कोई राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है लेकिन वह सुकांत मजूमदार के साथ बैठक कर सकते हैं और राज्य इकाई के संगठनात्मक पहलुओं पर चर्चा कर सकते हैं।

बाल तस्करी मामले में सीआईडी ने नर्सिंग होम कर्मी को किया गिरफ्तार

कोलकाता, समाज्ञा : बाल तस्करी के मामले में सीआइडी ने एक और व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। बताया जाता है कि चक्र चाय से उनका सीधा कनेक्शन है। सीआईडी गिरोह के बाकी सदस्यों का पता लगाने के लिए दोनों को आमने-सामने बैठाकर पूछताछ करना चाहती है। पुलिस के मुताबिक, सौरभ अधिकारी

नाम का शख्स दक्षिण कोलकाता के ठाकुरपुकुर स्थित एक नर्सिंग होम का कर्मचारी है। बुधवार को गिरफ्तार किए गए सौरव को हावड़ा कोर्ट ले जाया गया। गृहिणी मुकुल सरकार, जो बाल तस्करी गिरोह की मुखिया है, उस व्यक्ति में शामिल हो गई है। इस दिन सीआईडी ने नए कानून के तहत मुकुल नाम की महिला को फिर से अपनी हिरासत में ले लिया है। सीआईडी सूत्रों के मुताबिक, नदिया के हंसखाली के रहने वाले सौरव ने कुछ साल पहले ठाकुरपुकुर के नर्सिंग होम में काम करना शुरू किया था। यात्रा के सिलसिले में 2022 में मुकुल की मुलाकात सौरव से उस नर्सिंग होम में हुई। मुकुल का पति माणिक भी सौरव को जानता थां गौरतलब है कि सीआइडी ने बिहार से तस्करी कर लाए गए एक बच्चे के साथ शालीमार से दंपती माणिक और मुकुल को गिरफ्तार किया था। राज्य पुलिस की सीआईडी मुकुल से और जानकारी मांग रही हैं। पुलिस ने बताया कि इसलिए सौरव और मुकुल को बभनी भवन में आमने-सामने बिठाकर पूछताछ चल रही है।

शिक्षक भर्ती घोटाले में आया अभिषेक बनर्जी के कंपनी का नाम, हवाला के तर्ज पर होता था पैसे का लेनदेन

पूरक आरोप पत्र में ईडी का आरोप, लेनदेन के लिए दो व्यक्ति करता था मिडिल मैन का काम

कोलकाता, समाज्ञा : प्राथमिक भर्ती घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अदालत में अपनी पांचवीं पूरक चार्जशीट दाखिल की है। इस चार्जशीट में तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी की कंपनी लिप्स एंड बाउंड्स का नाम सामने आया है। दरअसल, प्राथमिक भर्ती घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अदालत में अपनी पांचवीं पूरक चार्जशीट दाखिल की है। इस चार्जशीट में तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी की कंपनी लिप्स एंड बाउंड्स का नाम सामने आया है। ईडी ने आरोप लगाया है कि इस कंपनी के खातों में बिल्कुल हवाला कारोबार के स्टाइल में लेनदेन होता रहा है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजी अभिषेक की इस कंपनी में भ्रष्टाचार के लिए परीक्षार्थियों से वसूले गए रुपये के लेनदेन के लिए 'टोकन' के रूप में इस्तेमाल किए गए कागजी नोटों के जरिए पैसे जमा किए गए। चार्जशीट के अनुसार, नकद धनराशि कई बार अलग-अलग माध्यमों से हाथ बदली गई। खास बात यह है कि 'टोकन' के रूप में कागजी नोट का उपयोग किया गया, जिनके सीरियल नंबर मिलाकर लेनदेन पूरा किया जाता था। यह धनराशि लिप्स एंड बाउंड्स के खातों में जमा होती थी। उदाहरण के तौर पर, अगर 10 रूपए का एक नोट लिया जाए तो उसे दो हिस्सों में फाड़ दिया जाता था। एक नोट उसके पास जाता था जो पैसे लेगा और एक नोट उसके पास रहता था जो देगा। लेनदेन के समय दोनों नोटों के सीरियल नंबर को मिलाकर पैसे लिए जाते थे। ठीक यही तरीका हवाला कारोबार में भी इस्तेमाल होता है। चार्जशीट के 108वें पन्ने पर ईडी ने उल्लेख किया है कि हर्षवर्धन कोयान नामक व्यक्ति से पूछताछ के दौरान 'टोकन' के रूप में कागजी नोटों का इस्तेमाल किए जाने की जानकारी मिली। हर्षवर्धन 'कोयान सिक्योरिटीज प्राइवेट लिमिटेड' के निदेशक हैं। ईडी के अनुसार, मोहित अग्रवाल नामक व्यक्ति ने हर्षवर्धन की कंपनी को लिप्स एंड बाउंड्स से जोड़ा। मोहित अग्रवाल, जिसे 'मिडलमैन' बताया गया है, ने लेनदेन के लिए दो व्यक्तियों - गणेश साव और मुकेश अग्रवाल को जिम्मेदारी दी थी। ये दोनों कोलकाता के बीबीडी बाग (डलहौसी) इलाके से नकदी इकट्ठा करते थे। चार्जशीट में कहा गया है कि नकद लेनदेन के लिए विशेष कागजी नोट का उपयोग होता था। जिनसे पैसे लेना होता, उन्हें नोट के सीरियल नंबर मोबाइल पर भेजे जाते। सीरियल नंबर मिलने के बाद लेनदेन पूरा किया जाता।

फर्जी पासपोर्ट मामले में चौंकाने वाला खुलासा

पुलिस को मिली 30 हजार लोगों की सूची

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता पुलिस ने नकली पासपोर्ट रैकेट के मामले में दीपांकर दास नामक पोस्ट ऑफिस पासपोर्ट सेवा केंद्र (पीओपीएसके) के संविदा कर्मचारी को गिरफ्तार किया। उसकी गिरफ्तारी के बाद पुलिस को उसके गैजेट्स से प्राप्त डाटाबेस से 30 हजार लोगों की सूची मिली है, जिनके लिए उसने फर्जी भारतीय पहचान पत्र और पासपोर्ट तैयार किए थे। सूत्रों के अनुसार, इन दस्तावेजों में से कई दस्तावेज अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों को जारी किए गए थे। पुलिस को शक है कि इनमें से कई लोग पश्चिम बंगाल सहित देश के अलग-अलग हिस्सों में रह रहे हैं। पुलिस ने इन नामों की जानकारी सभी स्थानीय थानों को दी है ताकि उनकी पहचान और ठिकानों का पता लगाया जा सके। दीपांकर दास, जो बेहाला में अपने घर से एक छोटा कार्यालय चलाता था, इस रैकेट में सक्रिय था। उसने यह फर्जी दस्तावेज तैयार करने का काम मुख्य रूप से एक अन्य आरोपी एस बिस्वास के निर्देश पर किया। जांच के दौरान अधिकारियों ने दो प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों और एक यूरोपीय देश के वीजा के फर्जी दस्तावेज भी बरामद किए हैं। बता दें कि पिछले रविवार से अब तक इस मामले में राज्य के विभिन्न हिस्सों से कुल पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें से दो आरोपित पीओपीएसके के संविदा कर्मचारी हैं, जिनमें दास और दीपक मंडल शामिल हैं। जांचकर्ताओं को शक है कि इस रैकेट में भारतीय डाक विभाग के कुछ स्थायी कर्मचारी भी शामिल हो सकते हैं। यह रैकेट मुख्य रूप से बांग्लादेश की सीमा से सटे गांवों में संचालित हो रहा था।

संदीप घोष के घर के अवैध हिस्से का दोबारा निरीक्षण को लेकर मेयर को पत्र

कोलकाता, समाज्ञा : आरजीकर मेडिकल कालेज के पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष के घर के अवैध निर्माण को लेकर फिर एक शिकायतकर्ता सामने आया है। उन्होंने कोलकाता नगर निगम के मेयर फिरहाद हकीम को पत्र लिखकर अपनी पुरानी शिकायतों की याद दिलाई। उनके घर के अवैध हिस्से की दोबारा जांच कराने की भी मांग की गई है। हालांकि, अभी यह स्पष्ट नहीं है कि निगम इस संबंध में कोई नया कदम उठाएगा या नहीं। उल्लेखनीय है कि संदीप का घर उत्तर कोलकाता के बेलेघाटा में बदन राय लेन पर है। इस चार मंजिला मकान के कुछ हिस्सों पर लंबे समय से अवैध रूप से निर्माण किए जाने का आरोप लगाया जा रहा है। शिकायतकर्ता ने दावा किया कि निर्माण निगम की मंजूरी के बिना किया गया था।

आरजीकर कांड के खिलाफ डॉक्टर आज से शुरू करेंगे धरना

धर्मतल्ला में धरने पर बैठ सकते हैं डॉक्टर, हाईकोर्ट ने दी सशर्त अनुमति

कोलकाता, समाज्ञा : अभया मामले में दो आरोपियों संदीप घोष, अभिजीत मंडल की जमानत के बाद से विरोध प्रदर्शन ने नया आयाम ले लिया है। डॉक्टरों का संयुक्त मंच निष्पक्ष सुनवाई की मांग को लेकर नए सिरे से विरोध प्रदर्शन करने जा रहा है। भले ही पुलिस ने धर्मतला चौराहे पर धरने की अनुमति नहीं दी, लेकिन कलकत्ता उच्च न्यायालय ही एकमात्र बाधा थी। गुरुवार को हाई कोर्ट ने विशेष शर्तों के साथ डॉक्टरों की हड़ताल की इजाजत दे दी। कार्यक्रम 18 से 26 दिसंबर तक चौरंगी रोड पर चलेगा। हालांकि, अंतिम आदेश शुक्रवार को दिया जाएगा। डॉक्टरों के संयुक्त मंच ने कोलकाता के पुलिस आयुक्त को पत्र लिखकर 18 से 26 दिसंबर तक धर्मतला में धरना देने की

अनुमति मांगी है। इसकी अनुमति नहीं थी। इसी कारण से, उन्होंने 17 तारीख को हड़ताल करने की अनुमति मांगने के लिए कलकत्ता उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। न्यायाधीश तीर्थंकर घोष की पीठ ने गुरुवार को धरने की अनुमति दी, हालांकि सुनवाई बुधवार के लिए निर्धारित थी। जानकारी मिली है कि चौरंगी रोड पर विरोध प्रदर्शन किया जा सकता है। अधिकतम 200 लोगों के साथ प्रदर्शन की अनुमति है। हालाँकि, कई शर्तों को पूरा करना होगा। हाईकोर्ट सूत्रों के मुताबिक शुक्रवार को इन्हें अंतिम रूप दे दिया जाएगा। डॉक्टरों के पश्चिम बंगाल संयुक्त मंच ने 'अभया' मामले में अभिजीत, संदीप की जमानत का विरोध, सीबीआई को पूरक आरोपपत्र देने सहित कई मांगों को लेकर धर्मतला में धरने पर बैठने का फैसला किया। संगठन के सदस्य 18 से 26 दिसंबर तक धर्मतला में डोरिना क्रॉसिंग पर एक अस्थायी विरोध मंच स्थापित करना चाहते थे। लेकिन उच्च न्यायालय ने डोरिना क्रॉसिंग के बजाय, चौरंगी रोड पर इस स्थान को थोड़ा आगे रखने की अनुमति दी। 200 लोगों के साथ 26 तारीख तक धरना जारी रहेगा। इसकी तैयारी भी शुरू हो गई है।

पीड़िता के माता-पिता ने नए सिरे से जांच की मांग पर दायर की याचिका

❑ हाईकोर्ट ने सीबीआई को दस्तावेज पेश करने के दिए निर्देश

आरजीकर मेडिकल कॉलेज में जूनियर डॉक्टर से दुष्कर्म और हत्या मामले में गुरुवार को कलकत्ता हाईकोर्ट ने सीबीआई को बड़ा निर्देश दिया है। कोर्ट ने न्याय प्रक्रिया पर उठ रहे आरोपों के संबंध में सीबीआई की स्थिति जानने के लिए यह निर्देश दिया। पीड़िता के माता-पिता की याचिका पर गुरुवार को न्यायाधीश तीरथंकर घोष ने निर्देश दिया कि सीबीआई मामले से संबंधित दस्तावेज़ हाईकोर्ट में पेश करे। इस मामले की अगली सुनवाई 24 दिसंबर को होगी। उल्लेखनीय है कि सीबीआई पर पहले ही अदालत में झूठ बोलने का आरोप लगाया जा चुका है। अब आरजीकर मेडिकल कॉलेज की जूनियर डॉक्टर के माता-पिता ने सीबीआई के खिलाफ सबूत नष्ट करने का आरोप लगाया है। साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें सीबीआई की जांच पर कोई भरोसा नहीं है। गुरुवार की दोपहर को पीड़िता के परिवार ने हाईकोर्ट को बताया कि न्याय प्रक्रिया में कई खामियां हैं। हाईकोर्ट के आदेश के बाद, पीड़िता के पिता ने कहा कि हमें लगता है कि सीबीआई ने जानबूझकर मामले को छोड़ दिया। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि निराश होने के बावजूद उनके पास सीबीआई के पास जाने के अलावा कोई अन्य रास्ता नहीं है।

दक्षिण पूर्व रेलवे - निविदा

निविदा सूचना संख्या: डीआरएमईएनजीजी आरएनसी-66-2024, दिनांक: 18.12.2024। भारत के राष्ट्रपति के लिए तथा उनकी ओर से मंडल रेल प्रबंधक/अभियांत्रिकी/दक्षिण पूर्व रेलवे, रांची-834003 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। **कार्य का नाम:** मिशन 3000 एमटी के लिए नामकोम गुड्स शेड को मॉडल गुड्स शेड में बदलने के लिए नामकोम (एनकेएम) में लाइन 6 के लोडिंग व्हार्फ एरिया को बढ़ाने के लिए लाइन 6 एवं 7 के क्रॉसओवर पॉइंट के स्थानांतरण द्वारा नामकोम यार्ड की यार्ड रिमॉडलिंग। **निविदा मूल्य:** ₹ 9,86,09,474.84। **जमा बयाना राशि का मूल्य:** ₹ 6,43,100। **निविदा बंद होने की तारीख एवं समय:** 13.01.2025 को अपराह्न 3.00 बजे। ऑनलाइन निविदा के लिए निविदादाता वेबसाइट www.ireps.gov.in देख सकते हैं। (PR-929)

Name Change

I, Rajeev Kumar Choudhary, son of Lt Shyam Sundar Choudhary, residing at 48C, Muktaram Babu Street, 1st floor, Jorasanko, Kolkata-700007, do hereby solemnly affirm and declare that Rajeev Kumar (earlier name) and Rajeev Kumar Choudhary (present name) is the same and one identical person via affidavit before the Judicial Magistrate 1st Class at Kolkata dated 16th December 2024.

पूर्व रेलवे

निविदा सूचना सं. : ईएल/एचडब्ल्यूएच/25/21 (सूचना)/629, दिनांक: 18.12.2024, मंडल रेल प्रबंधक, पूर्व रेलवे, हावड़ा, डीआरएम बिल्डिंग, हावड़ा रेलवे स्टेशन के पास, हावड़ा-711101 द्वारा निम्नलिखित विद्युत कार्य के निष्पादन के लिए खुली ई-निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं: **क्रम सं. 1, निविदा सं. : ईएल-एचडब्ल्यूएच-25-21-3341-एस3, कार्य का नाम :** गीतांजलि म्यूजियम, बोलपुर में 36 माह के लिए एक पैसेंजर लिफ्ट [प्रस्तुतकारक-थिसेनक्रुप एलिवेटर (इंडिया) प्रा. लि.] का वार्षिक रखरखाव ठेका। **निविदा मूल्य :** रु. 3,74,787/-, **बोली प्रतिभूति (बयाना राशि जमा):** रु. 7,500/-, **समापन अवधि:** 36 माह। **क्रम सं. 2, निविदा सं. : ईएल-एचडब्ल्यूएच-25-21-3346-एस3, कार्य का नाम:** मुख्यालय, फेयरली प्लेस, कोलकाता में 60 माह के लिए जीएम ब्लॉक में स्थित जीएम पैसेंजर लिफ्ट (प्रस्तुतकारक-थिसेनक्रुप) का व्यापक वार्षिक रखरखाव ठेका। **निविदा मूल्य :** रु. 7,77,172/- **बोली प्रतिभूति (बयाना राशि जमा):** रु. 15,600/-, **समापन अवधि:** 60 माह। **निविदा की अंतिम तिथि और समय:** दिनांक 08.01.2025 को 15.00 बजे। यदि निविदा आमंत्रण सूचना में उल्लिखित अंतिम तिथि को किसी भी कारण से अवकाश/बंद/हड़ताल घोषित किया जाता है, तो ऑनलाइन निविदा की अंतिम तिथि नहीं बदली जाएगी क्योंकि आईआरईपीएस की वेबसाइट में किया गया आवेदन, निविदा की अंतिम तिथि और समय के बाद किसी भी प्रस्ताव को जमा करने की अनुमति नहीं देता है। तथापि निविदा की अंतिम तिथि और समय के बाद किसी भी सुविधाजनक दिवस को निविदाएँ ऑनलाइन खोली जाएंगी। निविदा का विवरण वेबसाइट: **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है। निविदाकारों से अनुरोध किया जाता है कि अपने प्रस्ताव को उपर्युक्त वेबसाइट पर ऑनलाइन जमा करें।

HWH-495/2024-25

निविदा सूचना वेबसाइट: www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है

हमें यहाँ देखें : @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

PWD (GOVT OF WB) TENDER NOTICE

eNIT No.: 60/City(M) of 2024-25 of The E.E.-I, City Dvn., P.W.D. for different works in connection with Republic Day Parade are invited from bonafied outsider only having credential for similar nature of work. Bid submission closing date (online) will be on **02.01.2025 at 14.00 hrs. Tender ID: 2024_PWD_787399_1/2/3/4/5/6/7/8/9/10.** Other details may be seen from the web site: **http://etender.wb.nic.in** & **http://wbpwd.in**.

Sd/-
Executive Engineer-I
City Division, P.W.D

अस्पतालों में थ्रेट कल्चर मामले की शीघ्र सुनवाई की गुहार

कोलकाता, समाज्ञा : अस्पतालों में धमकी संस्कृति मामले की जल्द सुनवाई हो। याचिका उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की खंडपीठ के ध्यान में आई। मामले की सुनवाई 9 जनवरी को है। आरजीकर की हत्या की घटना सामने आते ही उत्तर बंगाल, बर्दवान, मालदा मेडिकल सहित विभिन्न मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों में एक के बाद एक इस तरह की धमकी संस्कृति की शिकायतें आने लगीं। इसे लेकर राज्य की राजनीति में भूचाल आ गया है। जल्द ही डॉक्टर अस्पतालों में इस तरह की अराजकता के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने लगे। डॉक्टरों ने कई बार मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के साथ बैठक की। मुख्यमंत्री ने समाधान के फार्मूले का आश्वासन दिया। सरकारी पक्ष के मुताबिक राज्य सरकार पहले से ही कई मामलों में कदम उठा रही है। आरोपियों को अन्य अस्पतालों में स्थानांतरित कर दिया गया है या निलंबित कर दिया गया है।

दुर्घटना से बचने के लिए सरकारी और निजी बसों में अब ऐप सेवा होगी शुरू

कोलकाता, समाज्ञा : राज्य सरकार नए साल की शुरुआत में लोगों की सुविधा और बसों की बेतहाशा गति पर निगरानी रखने के लिए कड़े कदम उठाने जा रही है। अब सरकारी और निजी बसों में ऐप सेवा शुरू की जाएगी। फिलहाल, बंगाल में उबर, रैपिडो और एमकी मेट्रो जैसी सेवाएं पहले से उपलब्ध हैं। अब सरकारी और निजी बसों में भी यह सेवा शुरू करने का निर्णय लिया गया है। राज्य परिवहन विभाग की ओर से सरकारी और निजी बसों में यात्री साथी ऐप की पायलट सेवा शुरू की जा रही है। संगठनों के साथ बैठक के बाद इस पर सहमति बनी है। सरकारी बसों के साथ-साथ निजी बसों और मिनी बसों पर भी

निगरानी रखी जाएगी। बसों को ट्रैक करने के लिए एक नया सिस्टम लागू किया जा रहा है। यात्री साथी ऐप के जरिए सरकारी और निजी बसों तथा मिनी बसों को भी जोड़ा जाएगा, जैसे कि पहले से ही पीली टैक्सी में किया गया है। 10 जनवरी से 12 निर्धारित रूटों पर इस पायलट प्रोजेक्ट की शुरुआत करने का लक्ष्य रखा गया है। इस सेवा के शुरू होने से यात्री यह जान सकेंगे कि किस रूट पर बस कहां तक पहुंची है और बस कितनी दूरी पर है। पहले चरण में 12 रूटों पर यह सेवा शुरू की जाएगी। शुरुआत में एयरपोर्ट से जुड़े 12 रूटों के सरकारी और निजी मिनी बसों को इस सेवा से जोड़ा जाएगा। ये 12 रूट हैं : एसी-39, एसी -58, एसी -37-, वी1, एस-10, एस-23ए, एसी -2, एसी-43, एसी-40, एसी -23-, ईबी -12 और एस-66। इस बारे में वेस्ट बंगाल बस एंड मिनीबस ओनर्स एसोसिएशन के महासचिव प्रदीप नारायण बसु ने बताया कि राज्य सरकार सरकारी बसों में स्मार्टफोन मुहैया कराएगी, लेकिन निजी बसों के मामले में यह खर्च बस मालिकों को खुद उठाना पड़ेगा।

गंगा से सटे इलाकों में कटाव को लेकर फिरहाद हकीम ने की बैठक

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता में गंगा किनारे के इलाकों में कटाव देखा गया है जिसे लेकर मेयर फिरहाद हकीम चिंतित हैं। इससे पहले उन्होंने कहा था कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी ट्रस्ट या कोलकाता पोर्ट अथॉरिटी इस संबंध में एक उच्च स्तरीय बैठक करेगी। बुधवार को वह बैठक में ऐसे ही बैठे रहे। बॉबी हकीम बाद में पत्रकारों से मुखातिब हुए। बॉबी हकीम ने कहा

कि कोलकाता में कुछ जगहों पर गंगा कटाव कर रही है। नीमतला घाट पर नहर ध्वस्त हो गई है। जमीन मां घाट की ओर खिसक रही है। घाट कि किनारों टूट रहे हैं। इसके लिए आज पोर्ट ट्रस्ट के साथ बैठक हुई। वे सहमत हुए। इन घाटों का काम जल्द शुरू होगा। साथ ही हावड़ा ब्रिज से बाबूघाट की ओर सभी घाटों पर सोल प्रोटेक्शन के जरिये मेंटेनेंस का काम किया जाएगा। ऐसे में पोर्ट ट्रस्ट ने आईआईटी खड़गपुर को टेंडर दिया है। वो काम करेंगे।

राज्य सरकार ने रेखा पात्रा की चुनाव याचिका पर दायर हलफनामा वापस लिया

➨ भाजपा उम्मीदवार के वकील ने रिटर्निंग ऑफिसर की निष्पक्षता पर उठाया था सवाल

कोलकाता, समाज्ञा : बंगाल सरकार ने गुरुवार को रेखा पात्रा द्वारा दायर चुनाव याचिका में अपना हलफनामा वापस ले लिया, जो इस साल के आम चुनावों में उत्तर 24 परगना जिले के बशीरहाट लोकसभा क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार थीं। राज्य सरकार ने चुनाव याचिका में राज्य के पक्ष न होने के बावजूद रिटर्निंग ऑफिसर के हस्ताक्षर वाले हलफनामे को दाखिल करने के लिए अदालत से माफी भी मांगी है। बता दें कि पात्रा

के वकील ने सवाल उठाया था कि रिटर्निंग ऑफिसर राज्य सरकार द्वारा दायर हलफनामे की प्रति पर हस्ताक्षर कैसे कर सकते हैं और रिटर्निंग ऑफिसर की निष्पक्षता पर भी सवाल उठाया था। इसके बाद, कृष्ण राव की एकल पीठ, जिसके समक्ष चुनाव याचिका दायर की गई थी, ने राज्य सरकार से मामले में पक्षकार न होने के बावजूद हलफनामा दायर करने के पीछे का कारण पूछा। अंत में, गुरुवार को राज्य सरकार ने हलफनामा वापस ले लिया और मामले में माफी मांगी। मामले की अगली सुनवाई जनवरी 2025 में होगी। उल्लेखनीय है कि जून में दायर अपनी चुनाव याचिका में पात्रा ने विजयी तृणमूल उम्मीदवार, जिनकी सितंबर में मृत्यु हो गई थी, पर चुनाव आयोग को जानकारी छिपाने का आरोप लगाया। उनके वकील ने दावा किया कि तृणमूल उम्मीदवार ने चुनाव लड़ते समय अनैतिक रुख अपनाया। इसके बाद, जुलाई में एकल न्यायाधीश की पीठ ने मामले से संबंधित सभी पक्षों को नोटिस देने का आदेश दिया और ईवीएम, डाक मतपत्र और सीसीटीवी फुटेज सहित सभी चुनाव संबंधी दस्तावेजों को सुरक्षित रखने का भी निर्देश दिया।

तृणमूल नेता के खिलाफ रंगदारी मांगने का आरोप, जांच में जुटी पुलिस

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता के पोस्ता थाना में सत्ताधारी पार्टी के राजनीतिक नेता के खिलाफ रंगदारी मांगने की शिकायत दर्ज की गई है। आरोपी नेता का नाम तरुण तिवारी है। हावड़ा के लिलुआ के रहने वाले पीड़ित सचिन पाटिल ने जानकारी

देते हुए बताया कि बुधवार को आरोपी तरुण ने उनकी माता लतिका देवी पाटिल को जबरदस्ती अपने पास रोक रखा था। आरोप है कि लतिका देवी को छोड़ने के लिए आरोपी ने रंगदारी की मांग की। जिसे देने के बाद लतिका देवी को छोड़ा गया। पोस्ता थाना की पुलिस ने शिकायत दर्ज करी ली है। सचिन पाटिल ने बताया कि, बहुत साल पुराना उनका बड़ाबाजार थाना में एक मामला चल रहा है। इसी मामले में एक मदद के लिए उन्होंने तरुण तिवारी से संपर्क किया था। जिसके बाद से तरुण एक मोटी रकम की मांग करते हुए सचिन को लगातार परेशान कर रहा था। गुरुवार को सचिन की मां लतिका देवी को तरुण ने फोन करके बात करने के लिए बुलाया। जब लतिका देवी वहां पहुंची, तो तरुण ने उन्हें रोक लिया और सचिन से रंगदारी मांगी। पैसे देने के बाद लतिका देवी को छोड़ा गया। पोस्ता थाना की पुलिस ने शिकायत के आधार पर इस पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।
www.samagya.in
समाज्ञा
NEWS PAPER ADVERTISING SOLUTION
▪ MATRIMONIAL ▪ EDUCATION ▪ OBITUARY
▪ PROPERTY ▪ NAME CHANGE ▪ REMEMBRANCE
▪ RECRUITMENT ▪ PUBLIC NOTICE ▪ DISPLAY
TO AD IN SAMAGYA PLEASE CONTACT
samagyaadvt@gmail.com | www samagya.in
81, Chintamani Dey Road, Howrah 711 101, Mobile: 70444 44522

आतंकी मॉड्यूल का पर्दाफाश : हिंदू नेताओं को निशाना बनाने की साजिश में आठ जिहादी गिरफ्तार

मुर्शिदाबाद से एसटीएफ ने 2 लोगों को किया गिरफ्तार

गुवाहाटी/कोलकाता : असम पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) ने केरल और पश्चिम बंगाल पुलिस की मदद से आठ जिहादियों (कट्टरपंथियों) को गिरफ्तार किया है। इनमें एक बांग्लादेशी नागरिक भी है। आरोप है कि यह मॉड्यूल देश में हिंसक हमले और हिन्दू नेताओं को निशाना बनाने की तैयारी कर रहा था। ऑपरेशन 'प्रगति' के तहत देशभर में जुड़े अन्य मॉड्यूल का पता लगाने के लिए पुलिस पड़ताल कर रही है। गुरुवार को असम पुलिस मुख्यालय में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में असम पुलिस के स्पेशल डीजीपी हरमीत सिंह ने बताया कि राष्ट्रपति आपरेशन 'प्रगति' तहत केरल और पश्चिम बंगाल की पुलिस की मदद से आतंकी माड्यूल का पर्दाफाश किया गया है। पुलिस ने संयुक्त अभियान में आठ जिहादियों को गिरफ्तार किया है। इन जिहादियों की पहचान अब्दुल करीम, मु. अब्बास अली, एनामुल हक, हमिदुल इस्लाम, मिनारूल शेख, शुरू इस्लाम मंडल, मु. साद रंदी उर्फ शाब शेख, मजिबर रहमान के रूप में की गई है। इनके पास से दौरान बांग्लादेशी दस्तावेज, कट्टरपंथी साहित्य और डिजिटल उपकरण जब्त किए गए हैं। उन्होंने बताया कि मोहम्मद साद रादी उर्फ शब शेख (32), जो राजशाही, बांग्लादेश का निवासी है, बीते नवंबर में भारत आया था। यह आरोपित असम और पश्चिम बंगाल में स्लीपर सेल्स बनाने और जिहादी विचारधारा फैलाने में लगे थे। इन जिहादियों ने इलाके में कई बैठकें कर हिंदू संगठनों और प्रमुख धार्मिक नेताओं पर हमले की योजना बनाई थी। इसका उद्देश्य इलाके में साम्प्रदायिक तनाव फैलाना था। उन्होंने बतायाकि गिरफ्तार नूर इस्लाम मंडल पहले भी एक मामले में गिरफ्तार हुआ था और जमानत पर बाहर था। वह अन्य आरोपितों के साथ मिलकर युवाओं को आतंकी संगठनों से जोड़ने का प्रयास कर रहा था। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी इस जांच की निगरानी कर रहे हैं।

व्यापक हित के लिए भूमि अधिग्रहण संभव, हाईकोर्ट ने मेट्रो को दी राहत

कोलकाता, समाज्ञा : व्यापक सार्वजनिक हित में राज्य के अपने अधिकार के रूप में निजी स्वामित्व वाली भूमि का अधिग्रहण कानूनी रूप से पूरा कर सकता है। ऐसे में राज्य सरकार चाहे तो लोगों के हित में निजी स्वामित्व वाली जमीन का हस्तांतरण कर सकती है। हाईकोर्ट ने मेट्रो को राहत देते हुए कहा। न्यायाधीश अनिरुद्ध रॉय ने मेट्रो रेल के विस्तार के लिए कोलकाता से सटे जमीन के एक टुकड़े के अधिग्रहण के फैसले को चुनौती देने वाले एक मामले का निपटारा करते हुए यह आदेश दिया। न्यायाधीश के अनुसार, कानूनी तरीकों से निजी स्वामित्व वाली भूमि के अधिग्रहण की प्रक्रिया, यदि यह व्यापक हित में है, मुआवजे के भुगतान के साथ समाप्त होती है। यदि आवश्यक हो तो राज्य अपनी क्षमता से किसी भी व्यक्ति से भूमि ले सकता है। अदालती सूत्रों के मुताबिक, हाल ही में राज्य ने मेट्रो रेल के विस्तार के लिए अधिग्रहण के दूसरे चरण की अधिसूचना जारी की है।कथित तौर पर उस क्षेत्र के अधिग्रहण के पहले चरण में कोई आपत्ति नहीं उठाई गई थी, लेकिन दूसरे चरण में इसे उठाया गया। क्योंकि, इस बार वादी की जमीन उस अधिसूचना के अंतर्गत आती है। यह ज्ञात है कि नेपाली दूतावास की भूमि उस लाइन के अंतर्गत आती है जिसे मूल रूप से बनाया जाना था। लेकिन वे जमीन देने को राजी नहीं हुए। याचिकाकर्ता ने आरोप लगाया कि लाइनिंग के पहले रास्ते से उसकी जमीन सुरक्षित हो गई है। लेकिन चूंकि नेपाली दूतावास जमीन देने के लिए सहमत नहीं हुआ, इसलिए लाइन को फिर से रूट करने की योजना बनाई गई। इससे उनकी जमीन अधिग्रहण के दायरे में आ गई।

कूचबिहार में सीप चुनने के दौरान तीन बच्चे डूबे

कूचबिहार : मामा के बेटे के साथ सीप चुनने के दौरान तीन बच्चे नदी में डूब गए। जानकारी के अनुसार, यह घटना गुरुवार को कूचबिहार के माथाभंगा में ये दुखद घटना घटी थी। स्थानीय निवासियों के मुताबिक, जोरपाटकी हसन के घाट इलाके में धारला नदी में तीन बच्चे सीप इकट्ठा कर रहे थे।अचानक उनमें से तीन का पैर फिसल गया और वे पानी में गिर गए। स्थानीय निवासी तीनों को बचाने के लिए दौड़ पड़े। लेकिन, तब तक दो लोग मौत के आगोश में समा चुके थे। एक व्यक्ति को टूटे हुए सिर के साथ अनुमंडल अस्पताल ले जाया गया। लेकिन, अंत बच नहीं पाया। डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना पाकर माथाभांगा थाने की पुलिस मौके पर आई । दो मृत बच्चों को नदी किनारे से बचाया गया। घटना से इलाके में मातम छा गया।

बीएड कॉलेज में प्रवेश संबंधी भ्रष्टाचार की जांच कमेटी पर ही, कोर्ट ने दिया आदेश

कोलकाता, समाज्ञा : बाबा साहेब अंबेडकर विश्वविद्यालय पर बीए प्रवेश और कॉलेज की मंजूरी देने में वित्तीय भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं। कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश खंडपीठ ने इस घटना में राज्य उच्च शिक्षा विभाग द्वारा की जा रही जांच को मंजूरी दे दी। इस वित्तीय हेराफेरी में हुए भ्रष्टाचार की जांच के लिए राज्य ने एक समिति नियुक्त की थी। राज्य ने आज अदालत को बताया कि वह समिति में एक नया सदस्य नियुक्त करेगा। वहीं, कलकत्ता हाईकोर्ट की एक अन्य पीठ में विश्वविद्यालय के कुलपति को हटाने की मांग को लेकर एक मामला दायर किया गया। उस मामले की सुनवाई के बाद अब फैसला निलंबित कर दिया गया है। इसी कारण मुख्य न्यायाधीश की खंडपीठ ने मुख्य न्यायाधीश की खंडपीठ में दायर जनहित याचिका को खारिज कर दिया। उच्च शिक्षा विभाग ने मामले की जांच के लिए राज्य उच्च शिक्षा परिषद के उपाध्यक्ष (अकादमिक) आशुतोष घोष की एक सदस्यीय समिति का गठन किया।

करीब दो करोड़ रुपए की आर्थिक धोखाधड़ी, फरक्का का पंचायत सचिव गिरफ्तार

मुर्शिदाबाद : वित्तीय गबन मामले में मुर्शिदाबाद के सुती ब्लॉक का बहुताली ग्राम पंचायत के सचिव गिरफ्तार कर लिए गए। सुती-1 ब्लॉक के अंतर्गत आने वाली बहुताली ग्राम पंचायत के सचिव अशोक कुमार घोष को दो करोड़ रुपए के वित्तीय भ्रष्टाचार के मामले में गिरफ्तार किया गया है। सुती थाना पुलिस उसे पहले ही जंगीपुर उपमंडल न्यायालय ले जा चुकी है और जांच कर रही है।सूत्रों के मुताबिक वित्तीय वर्ष 2021 से 23 के बीच पंद्रहवें कमीशन के करीब दो करोड़ रुपए की हेराफेरी के मामले में कोर्ट के आदेश पर सुती थाने की पुलिस ने सचिव को गिरफ्तार किया है। सुति-1 ब्लॉक के बीडीओ ने गिरफ्तारी की पुष्टि की। इस बीच, सूत्रों के मुताबिक, मामले को लेकर हाई कोर्ट में केस दायर किया गया है। मामले की जांच करते हुए वित्तीय धोखाधड़ी में शामिल होने के आरोप में बहुताली ग्राम पंचायत के सचिव को गिरफ्तार किया गया।इस घटना से सूती राजनीतिक हलकों में काफी हलचल मची हुई है। सुती थाने की पुलिस इस बात की भी जांच कर रही है कि इस बड़ी वित्तीय धोखाधड़ी के पीछे कोई और भी शामिल है या नहीं।

व्यापारियों के लिए व्यापार को आसान बनाने की दिशा में डायरेक्ट टैक्स पर इंटरएक्टिव सत्र

कोलकाता, समाज्ञा : सीडबल्यूबीटीए ने डायरेक्ट टैक्स (आयकर) पर इंटरएक्टिव सत्र का आयोजन किया। इस सत्र में आयकर विभाग के प्रमुख आयकर आयुक्त को आमंत्रित किया ताकि वे व्यापारियों द्वारा आयकर विभाग के साथ सामना की जाने वाली समस्याओं पर चर्चा कर सकें। इस अवसर पर आयकर विभाग के अधिकारी डॉ. अमलन त्रिपाठी (आईआरएस), तजिंदर पाल सिंह (आईआरएस), संजय बाला (आईआरएस) और उनके टीम के अधिकारी उपस्थित थे। इस सत्र की शुरुआत में अध्यक्ष सुशील पोद्दार ने अतिथियों का स्वागत किया, उसके बाद सचिव सी.के. वरदराजन ने उद्घाटन संबोधन दिया। कार्यक्रम के संयोजक जे.एल. बर्दिया ने व्यापारियों को प्रोत्साहित किया कि वे सवाल पूछें, जिनका उत्तर उप-स्थित अधिकारियों द्वारा दिया जा सके। इस सत्र में 'विवाद से विश्वास स्कीम 2024' के बारे में जानकारी दी गई और उपस्थित सदस्यगणों से इस योजना का लाभ उठाने की अपील की गई, क्योंकि योजना की समय सीमा समाप्त होने वाली है। सदस्यों द्वारा उठाए गए सवालों पर अधिकारियों ने विस्तृत जवाब दिया और 'विदेशी संपत्ति और आय की सही घोषणा' के बारे में भी जानकारी दी, साथ ही अनुपालन न करने पर लगने वाली पेनल्टी के बारे में बताया। आयकर विभाग के अधिकारियों ने व्यापारियों को धन्यवाद दिया, क्योंकि व्यापारियों के प्रयासों से डायरेक्ट टैक्स में 16% की वृद्धि हुई है।

पीएल एसेट मैनेजमेंट ने पीएमएस स्ट्रैटेजी अपडेट्स एंड इनसाइट्स रिपोर्ट किया जारी

कोलकाता, समाज्ञा : पीएल एसेट मैनेजमेंट ने अपनी ताजा पीएमएस स्ट्रैटेजी अपडेट्स एंड इनसाइट्स रिपोर्ट को जारी किया है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि बाजार मौजूदा समय में बदलाव के दौर से गुज़र रहा है, जिसमें पिछले तीन महीनों में कम अस्थिरता और मोमेंटम फैक्टर्स में लगभग 6% की गिरावट आई है। इस बीच, पिछले तीन महीनों में क्रमशः 6% और 7% की गिरावट दिखाने के बावजूद, क्वॉलिटी ने वैल्यू से थोड़ा बेहतर प्रदर्शन किया है। क्वॉन्ट मॉडल के अनुसार, भारतीय इक्विटी बाजार महंगे दिखाई देते हैं, लेकिन अत्यधिक ओवरवैल्यूड नहीं हैं। स्मॉल और मिड-कैप शेयरों में उच्च प्रीमियम देखा गया है। पीएल एसेट मैनेजमेंट के सिद्धार्थ वोरा ने कहा कि एफआईआई निकासी में कमी आनी शुरू हुई है, और निवेशक चीन में कम निवेश कर भारत में अधिक निवेश कर रहे हैं।

कोलकाता ने शीर्ष 10 में जगह बनाई, भारत के क्रिप्टो इकोसिस्टम में एक उभरते सितारे के रूप में चमका

कोलकाता, समाज्ञा : भारत के सबसे बड़े क्रिप्टो ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म कॉइनस्विच ने अपनी वार्षिक निवेशक रिपोर्ट- इंडियाज क्रिप्टो पोर्टफोलियो 2024 : हाउ इंडिया इन्वेस्ट्स का तीसरा संस्करण प्रकाशित किया है। इस रिपोर्ट में भारत के विविध क्रिप्टो इकोसिस्टम का गहन विश्लेषण और डिजिटल संपत्तियों के साथ देश की बढ़ती भागीदारी को उजागर भी किया गया है। बिटकॉइन के ऐतिहासिक 100,000 डॉलर तक पहुंचने वाले वर्ष में, भारतीय निवेशकों ने मेम कॉइन्स में ज्यादा रुचि दिखाई। डॉजकॉइन सबसे अधिक निवेश किए गए कॉइन की सूची में शीर्ष पर रहा, जबकि एसएचआईबी सबसे अधिक ट्रेड किए गए कॉइन के रूप में उभरा। पीईपीई ने 2024 में 1300% की अविश्वसनीय वृद्धि के साथ शीर्ष प्रदर्शन करने वाली संपत्ति के रूप में अपना स्थान सुनिश्चित किया। भारत के शीर्ष 10 में एक नया प्रवेशक, कोलकाता 2024 में क्रिप्टो निवेश में नौवें सबसे बड़े योगदानकर्ता के रूप में उभरा है।

इसुजु मोटर्स इंडिया ने श्री सिटी फैसिलिटी से एक लाख वाहनों के रोलआउट के साथ बड़ी उपलब्धि की हासिल

कोलकाता, समाज्ञा : इसुजु मोटर्स इंडिया ने आंध्र प्रदेश के श्री सिटी में मौजूद अत्याधुनिक सुविधाओं वाली अपनी मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी से एक लाख वाहनों के रोलआउट की उपलब्धि की घोषणा की। इस शानदार कामयाबी से यह जाहिर होता है कि, इसुजु भारतीय बाजार के लिए अपने संकल्प पर कायम है और देश में मोटर-वाहनों के बाजार में इसकी मौजूदगी लगातार बढ़ रही है। लोकप्रिय इसुजु डी-मैक्स वी-क्रॉस मॉडल के लॉन्च के साथ एक लाख वाहनों के रोलआउट की यह उपलब्धि हासिल की गई, जिसने लगातार अपनी मजबूती और विश्वसनीयता के लिए लोगों के बीच अपनी पहचान बनाई है। आंध्र प्रदेश के उद्योग वाणिज्य एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग के सचिव, डॉ. एन. युवराज इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उनके अलावा, श्री सिटी के संस्थापक एवं एमडी, डॉ. रवींद्र सन्नारेड्डी तथा श्री सिटी जापानी कंपनी समूह के चेयरमैन, मकोतो सादो ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपनी मौजूदगी से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

पूर्व रेलवे ने 62वां वार्षिक सिविल डिफेंस सप्ताह 2024 मनाया

कोलकाता, समाज्ञा : पूर्व रेलवे के अतिरिक्त महाप्रबंधक एवं सिविल डिफेंस के अतिरिक्त प्रमुख संरक्षक सुमित सरकार ने गुरुवार को कोलकाता स्थित सियालदह डीआरएम के स्पोर्ट्स ग्राउंड पर 62वें वार्षिक सिविल डिफेंस कार्यक्रम-2024 का उद्घाटन किया। इस अवसर पर सियालदह के मुख्य सिविल डिफेंस अधिकारी और डीआरएम दीपक निगम सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी उप-स्थित रहे। इस कार्यक्रम का आयोजन वेद प्रकाश, उप महाप्रबंधक (जी) एवं उप सीसीडी, पूर्व रेलवे के नेतृत्व में किया गया। सुमित सरकार ने सिविल डिफेंस ध्वज को फहराया, और इस दौरान आरपीएफ बैंड ने ध्वजारोहण धुन बजाई। इसके बाद सिविल डिफेंस दलों का निरीक्षण किया गया और एक भव्य मार्च पास्ट हुआ। मुख्यालय, सियालदह, हावड़ा, लिलुआ और कांचरापाड़ा जैसे पांच प्रमुख इकाइयों के सिविल डिफेंस स्वयंसेवकों ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया और आपदा प्रबंधन में अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन किया। एक मल्टीमीडिया प्रस्तुति में सिविल डिफेंस की गतिविधियों को दिखाया गया। इस मौके पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले दलों और व्यक्तियों को पुरस्कार वितरित किए गए। सुमित सरकार ने पुरस्कार वितरित करते हुए सिविल डिफेंस के कर्मचारियों की सराहना की। वहीं, दीपक निगम और अन्य अधिकारियों ने सभी प्रतिभागियों की सराहना की। इस कार्यक्रम का समापन सांस्कृतिक प्रदर्शन और धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

मानवीय समस्याओं को हल करने के लिए एक कदम और आगे आया विज्ञान

❑ दूसरे वर्ष के इंजीनियरिंग छात्र ने बनाया प्रोजेक्ट

कोलकाता, समाज्ञा : हेरिटेज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के बी.टेक-ईसीई, द्वितीय वर्ष के छात्रों ने आज 'टेक नाइट्स 2.0' का आयोजन किया, जो उन परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए एक आंतरिक प्रतियोगिता है जो विभिन्न क्षेत्रों में मानव जाति के सामने आने वाली मानवीय समस्याओं का समाधान कर सकती है। सभी परियोजनाएँ सतत विकास लक्ष्यों को मैप करते हुए तैयार की गईं। लगभग 9 परियोजनाओं का प्रदर्शन किया गया जो सोलर ट्रैकिंग सिस्टम, वन संरक्षण के लिए ड्रोन मॉनिटरिंग, स्मार्ट जल प्रबंधन प्रणाली, उद्योग और गृह स्वचालन, खेढ सक्षम स्मार्ट कंपोजिट, विकलांग लोगों के लिए भाषण प्रबंधन प्रणाली और कई अन्य पर केंद्रित थीं। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को हेरिटेज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रिंसिपल प्रो. बासब चौधरी के साथ हेरिटेज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के विभाग प्रमुख प्रो. प्रबीर बनर्जी उप-स्थित थे। हेरिटेज ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, कोलकाता के सीईओ पी.के.अग्रवाल ने कहा कि प्रतियोगिता ने छात्रों को अपनी नवीन परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए सही मंच दिया है जो वास्तव में विभिन्न क्षेत्रों में उद्योग के सामने आने वाली समस्याओं का समाधान कर सकता है।

हर दिन मुट्ठी भर कैलिफोर्निया बादाम से भागदौड़ भरी जीवनशैली में रहे तंदरुस्त

कोलकाता, समाज्ञा : एलमोंड बोर्ड ऑफ कैलिफोर्निया ने द ललित, कोलकाता में ए हैंडफुल ऑफ एलमोंड्स ए डे: नैचुरल एप्रोच टू सपोर्टिंग हेल्थ इन टुडेज फास्टपेस्ड लाइफस्टाइल (एक मुट्ठी भर बादाम एक दिन: आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का प्राकृतिक तरीका), नाम से एक नॉलेज सेशन आयोजित किया। इस सत्र में डॉ. रोहिणी पाटिल, एमबीबीएस और पोषण विशेषज्ञ और लोकप्रिय बंगाली अभिनेत्री सुस्मिता चटर्जी सहित कई जाने माने और प्रतिष्ठित पैनलिस्ट शामिल थे। डॉ. रोहिणी पाटिल, एमबीबीएस ने कहा कि हमारी व्यस्त जीवनशैली अक्सर खराब स्वास्थ्य विकल्पों की ओर ले जाती है। इस कारण से, मैं हमेशा अपने ग्राहकों को सलाह देता हूं कि छोटे-छोटे बदलाव बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं - जैसे प्रोसेस्ड स्नैक्स की जगह बादाम जैसे प्राकृतिक विकल्प अपनाना। लोकप्रिय अभिनेत्री, सुस्मिता चटर्जी ने कहा कि, प्राकृतिक खाद्य पदार्थ, विशेष रूप से कैलिफोर्निया बादाम, मेरे लिए एक गेम चेंजर रहे हैं - एक आदत जो बचपन से ही मुझमें डाली गई है।

चार दिवसीय डोवर लेन संगीत सम्मेलन 22 जनवरी से होगा शुरू

कोलकाता, समाज्ञा : कोलकाता के डोवर लेन संगीत सम्मेलन का चार दिवसीय भव्य आयोजन होने जा रहा है। भारतीय शास्त्रीय संगीत का यह कार्यक्रम 22 जनवरी से 25 जनवरी तक चलने वाला है। जिसमें दुनियाभर से जाने-माने हस्तियां शामिल होती हैं। गुरुवार को आयोजित एक प्रेस मीट में डोवर लेन संगीत सम्मेलन के संरक्षक संजय बुधिया ने अपने संबोधन में सबसे पहले, रोंकिनी गुप्ता और अंकिता जोशी का मुंबई से आकर इस प्रेस मीट में शामिल होने के लिए धन्यवाद किया। इसके बाद, प्रेस मीट में उपस्थित सभी संगीत उस्तादों का भी धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने आगे कहा कि, सर्दी का मौसम आते ही, हमारी 'सिटी ऑफ जॉय' सांस्कृतिक उत्सवों के माहौल में रंगीनी भर देती है और हम भारत के सबसे प्रतिष्ठित और प्रतीक्षित त्योहारों में से एक- डोवर लेन संगीत सम्मेलन से शुरुआत करते हैं। इस सम्मेलन ने वर्षों से न केवल भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है, बल्कि यह संगीतकारों और संगीत प्रेमियों के बीच की मेलजोल को भी बखूबी दर्शाता है। मैं डोवर लेन संगीत सम्मेलन के महान संगीत उस्तादों की सराहना करना चाहता हूं जो इस सम्मेलन की सच्ची धरोहर को बनाए रखने के लिए अपना कीमती समय समर्पित करते हैं। इस सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए ऑन लाइन टिकट मिलेंगी। श्री बुधिया के मुताबिक 4 हजार, 2700, 1800 और 1 हजार रुपये कीमत के टिकट ऑन लाइन सिस्टम के माध्यम से खरीदा जा सकता है। इस संगीत सम्मलने का आयोजन नजरूल मंच में किया जाएगा। इस वर्ष, 'संगीत सम्मान' का पुरस्कार एलम एंडिरा देवी, मणिपुरी नृत्यांगना को दिया जाएगा। इसके अलावा, इस वर्ष 'केयरिंग माइंड्स इंटरनेशनल अवार्ड' मास्टर अनुराग रॉय (13) को उनकी बांसुरी में अद्भुत प्रदर्शन के लिए दिया जाएगा।

पूर्व रेलवे ने ऑल इंडिया रेलवे वॉलीबॉल चैंपियनशिप के फाइनल में जगह बनाई

कोलकाता, समाज्ञा

पूर्व रेलवे ने 68वीं ऑल इंडिया रेलवे वॉलीबॉल चैंपियनशिप (पुरुष) के फाइनल में जगह बना ली है। पूर्व रेलवे ने आईसीएफ टीम को 3-2 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया है। इस चैंपियनशिप का फाइनल मुकाबला 20 दिसंबर यानी आज पूर्व रेलवे स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, माझेरहाट में पूर्व रेलवे और दक्षिण पश्चिम रेलवे के बीच खेला जाएगा।

हावड़ा डिवीजन में उचित टिकट के साथ यात्रा करने को बढ़ावा देने के लिए विशेष टिकट जांच अभियान

कोलकाता, समाज्ञा : पूर्व रेलवे के हावड़ा डिवीजन ने एक बार फिर यात्री सुविधा को बढ़ाने और उचित यात्रा प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए हावड़ा-बंडेल सेक्शन पर एक विशेष टिकट-जांच अभियान का आयोजन किया। इस पहल का नेतृत्व पूर्व रेलवे के प्रमुख वाणिज्यिक प्रबंधक (पीसीसीएम) डॉ. उजय शंकर झा ने किया। यह अभियान टिकट अनुपालन सुनिश्चित करने के साथ-साथ यात्रियों को जिम्मेदार यात्रा के महत्व के बारे में जागरूक करने पर केंद्रित था। इस अभियान के दौरान 728 बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों को पकड़ा गया, जिनमें से 643 यात्री बिना वैध टिकट के यात्रा कर रहे थे। इस अभियान के दौरान कुल 2,33,070 रुपये का जुर्माना वसूला गया। डॉ. उजय शंकर झा ने कहा, यह अभियान न केवल हमारे यात्री सुविधा के प्रति समर्पण को मजबूत करता है, बल्कि उचित यात्रा प्रथाओं के महत्व को भी उजागर करता है, ताकि किराया अदा करने वाले यात्रियों को गुणवत्तापूर्ण सेवा मिल सके।

दमदम एयरपोर्ट 21 दिसंबर को करेगा शताब्दी वर्ष पूरा, मनेगा जश्न

यात्रियों को मिलेगा किफ़ायती कैंफे

कोलकाता, समाज्ञा : 1924 में दमदम हवाई अड्डे के रूप में स्थापित, कोलकाता हवाई अड्डे इस ऐतिहासिक अवसर पर हवाईअड्डा 21 दिसंबर, 2024 को अपनी शताब्दी का जश्न मनाने के लिए तैयार है। कार्यक्रम का उद्घाटन केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्रीमोहन नायडू किंजरपु द्वारा किया जाएगा। कार्यक्रम में केंद्रीय नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोल की गरिमामयी उपस्थिति में संसद सदस्य (लोकसभा) प्रो सौगत रॉय, नागरिक उड्डयन मंत्रालय सचिव वुमलुनमंग वुअलनाम, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण अध्यक्ष, विपिन कुमार और अन्य सम्मानित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहेंगे। यह उत्सव भारतीय विमानन के भविष्य को आकार देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को प्रदर्शित करते हुए हवाई अड्डे की समृद्ध विरासत को प्रतिबिंबित करेगा।

इस अवसर को चिह्नित करते हुए नागरिक उड्डयन मंत्रालय और एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा परिवर्तनकारी पहलों का समर्थन करने वाले एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में एनएससीबीआई हवाई अड्डे, कोलकाता में उड़ान यात्री कैफे नामक एक बजट-अनुकूल कैफे भी लॉन्च किया जाएगा। कैफे किफायती मूल्य पर एक क्यूरेटेड मेनू पेश करेगा, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि यात्रियों को लागत प्रभावी दर पर गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध हो, जिससे उनका यात्रा अनुभव बेहतर होगा। कई पहलों की भी योजना बनाई गई है, जिसमें कोलकाता हवाई अड्डे के 100 साल पूरे होने के सम्मान में स्मारक टिकट और सिक्का जारी करने के साथ-साथ आधुनिक हवाई अड्डे की वास्तुकला में परिलक्षित भारत की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने वाली कॉफी टेबल बुक का शुभारंभ भी शामिल है।

ने बंगाल फ्लाइंग क्लब (1929) की मेजबानी करके, पहले जेट सेवा केंद्र (1964) में से एक बनकर और 1975 में अपना पहला समर्पित एयरलाइन कार्गो टर्मिनल खोलकर भारतीय विमानन का नेतृत्व किया। इसका नाम बदलकर नेताजी कर दिया गया। 1995 में सुभाष चंद्र बोस अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा और 2013 में इसका उद्घाटन किया गया नया एकीकृत टर्मिनल, नवाचार के साथ विरासत का मिश्रण है, जो पूर्व और पूर्वोत्तर भारत के प्रवेश द्वार के रूप में इसकी स्थिति को मजबूत करता है।

1566.3 एकड़ भूमि के क्षेत्र और 2,30,000 वर्गमीटर के निर्मित क्षेत्र में फैला, एनएससीबीआई हवाई अड्डा सालाना 26 मिलियन यात्रियों की सेवा करने के लिए सुसज्जित है और लगभग 49 घरेलू और 15 अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों को सेवा प्रदान करता है। एएआई का कोलकाता हवाई अड्डा राष्ट्र के प्रति अपनी सेवा के 100 वर्ष पूरे होने का जश्न मना रहा है।

हावड़ा स्टेशन के पास बनारस रोड ओवर ब्रिज के निर्माण हेतु ट्रेनों का विनियमन

कोलकाता, समाज्ञा : हावड़ा डिवीजन के हावड़ा और लिलुआ स्टेशनों के बीच नए दो लेन वाले बनारस रोड ओवर ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। इस कारण 21 दिसंबर से 1 फरवरी 2025 तक ट्रैफिक और पावर ब्लॉक की योजना बनाई गई है। इस कार्य के कारण 21 दिसंबर 2024 से 22 जनवरी 2025 तक कुछ ईएमयू ट्रेनों को रद्द किया गया है। जिसमें बंडेल से हावड़ा तक ट्रेन संख्या 37212, 37214, 37216, 37218, 37220, 37222, 37230, 37232, 37236, 37244, 37250, 37254, 37264, 37278, 37288 शामिल है। वहीं, शेउराफुली से हावड़ा तक 37042, 37044, 37046, 37048, 37050, 37052, 37056, 37058, 37060, 37062, 37064, बेलुर मठ से हावड़ा तक 37112, 37118, श्रीरामपुर से हावड़ा तक 37012, 37014, हावड़ा से बंडेल तक 37215, 37231, 37237, 37243, 37249, 37253, 37255, 37257, 37263, 37267, 37201, 37271, 37275, 37277, 37285, हावड़ा से शेउराफुली तक 37041, 37043, 37045, 37047, 37049, 37051, 37055, 37057, 37059, 37061, 37063, हावड़ा से बेलुर मठ तक 37111, 37117, हावड़ा से श्रीरामपुर तक 37011, 37013 शामिल हैं। इसके अलावा, हावड़ा-वर्दवान मेमू स्पेशल (03051 अप) को 23 दिसंबर 2024 से 28 दिसंबर 2024 तक हावड़ा-वर्दवान कॉर्ड लाइन से डायवर्ट किया जाएगा। इस दौरान कुछ प्रमुख ट्रेनें जैसे 12370 डाउन देहरादून-हावड़ा कुंभ एक्सप्रेस, 12328 डाउन देहरादून - हावड़ा उपासना एक्सप्रेस आदि को 23 दिसंबर 2024 से 28 दिसंबर 2024 तक के बीच नियंत्रित रहेंगी। 29 दिसंबर 2024 से 1 फरवरी 2025 तक हावड़ा-वर्दवान मेमू स्पेशल (03051 अप) का समय 03:30 बजे से संशोधित किया जाएगा। इसके साथ ही, 12370 डाउन, 12328 डाउन, 15272 डाउन, 15236 डाउन, और अन्य महत्वपूर्ण ट्रेनों का मार्ग में नियंत्रण और पुनः निर्धारण किया जाएगा।

गलती से बचना हो तो कीजिए भजन : स्वामी रामभद्राचार्य

श्रीमहापुराण आयोजन समिति के सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का हुआ समापन

हावड़ा, समाज्ञा : सामान्यत: पत्नी पति को काम की ओर ले जाती है, पर सुदामा की पत्नी कल्याणी (सुशीला) जैसी पत्नी पति को श्याम की ओर ले जाती है। एक दिन कल्याणी (सुशीला) सुदामा से बोली क्यों नहीं अपने मित्र द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण के पास जाते है?सुदामा जी बोले तू क्या समझती है पैसे के लिए मैंने कृष्ण से मित्रता किया है। कल्याणी बोली, नहीं दर्शन करने के लिए चले जाइए। पत्नी द्वारा दी हुई चार मुट्ठी चावल लेकर सुदामा चल पड़े। चलते-चलते सुदामा थककर सो गए। तब भगवान श्रीकृष्ण ने गरुड़ से कहा, जाओ मेरा मित्र सोया पड़ा है। उन्हें लाइए। गरुड़ गए और पल भर में सुदामाजी को द्वारिकापुरी ला दिए। जब भगवान श्रीकृष्ण को द्वारपालों से पता चला कि सुदामा नाम का एक ब्राह्मण आया है तो समझ गए कि वह मेरा सुदामा है। सुदामा को लाने के लिए भगवान कृष्ण दौड़ पड़े, लाए और पांव पखारे। उपहार में लाए पोटली के चार मुट्ठी चावल को देखकर प्रसन्न भाव से उसे खाने लगे। अपने मित्र और भक्त सुदामा को श्रीसम्पन्न कर दिए। भगवान अपने भक्तों को हमेशा ख्याल रखते हैं। भगवान का जो भजन नहीं करते हैं वे गलतियां करते हैं। जो भजन करते हैं, उनसे अगर गलती हो भी जाती है तो भगवान उसे सुधार देते हैं। भगवान

श्रीकृष्ण ने उद्धव के पूछने पर बताया कि मुझे सत्संग सबसे अच्छा लगता है। भक्ति से कोई भी पवित्र हो सकता है। गुरुदेव के माध्यम से भवसागर से पार होने के लिए ईश्वर की प्राप्ति करनी चाहिए। ये बातें श्रीमहापुराण आयोजन समिति के तत्वावधान में श्रीमद्भागवत कथा पर प्रवचन करते हुए पद्मविभूषण तुल-सीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानंदाचार्य श्री स्वामी रामभद्राचार्य महाराज ने फोरशोर रोड स्थित श्रीलक्ष्मी विलास विलास गार्डन में कही। उन्होंने कहा कि मैंने जीवन में जो पाया है गुरुदेव की कृपा से। अपने व्यवहार से गुरुदेव का मन दुखी न होने दें। जो मैंने कथा सुनाई, उसका सारा पुण्य भारत माता को समर्पित करता हूं। मेरी हार्दिक इच्छा पाक अधिकृत कश्मीर भारत को मिल जाए। मौके पर स्वामी रामभद्राचार्य के उत्तराधिकारी रामचंद्र दास महाराज ने कहा कि श्रीमद्भागवत भगवान श्रीकृष्ण का अक्षरावतार है, भगवान श्रीकृष्ण का साक्षात विग्रह है। इस अवसर पर सुधा-सोमनाथ अडूकिया, सुनीता-दिनेश अडूकिया, सरिता-विवेक अडूकिया, बबीता-ज्ञान अडूकिया, रमाकांत देवड़ा, विनोद अग्रवाल, राजकुमार डागा ने व्यासपीठ व पादुका पूजन किया। कार्यक्रम सफल बनाने में श्याम सुंदर चांडक, रामचंद्र जोशी, ललित सिंघी, राम अवतार बिहानी, अनिल रूंगटा, कैलाश बलदेवा, मनोज चंडालिया, पवन तांबी, पवन दायमा, अशोक शर्मा सहित अन्य सदस्य सक्रिय रहे। इस अवसर पर नंदलाल रूंगटा, सुशील ओझा, गोविन्द मुरारी अग्रवाल, प्रदीप ढेडिया, निरंजन कुमार अग्रवाल, पुरुषोत्तम तिवारी सहित अन्य गणमान्य लोगों ने व्यासपीठ से आशीर्वाद लिया। संस्था के अध्यक्ष सोमनाथ अडूकिया ने धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन पत्रकार प्रकाश चंडालिया किया।

व्रत एवं त्यौहार पंचांग के 33वें अंक का लोकार्पण

हावड़ा, समाज्ञा : चित्रकूट तुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानंदाचार्य श्री स्वामी रामभद्राचार्य ने व्यासपीठ से व्रत एवं त्यौहार पंचांग के 33वें अंक का लोकार्पण किया। संस्कृति प्रचार समिति द्वारा प्रकाशित व्रत एवं त्यौहार पंचांग का सम्पादन वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य डॉ. राकेश कुमार पाण्डेय द्वारा किया जाता है। तैंतीस कोटि देवता हैं, 33वें अंक का लोकार्पण करते हुए रामभद्राचार्य जी ने प्रसन्नता व्यक्त की और ज्योतिषाचार्य को आशीर्वाद दिया। बाल व्यास श्री श्रीकान्त शर्मा के शब्दों में ज्योतिषाचार्य राकेश कुमार पाण्डेय कोलकाता का मुहूर्त निकालते हैं। इस अवसर पर तुल-सीपीठ के उत्तराधिकारी आचार्य रामचन्द्र दास, संस्कृति प्रचार समिति के सभापति सुरेश कुमार टांटिया, संरक्षक ट्रस्टी मदन मोहन खण्डेलवाल, सुरेश धानुका, सन्तोष धानुका, राजेश माहेश्वरी, एन के अग्रवाल, सुभाष मुरारका, ओम प्रकाश सेक्सरिया, पुरुषोत्तम तिवारी, आचार्य राजेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी, तारकेश्वर तिवारी सहित समिति के पदाधिकारी व गणमान्य उपस्थित थे।

नीतीश व चंद्रबाबू नाम के बैसाखी के सहारे चल रहें है पीएम मोदी : फिरहाद हकीम

मेयर ने अपने बयान पर फिर दी सफाई, तोड़-मरोड़कर पेश करने का लगाया आरोप

मेयर ने कहा... 'दिल्ली के 24 टीवी चैनल में झूठा मालवीय बैठा है'

कोलकाता, समाज्ञा : ममता सरकार के मंत्री और कोलकाता के मेयर फिरहाद हकीम ने एक बार फिर वक्फ बिल को लेकर मोदी सरकार पर निशाना साधा है। फिरहाद ने यह भी कटाक्ष किया कि मोदी सरकार लंगड़े की तरह चल रही है। फिरहाद ने इस मामले में अमित मालवीय पर भी निशाना साधा है। पीएम मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि अरे मोदी सरकार आप तो 2 बैसाखी लेकर चल रहे हैं। एक का नाम है नीतीश कुमार और दूसरे का नाम है चंद्रबाबू नायडू। जब एक बैसाखी गिर जाएगा तो आप लंगड़े के

माफिक गिर जाओगे। आप ये बिल पास करने का कोशिश कर रहे है। ये बिल पास नहीं होगा, आप भरोसा रखिए। ये बिल पास नहीं होगा क्योंकि उनका प्रॉपर्टी लेना का अधिकार मोदी सरकार का नहीं है। वहीं, आगे अमित मालवीय पर निशाना साधते हुए मेयर ने कहा कि यहां पर 24 टीवी चैनल है ऐसा है जो यहां से लेकर दिल्ली तक, वहां पर बैठे हैं एक आदमी जिसका नाम है झूठा मालवीय, अमित मालवीय! वह मेरा एक बात को घुमाकर ऐसे कम्यूनल बना देगा, यहां पर भाषण चल रहा है मेरा और वह वहां पर टीवी खोलकर रखा है कि फिरहाद हकीम क्या कह रहा है और उसको कैसे घुमाया जाए। मैं सीधे तरीके से कहना चाहता हूं कि सभी धर्म को मैं दिल से इज्जत करता हूं, लेकिन मेरा धर्म को मैं 100 फीसदी मानता हूं। उन्होंने आगे कहा कि जो लोग समाज में पीछे हैं उनका शिक्षा को लेकर बात करना अगर गुनाह है तो में निश्चित रूप से गुनहगार हूं, शिक्षित होने के लिए कहना अगर गलत है तो निश्चित रूप से में गुनहगार हूं। अपने कम्युनिटी को शिक्षित करने का बात का मतलब यह नहीं कि दूसरे कम्युनिटी को अशिक्षित करना। कभी भी नहीं.. सभी को शिक्षित होना पड़ेगा लेकिन जो समाज में पीछे है उन्हें शिक्षित होना पड़ेगा। शिक्षा का रोशनी में जाना पड़ेगा और जस्टिस देने का जगह पर जाना पड़ेगा।

सोशल मीडिया पर लाइव होकर शख्स ने खुद को लगाई आग, बचाने में पत्नी भी झुलसी

हुगली, समाज्ञा : जिले के पांडुआ में एक व्यक्ति ने बुधवार की शाम अपने शरीर पर पेट्रोल छिड़कर खुद को जलाने की कोशिश की, पूरा मामला फेसबुक लाइव में कैद हो गया। व्यक्ति को बचाने की कोशिश में उसकी पत्नी भी झुलस गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार, आलोक हाजरा नाम का शख्स पांडुआ के खिरकुंडी नमाज ग्राम पंचायत के कालीशंदा इलाके के रहने वाले आसिफ हुसैन मोल्ला के साथ हर्बल उत्पादों का नेटवर्क बिजनेस कर रहा था। कुछ समय से आलोक के आसिफ से रिश्ते खराब होने लगे थे। बुधवार को भी आलोक और आसिफ के बीच विवाद हुआ था। इसके बाद, आसिफ के घर के पास आलोक ने पेट्रोल छिड़क कर खुद को आग लगा ली। आलोक को बचाने के दौरान उसकी पत्नी मौसमी भी झुलस गई। पूरी घटना आल-ोक हाजरा के फेसबुक लाइव पर कैद हो गई। आलोक और उनकी पत्नी मौसमी ने आरोप लगाया कि आसिफ उन्हें उन्हें बार-बार अपमानित कर रहा था। इसलिए आलोक ने अपनी जीवनलीला समाप्त करने का निर्णय लिया।

स्थानीय सूत्रों के अनुसार आसिफ और आलोक लंबे समय से एक साथ हर्बल नेटवर्क बिजनेस कर रहे थे। व्यावसायिक कारणों से आसिफ का आलोक पर बहुत सारा पैसा बकाया है। आरोप है कि पैसे न मिलने के कारण आसिफ मोल्ला आलोक के खिलाफ फेसबुक लाइव पर तरह-तरह की टिप्पणियां करनी शुरू कर दीं। आलोक को उसने सोशल मीडिया पर 'चोर', 'धोखेबाज' आदि कहता रहा और इस तरह आलोक का सामाजिक सम्मान ख़त्म होने लगा। आसिफ से पोस्ट हटाने के लिए कहा गया, लेकिन आलोक के सहयोगियों ने दावा किया कि आसिफ ने ऐसा नहीं किया। इस दिन, शाम को आलोक और उसकी पत्नी मौसमी कुछ लोगों के साथ आसिफ के घर के सामने पहुंचे। आलोक ने वहीं से फेसबुक लाइव करना शुरू कर दिया। एक बार फिर उनमें बहस होने लगी। इसी दौरान, आलोक ने कहा कि उसके पास आत्महत्या के अलावा कोई विकल्प नहीं है और पेट्रोल छिड़ककर खुद को आग लगा ली। पति को बचाने के प्रयास में उसकी पत्नी भी झुलस गयी। इधर, आसिफ मौके से भाग गया। आलोक और मौसमी को पहले पांडुआ ग्रामीण अस्पताल ले जाया गया। वहां से चुंचुड़ा इमामबाड़ा अस्पताल भेज दिया गया। हुगली ग्रामीण पुलिस के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कल्याण सरकार ने कहा कि यह घटना व्यावसायिक संबंधों के कारण हुई है। मामले की जांच करायी जायेगी।

एक ही रात में 7 दुकानों में चोरी, सीसीटीवी में कैद हुई घटना

हावड़ा, समाज्ञा : हावड़ा के जगतबल्लभपुर इलाके के पातिहाल में सर्दी के मौसम में चोरी की घटनाएं सामने आई हैं। गुरुवार को इलाके में एक ही रात में चोरों ने सात दुकानों को निशाना बनाकर चोरी की। यह पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। पुलिस ने घटना की जांच शुरू कर दी है और यह पाया गया है कि चोरों का एक समूह तीन से चार लोगों का था। यह समूह लगातार दुकानों में चोरी करता गया और फिर फरार हो गया। स्थानीय निवासी इस घटना से काफी डर गए हैं और पुलिस से सुरक्षा की मांग कर रहे हैं। यह घटना इलाके में तनाव का माहौल पैदा कर रही है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

वैथाभांगा जंगल में बाघ के हमले में मछुआरे की मौत

कोलकाता, समाज्ञा : एक बार फिर बाघ के हमले में एक मछुआरे की मौत हो गई है। मृतक की पहचान कर्णधर मंडल (36) के रूप में की गई है। जानकारी के अनुसार, यह घटना दक्षिण 24 परगना के कुलतलि मोईपीठ कोस्टल थाना अंतर्गत बैकुंठपुर के वैथाभांगा जंगल में घटी। स्थानीय सूत्रों के अनुसार, गुरुवार की सुबह कर्णधर और उसके तीन साथी वैथाभांगा जंगल में केकड़े पकड़ने गये थे। तभी, जंगल से केकड़ा पकड़ते समय अचानक एक बाघ ने कर्णधर पर हमला कर दिया। इससे पहले उसके साथ कुछ कर पाते तब तक कर्णधर की मौत हो चुकी थी। कर्णधर के क्षत-विक्षत शरीर को लेकर जब उसके साथी उसके घर पहुंचे तो रोना धोना शुरु हो गया व इलाके में शोक फैल गई।

400 बोरी राशन के चावल के तस्करी की कोशिश नाकाम, दो गिरफ्तार

हुगली, समाज्ञा : जिले में धनियाखाली थानांतर्गत भंडारहाटी इलाके में फीड रोड पर नाका चेकिंग के दौरान पुलिस ने बड़ी मात्रा में तस्करी के लिए जा रहे राशन के चावल को पकड़ा है। आरोपितों का नाम संजय दुले और कार्तिक दुले है। दोनों बांकुड़ा जिले के रहने वाले हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार, पुलिस ने 400 बोरी राशन के चावल के साथ एक ट्रक को पकड़ा साथ ही ट्रक के चालक और खलासी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस सूत्रों के अनुसार, चावल की बोरियों पर पश्चिम बंगाल सरकार के खाद्य एवं आपूर्ति विभाग का नाम और मोहर छपी हुई थी। चावल कहां जा रहा था और कहां से लाया जा रहा था, इसका उचित जवाब नहीं दे पाने के कारण ड्राइवर और खलासी को गिरफ्तार कर लिया गया। गुरुवार को गिरफ्तार किए गए लोगों को 10 दिन की पुलिस हिरासत के आवेदन के साथ चुंचुड़ा अदालत भेजा गया।

मेमारी में महिला गांजा कारोबारी के घर पर मिला नोटों का पहाड़

गांजा तस्करी छापेमारी में मिला करीब 42 लाख नगद और 47 किलो गांजा, महिला गिरफ्तार

पूर्व बर्दवान : जिले के मेमारी में पुलिस ने एक महिला के घर पर छापेमारी की, जिसमें करीब 42 लाख रुपये नगद और 47 किलो गांजा बरामद किया गया। इस छापेमारी ने नशे के व्यापार से जुड़े एक बड़े गिरोह का पर्दाफाश किया है। पुलिस को महिला के घर से एक बंकर भी मिला, जहां लाखों रुपये रखे हुए थे। संगीता साहनी नामक महिला को गिरफ्तार किया गया, जो इस गिरोह की प्रमुख आरोपी मानी जा रही है। सूचना मिलने के बाद मेमारी थाना पुलिस ने कृष्टि सिनेमा हॉल के पास एक मोहल्ले में इस कार्रवाई को अंजाम दिया। पुलिस सूत्रों के अनुसार, घर के बेसमेंट में

बकरियों के खाने के लिए पेड़ों के पत्ते रखे थे, जिनमें छिपाकर दो बड़ी बोरियां रखी गई थीं। इन बोरियों में गांजा और नगद पैसे थे। तहखाने में एक लोहे का ढक्कन भी था, जिसे खोलते ही पुलिस को पैसों से भरे बैग मिले। एक बैग में 500 से लेकर 20 रुपये तक के नोट थे, जिनकी गिनती के लिए बैंक से कर्मचारी को बुलाया गया था। गिनती में लगभग दो घंटे का समय लगा। इसके अलावा, पुलिस को 47.5 किलो गांजा भी बरामद हुआ, जो गांवों में छोटे पैकेट्स (पुरिया) में पैक किया गया था। पुलिस का मानना है कि यह घर गांजा तस्करी का एक प्रमुख केंद्र था, और यहां से न केवल जिले में गांजा बेचा जाता था, बल्कि बाहर भी तस्करी की जाती थी। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ऑर्क बनर्जी ने बताया कि यह छापेमारी वीडियो रिकॉर्डिंग के साथ की गई थी, और पुलिस ने जब्त किए गए गांजे और पैसों की जांच शुरू कर दी है। उन्होंने कहा कि पुलिस इस गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश भी कर रही है और यह विस्तृत जांच की जा रही है कि गांजा कहां से आया और कहां बेचा गया। गिरफ्तार महिला को बर्दवान कोर्ट में पेश किया गया है, और मामले की जांच आगे बढ़ रही है।

नदिया में प्रेम प्रस्ताव ठुकराने पर युवती से सामहिक दुष्कर्म

कोलकाता, समाज्ञा : राज्य में फिर सामूहिक दुष्कर्म का आरोप लगा। इस बार, घटनास्थल नदिया का धुबुलिया है। प्यार के प्रस्ताव का जवाब न देने का आक्रोश परिचित युवक ने दोस्तों के साथ मिलकर युवती से सामूहिक दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया है। आरोप है कि लड़की को सुनसान इलाके में ले जाया गया और उसके साथ ज्यादती की गई। यह घटना 7 दिसंबर की है। हालांकि, पीड़िता ने बुधवार यानी 18 तारीख की रात थाने में शिकायत दर्ज कराई। पता चला है कि 21 वर्षीय पीड़िता धुबुलिया की रहने वाली है। वह मुरागाचा इलाके के एक जिम सेंटर में जाती थी। धुबुलिया बस स्टैंड पर साइकिल खड़ी कर बस से जिम पहुंचते थे। वह साइकिल से घर लौटते थे जिस युवक को वह जानता था वह यह बात जानता था। पीड़ित ने शिकायत दी कि घटना वाले दिन वह साइकिल से घर लौट रहा था तभी कुछ युवकों ने उसका रास्ता रोक लिया। उस ग्रुप में उसे प्रपोज करने वाला एक युवक भी था।आरोप है कि पीड़िता को जबरन सुनसान जगह पर ले जाया गया और उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया गया। घटना के 12 दिन बाद युवती ने धुबुलिया थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई। शिकायत मिलने के बाद बच्ची के स्वास्थ्य की जांच की गई। धुबुलिया थाना पुलिस घटना की जांच कर रही है। परिचित युवक से पूछताछ की जा रही है। पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि आरोपी के साथ और कौन था।

शेयर बाजार में निवेश के नाम पर धोखाधड़ी मामले में एक और गिरफ्तार

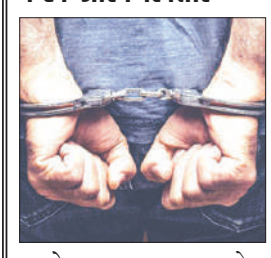

कोलकाता, समाज्ञा : शेयर बाजार में छोटी रकम निवेश करने पर बड़ा रिटर्न मिलता है। इसी लालच में जालसाजों के चक्कर में युवक फंस गया। उसने बांसद्रोणी के एक से बहुत सा धन भी हथिया लिया। उस जांच के बाद कोलकाता पुलिस ने हावड़ा के एक निवासी को गिरफ्तार कर लिया। बांसद्रोणी निवासी राजीव चक्रवर्ती ने कोलकाता पुलिस की साइबर विंग में शिकायत दर्ज कराई है। आरोपियों ने शेयर बाजार में छोटी रकम निवेश करने और रातों-रात भारी रिटर्न पाने का वादा कर करीब 64 लाख रुपए हड़प लिए। इस शिकायत की जांच करने पर उन्हें एक सरकारी बैंक खाते में 46 लाख रुपएका लेनदेन मिला। उस सूत्र के आधार पर, धोखाधड़ी गिरोह के एक आरोपी, बारासात निवासी 34 वर्षीय तन्मय पाल को गिरफ्तार किया गया। वह 31 दिसंबर तक पुलिस हिरासत में रहेंगे। उससे पूछताछ और अन्य डिजिटल सबूतों के आधार पर एक अन्य व्यक्ति का पता लगाया गया। विज्ञापन पुलिस ने बुधवार की देर रात हावड़ा के लिलुआ में छापेमारी की। वहां से शांतनु गायेन को गिरफ्तार कर लिया गया। महज 20 साल के युवक के खाते में 46 लाख रुपए आए। जांचकर्ताओं के मुताबिक शांतनु इस धोखाधड़ी मामले से सीधे जुड़े हुए हैं। गुरुवार को उन्हें कोर्ट में पेश किया गया।

चिंतामणी दे रोड पर स्थित एक मकान के मीटर बॉक्स में लगी आग

हावड़ा, समाज्ञा : हावड़ा के चिंतामणी दे रोड पर गुरुवार को मीटर बॉक्स में भीषण आग लगने से इलाके में हड़कंप मच गया। हालांकि, इस घटना में किसी के हताहत होने की कोई खबर नहीं है, लेकिन मीटर बॉक्स पूरी तरह से जल कर खाक हो गया। मिली जानकारी के मुताबिक, गुरुवार दोपहर जब रास्ते में पूरी भीड़ थी, तभी शॉर्ट सर्किट के कारण मीटर बॉक्स में अचानक आग लग गई। देखते-देखते पूरा इलाका धुएं से भर गया। लोग दहशत में आ गए और भगदड़ मच गई। आनन-फानन में पुलिस और दमकल को सूचित किया गया। मौके पर दमकल की एक गाड़ी पहुंची और करीब आधे घंटे के अंदर आग पर काबू पा लिया

गया। मौके पर हावड़ा थाना की पुलिस भी पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया। बताया जा रहा है कि इससे पहले भी आग लगने की घटनाएं घट चुकी हैं, जिसके कारण लोगों में दहशत का माहौल बन गया है।

तृणमूल विधायक असित मजूमदार जनसंपर्क अभियान के दौरान हुए दुर्घटना का शिकार

हुगली, समाज्ञा : हुगली जिले के चुंचुड़ा विधानसभा क्षेत्र से तृणमूल विधायक असित मजूमदार गुरुवार को जनसंपर्क अभियान के दौरान दुर्घटना का शिकार हो गए। मिली जानकारी के अनुसार देवानंदपुर ग्राम पंचायत इलाके में नाले पर रखे हुए स्लैब पर अचानक उसका पैर पड़ गया और उनके बाएं पैर में चोट आ गई। इस घटना से विधायक को खुद इस बात का एहसास हुआ कि इलाके के नाले कितने खतरनाक हैं। खुद घायल होने के बाद असित मजूमदार ने नालियों पर से टूटे हुए स्लैब हटा दिए और उनके मरम्मत का आदेश दिया। उल्लेखनीय है कि, पिछले लोकसभा चुनाव में चुंचुड़ा विधानसभा क्षेत्र में

तृणमूल की हार के बाद से विधायक असित मजूमदार खुद जनसंपर्क अभियान में सक्रिय हैं। वह प्रतिदिन किसी न किसी इलाके में अकेले जाते हैं। गुरुवार को उन्होंने देवानंदपुर ग्राम पंचायत अंतर्गत कई इलाकों का दौरा किया। इस दौरान लोगों ने उनसे पानी और जल निकासी व्यवस्था की शिकायत की। चोटिल विधायक को अस्पताल ले जाया गया।

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के अपमान के विरोध में विधान भवन स्थित कांग्रेस कार्यालय के समक्ष कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया।

केबल लाइन के लिए बुजुर्ग की हत्या, 11 साल बाद युवक को मिला आजीवन कारावास

कोलकाता, समाज्ञा : जयनगर में बुजुर्ग की हत्या करने के आरोपी युवक को बारीपुर फर्स्ट ट्रक कोर्ट के न्यायाधीश ने आजीवन कारावास का आदेश दिया। घटना 2013 की है। 14 अगस्त 2013 को शाम आठ बजे केबल लाइन लाने को लेकर हुए झगड़े में देवर हराधन सरदार के पुत्र जेठिमा प्रमिला सरदार पर धारदार चाकू से वार करने का आरोप लगाया गया था। उस दिन अस्पताल ले जाते समय प्रोमिला की मौत हो गई। उस हत्याकांड में मुख्य आरोपी साहेब सरदार और उसके पिता, मां, बहन और दादा के नाम पर भी शिकायत दर्ज कराई गई थी। आखिरकार गुरुवार को बारीपुर फास्ट ट्रक कोर्ट के न्यायाधीश कृष्णेंदु सरकार ने मुख्य आरोपी श्री सरदार

को सश्रम कारावास के साथ आजीवन कारावास की सजा सुनाई। साथ ही 5000 रुपए का जुर्माना भी लगाया। वहीं इस घटना में आरोपी बाकी 4 सदस्यों को बरी कर दिया गया है। बुधवार को अदालत में न्यायाधीश ने श्री सरदार को दोषी पाया। गुरुवार को आए फैसले से मृतक का परिवार खुश है। सरकारी वकील रथींद्रनाथ नस्कर ने कहा कि 14 गवाहों की गवाही से ही मृतक के परिवार को न्याय दिलाना संभव है।

पांडुआ में ट्रैक्टर पलटने से तीन लोगों की मौत

हुगली, समाज्ञा : जिले में पांडुआ के जमना ग्राम पंचायत के मूलग्राम इलाके में गुरुवार को एक ट्रैक्टर पलटने से तीन लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि मृतकों की पहचान अंजन हेंब्रम, विश्वजीत बक्से और उत्तम हांसदा के रूप में की गई है। स्थानीय एवं पुलिस सूत्रों के अनुसार, एक ट्रैक्टर जमना के पीरा गांव से मुलग्राम की ओर जा रहा था। उसी समय वक्त ट्रक के इंजन पर अंजन हेंब्रम, विश्वजीत बक्से और उत्तम हांसदा बैठे थे। इन सभी की उम्र 28 से 30 साल के बीच थी। तीनों पीरा गांव के निवासी थे। मूलग्राम मार्ग से होकर खेत पर जाते समय ट्रैक्टर अचानक पलट गया। तीनों ट्रैक्टर के नीचे दब गए। स्थानीय निवासियों ने घायलों को ट्रैक्टर के नीचे से निकाल और पांडुआ ग्रामीण अस्पताल ले गए जहां डॉक्टरों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने के बाद पांडुआ थाना और बैंची चौकी की पुलिस मौके पर गयी। ट्रैक्टर को बरामद कर लिया गया। तीनों मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए इमामबाड़ा अस्पताल भेजा जाएगा।

नाबालिग से छेड़खानी के आरोप में डिलीवरी ब्वॉय गिरफ्तार, सांसद ने जताई चिंता

हुगली, समाज्ञा : ऑनलाइन बुक किए गए सामान की डिलीवरी के दौरान नाबालिग से छेड़छाड़ के आरोप में श्रीरामपुर में पुलिस ने एक डिलीवरी ब्वॉय को गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, श्रीरामपुर में एक परिवार ने एक ऑनलाइन मार्केटिंग कंपनी से सामान ऑर्डर किया था। बुधवार को एक युवा डिलीवरी ब्वॉय सामान डिलीवर करने गया था। उस वक्त नाबालिग घर पर अकेली थी। डिलीवरी ब्वॉय ने नाबालिग से ओटीपी मांगा, नाबालिग ने कहा कि उसकी मां घर पर नहीं है और वह ओटीपी नहीं दे सकती है। नाबालिग के मुताबिक, डिलीवरी ब्वॉय ने उससे कहा कि वह कंप्यूटर खोलकर देख ले ओटीपी भेजा गया है। आरोप है कि जब नाबालिग मेल चेक करने गई तो डिलीवरी ब्वॉय ने घर में घुसकर उसके साथ छेड़छाड़ की। उसने नाबालिग को धमकी भी दी कि अगर उसने किसी को बताया तो वह उसे सड़क पर देख लेगा। नाबालिग ने अपनी मां को फोन कर घटना की जानकारी दी। इसके बाद नाबालिग के परिजनों ने श्रीरामपुर थाने में शिकायत दर्ज करायी। पुलिस ने जांच की और ऑनलाइन संस्था से युवक की पहचान करायी। इसके बाद. रात में उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

इधर, गुरुवार को श्रीरामपुर के सांसद कल्याण बनर्जी ने मामले पर चिंता जताते हुए सोशल मीडिया के जरिए लोगों को आगाह किया। कल्याण बनर्जी ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म फेसबुक पर लिखा, मैं सभी से विनम्र आग्रह करता हूं कि सुनिश्चित करें कि जब आपका बच्चा अकेला हो तो कोई भी डिलीवरी करने वाला व्यक्ति आपके घर के अंदर न आए। हाल ही में मुझे श्रीरामपुर इलाके में घटी घटना के बारे में पता चला, जहां एक डिलीवरी बॉय ने एक घर में घुसकर घर में अकेली एक छोटी लड़की के साथ दुर्व्यवहार प्रयास किया। शुक्र है कि श्रीरामपुर थाने ने तुरंत कार्रवाई की, उस व्यक्ति की पहचान की और उसे गिरफ्तार कर लिया, जैसा कि मैंने अनुरोध किया था। कृपया सतर्क रहें और अपने बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए हर एहतियात बरतें।

न्यूज इन ब्रीफ

अदालत ने राहुल गांधी के खिलाफ दोहरी नागरिकता मामले में केंद्र को विवरण मुहैया कराने के लिए समय दिया

लखनऊ : इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने बृहस्पतिवार को केंद्र सरकार को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ कथित ब्रिटिश नागरिकता के मामले में दायर याचिका पर लिए गए निर्णय को प्रस्तुत करने के लिए अगले साल 24 मार्च तक का समय दिया। इस याचिका में राहुल की ब्रिटिश नागरिकता को कथित तौर पर छुपाने के कारण इसी साल रायबरेली लोकसभा सीट से उनके निर्वाचन को रद्द करने का अनुरोध किया गया है। मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति अरुण भंसाली और न्यायमूर्ति जसप्रीत सिंह की पीठ ने कर्नाटक के भाजपा कार्यकर्ता एस विग्नेश शिशिर द्वारा दायर एक जनहित याचिका पर यह आदेश पारित किया। अदालत ने 25 नवंबर को याचिका पर सुनवाई करते हुए याचिकाकर्ता के अभ्यावेदन पर अपने फैसले के बारे में केंद्र सरकार से जानकारी मांगी थी।

किसान नेता डल्लेवाल की तबीयत बिगड़ी, अचानक हुए बेहोश

जींद (हरियाणा) : पिछले 24 दिन से खनौरी बॉर्डर पर अनशन कर रहे किसान नेता सरदार जगजीत सिंह डल्लेवाल की बृहस्पतिवार को तबीयत बिगड़ गई और वह अचानक बेहोश हो गए। दो दिन से डल्लेवाल मंच पर भाषण देने में भी असमर्थ थे। इसके चलते तंबू में ही डल्लेवाल के स्वास्थ्य की देखभाल की जा रही थी। आज दोपहर को डल्लेवाल की तबीयत बिगड़ गई और वह बेहोश हो गए। इसके बाद उनको तीन से चार बार उल्टी भी हुई। फिलहाल डल्लेवाल की हालात स्थिर बनी हुई है। बृहस्पतिवार शाम को सांसद दीपेंद्र हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस नेताओं का प्रतिनिधिमंडल डल्लेवाल से मिला और उनका हालचाल जाना। प्रतिदिन चिकित्सक डल्लेवाल के स्वास्थ्य की जांच कर रहे हैं।

सुशासन का प्रतीक माने जाते हैं अटल बिहारी वाजपेयी : मुख्यमंत्री योगी

लखनऊ : उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बृहस्पतिवार को कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन का प्रतीक माने जाते हैं। योगी ने कहा कि राजनीतिक अस्थिरता को स्थिरता में बदलना, सुशासन के लक्ष्यों को प्राप्त करना, देश के अंदर अंत्योदय योजना लाना, हर गरीब-वंचित को अधिकार दिलाना, अंत्योदय कार्ड-राशन उपलब्ध कराना, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना पेश करना, अनुसूचित जाति-जनजाति या पिछड़े वर्ग को उनके अधिकार दिलाना और स्वर्णिम चतुर्भुज, विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचा व हाईवे अटल जी की देन है। एक

बयान के मुताबिक, योगी ने बृहस्पतिवार को संगीत नाटक अकादमी में सुशासन सप्ताह का शुभारंभ किया। उन्होंने अटल के व्यक्तित्व पर लगाई गई प्रदर्शनी का शुभारंभ व अवलोकन किया। अटल के जन्मदिवस की 100वीं वर्षगांठ पर 25 दिसंबर तक सुशासन सप्ताह मनाया जाएगा। योगी ने कहा, ''भारत मां के महान सपूत, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का यह जन्म शताब्दी वर्ष है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से आज से पूरे देश में सुशासन सप्ताह का शुभारंभ हो रहा है। अटल की पैतृक जन्मभूमि उत्तर प्रदेश है। उन्होंने अपनी कर्मभूमि के रूप में भी उत्तर प्रदेश को ही चुना।'' उन्होंने कहा, ''अटल ने बलरामपुर और लखनऊ से कई बार संसद में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया। विदेश मंत्री, प्रधानमंत्री के रूप में भी उन्होंने देश को सक्षम नेतृत्व प्रदान किया। अटल कवि, पत्रकार, साहित्यकार व राजनेता थे। वह सबको साथ लेकर चलने का सामर्थ्य रखते थे। उन्हें भारतीय राजनीति का अजातशत्रु कहा जाता था।'' योगी ने कहा, ''आज से हर जनपद में कार्यक्रम शुरू हुए हैं, जो सप्ताह भर (25 दिसंबर तक) चलेंगे। स्कूली बच्चों के लिए सुशासन पर निबंध लेखन, उच्च शिक्षा स्तर पर भाषण, पेंटिंग प्रतियोगिता, ग्रामीण क्षेत्र में संगोष्ठी का आयोजन हो रहा है। विजेताओं को 25 दिसंबर को सम्मानित किया जाएगा।'' उन्होंने बताया कि 25 दिसंबर की शाम को हर जनपद के स्कूल-कॉलेज में अटल की कविताओं पर आधारित काव्य संध्या भी होगी, जिसमें नवोदित कवि प्रस्तुति देंगे।

संभल से सपा के सांसद के खिलाफ बिजली चोरी के आरोप में प्राथमिकी दर्ज

संभल (उप्र) : उत्तर प्रदेश पुलिस ने संभल से समाजवादी पार्टी (सपा) के सांसद जियाउर रहमान बर्क के खिलाफ बृहस्पतिवार को यहां दीपा सराय इलाके में उनके आवास पर बिजली चोरी के आरोप में मामला दर्ज किया है। पुलिस ने बताया कि उनके पिता पर भी बिजली विभाग द्वारा घर के निरीक्षण के दौरान सरकारी अधिकारियों को धमकाने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। सांसद के खिलाफ बिजली अधिनियम, 2003 की धारा 135 (बिजली की चोरी या बिजली का अनधिकृत उपयोग) के तहत मामला दर्ज किया गया। बिजली विभाग के एक अधिकारी की शिकायत पर दर्ज प्राथमिकी में कहा गया है, विद्युत परीक्षण प्रयोगशाला से प्राप्त उपभोक्ता के मीटर की जांच करने पर यह स्पष्ट हो गया है कि मीटर से छेड़छाड़ करके बिजली चोरी की गई है।

न्यूज अपडेट

शाह की टिप्पणी ने आंबेडकर की गरिमा को ठेस पहुंचाई है, उन्हें अपनी टिप्पणी वापस लेनी चाहिए: मायावती

लखनऊ : बहुजन समाज पार्टी प्रमुख मायावती ने बृहस्पतिवार को कहा कि केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने बी आर आंबेडकर की गरिमा को ठेस पहुंचाई है और उन्हें अपनी टिप्पणी वापस ले लेनी चाहिए। बसपा नेता ने कहा कि भाजपा नेता की टिप्पणी ने दलित मसीहा की गरिमा को ठेस पहुंचायी है, और उनके अनुयायियों को अपमानित एवं आहत किया है। मायावती ने यहां पत्रकार वार्ता में कहा, ''जैसा कि सर्वविदित है कि संसद में भाजपा के श्री अमित शाह द्वारा भारतीय संविधान के मूल निर्माता तथा दलितों व अन्य उपेक्षित वर्गों के पूज्य भगवान एवं मसीहा परम पूज्य बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के बारे में इस्तेमाल किए गए शब्दों से बाबा साहेब की गरिमा एवं अस्तित्व को गहरी ठेस पहुंची है।''

मुस्लिम बहुल इलाके में फिर से खोले गए मंदिर में शुद्धिकरण और हनुमान चालीसा का पाठ किया गया

अलीगढ़ (उप्र) : बजरंग दल, अखिल भारतीय करणी सेना और भाजपा समेत दक्षिणपंथी संगठनों ने यहां एक भीड़भाड़ वाले मुस्लिम बहुल इलाके में लंबे समय से बंद पड़े शिव मंदिर में शुद्धिकरण (शुद्धिकरण) समारोह आयोजित किया। इस मंदिर को कई सालों से भुला दिया गया था, लेकिन बुधवार को इन संगठनों के सदस्यों ने इसे फिर से खोला। बुधवार रात कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच शुद्धिकरण समारोह और हनुमान चालीसा का पाठ किया गया। इस कार्यक्रम में आस-पास के इलाकों के कई लोग भी शामिल हुए। अखिल भारतीय करणी सेना के राज्य सचिव ज्ञानेंद्र सिंह चौहान ने कहा कि पूजा स्थलों को खोजने के अभियान के दौरान इस मंदिर का पता चला। उन्होंने कहा, हम बुधवार को इस मंदिर की पहचान करने में सफल रहे। स्थानीय महिला सपना सारस्वत ने समारोह में भाग लिया। उन्होंने कहा, हमें आज इस परित्यक्त मंदिर के बारे में पता चला और हमने इलाके की सफाई और पूजा में मदद की। अलीगढ़ की पूर्व भाजपा महापौर शकुंतला भारती ने मंदिर की स्थिति पर चिंता व्यक्त की।

बिहार में ऐप के जरिये सड़कों की खराब स्थिति की जानकारी दे सकेंगे लोग

पटना : बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बृहस्पतिवार को एक मोबाइल ऐप की शुरुआत की, जिसके जरिये राज्य के सुदूरवर्ती भागों में लोग सड़कों की खराब स्थित के बारे में सूचना संबंधित विभाग को दे सकेंगे। मुख्यमंत्री ने अपने आधिकारिक आवास पर ग्रामीण निर्माण विभाग के मंत्री अशोक चौधरी और मुख्य सचिव अमृत लाल मीणा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में हमारा बिहार हमारी सड़क ऐप जनता को समर्पित किया। इस अवसर पर नीतीश ने उम्मीद जताई की कि अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से ग्रामीण सड़कों का बेहतर रखरखाव सुनिश्चित होगा तथा नागरिकों की शिकायतों का त्वरित समाधान होगा। ग्रामीण निर्माण विभाग के अपर मुख्य सचिव दीपक कुमार सिंह ने कहा कि एंड्रॉयड आधारित इस ऐप पर प्रखंड वार 65,000 किलोमीटर सड़कों को सूचीबद्ध किया जाएगा और लोग फोटो अपलोड करके गड्ढों जैसी किसी भी खराबी की सूचना दे सकते हैं। सिंह ने कहा, पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए संबंधित अधिकारियों को मरम्मत कार्य करने के बाद सड़कों की तस्वीरें अपलोड करनी होंगी।

योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री पद से हटाने की मांग वाली जनहित याचिका दायर

प्रयागराज : उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पद से हटाने की मांग करते हुए एक जनहित याचिका इलाहाबाद उच्च न्यायालय में दायर की गई है। पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज की उत्तर प्रदेश शाखा की ओर से दायर इस जनहित याचिका में कहा गया है कि न्यायमूर्ति शेखर कुमार यादव के समर्थन में योगी आदित्यनाथ का बयान धर्मनिरपेक्ष भारतीय गणतंत्र के लिए अपमान है। याचिका में आरोप लगाया गया है कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश शेखर कुमार यादव ने आठ दिसंबर, 2024 को विश्व हिंदू परिषद के विधि प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में मुस्लिम समुदाय के खिलाफ टिप्पणी की थी और उच्चतम न्यायालय ने इस मामले को संज्ञान में लेकर उच्च न्यायालय से प्रतिक्रिया मांगी थी।

आईओसी बिहार में 21,000 करोड़ रुपये निवेश करेगी

पटना : सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन (आईओसी) बिहार में 21,000 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। यह निवेश बरौनी रिफाइनरी की क्षमता बढ़ाने तथा वाहनों को सीएनजी और घरों तथा उद्योगों को पाइप के जरिये गैस की खुदरा बिक्री के लिए नेटवर्क स्थापित करने में किया जाएगा। कंपनी के कार्यकारी निदेशक सुमन कुमार ने निवेशक सम्मेलन 'बिहार बिजनेस कनेक्ट' के दूसरे संस्करण में कहा कि आईओसी अपनी बरौनी रिफाइनरी का विस्तार मौजूदा 60 लाख टन से बढ़ाकर 90 लाख टन सालाना तक कर रही है। इसके साथ ही कंपनी लगभग 16,000 करोड़ रुपये की लागत से एक पेट्रोरसायन संयंत्र भी स्थापित करेगी। इसके अलावा कंपनी बिहार के 27 शहरों में वाहनों के लिए सीएनजी और घरों तथा उद्योगों को पाइप से रसोई गैस की खुदरा आपूर्ति के लिए नेटवर्क स्थापित करने में 5,600 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। कुमार ने कहा, 'आईओसी बिहार में सबसे पुरानी निवेशक है। कंपनी ने 1964 में बरौनी रिफाइनरी की स्थापना की थी। इसकी शुरुआती क्षमता 30 लाख टन सालाना थी जिसे बाद में बढ़ाकर 60 लाख टन कर दिया गया। अब हम क्षमता को बढ़ाकर 90 लाख टन प्रति वर्ष कर रहे हैं। इसके साथ ही, 2,00,000 टन पॉलीप्रोपेलीन संयंत्र भी स्थापित किया जा रहा है।' पॉलीप्रोपेलीन प्लास्टिक उद्योग के लिए कच्चा माल होगा। विस्तार कार्यक्रम और संयंत्र को 2025 के अंत तक चालू करने की योजना है।

महाकुम्भ में नावों का किराया 50 प्रतिशत बढ़ाने पर सहमति बनी

महाकुम्भ नगर : तेरह जनवरी, 2025 से यहां शुरू हो रहे महाकुम्भ मेले में नाविकों की आय बढ़ाने की दिशा में मेला प्रशासन ने नावों का किराया 50 प्रतिशत बढ़ाने पर सहमति दी है। अपर जिलाधिकारी (महाकुम्भ) विवेक चतुर्वेदी के मुताबिक, संगम में चलने वाली नावों के किराए में 50 फीसदी की बढ़ोतरी की गई है। लंबे समय से नाविक किराया बढ़ाने की मांग कर रहे थे। प्रयागराज जिला नाविक संघ और मेला प्रशासन के बीच हुई बैठक के बाद यह निर्णय किया गया है। प्रयागराज जिला नाविक संघ के अध्यक्ष पप्पू लाल निषाद ने प्रशासन के इस फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि महंगाई बढ़ने के बावजूद कई वर्षों से नावों के किराए में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई थी। इसे देखते हुए प्रशासन का यह फैसला नाविकों के हित में है। अपर मेलाधिकारी ने बताया कि नावों का किराया बढ़ने के बाद अब यह भी सुनिश्चित किया जायेगा कि किसी भी श्रद्धालु से तय किराए से ज्यादा किराया ना लिया जाये। इसके लिए नाव के किराए की नयी सूची तैयार की जा रही है। उन्होंने बताया कि सभी घाटों और पार्किंग स्थल में इस सूची को चस्पा किया जायेगा। प्रमुख स्नान पर्व पर भी नावें संचालित की जा सकेंगी। हालांकि प्रमुख स्नान पर्व पर मोटर बोट पर रोक रहेगी।

गैंगस्टर मामले में विधायक अब्बास अंसारी को जमानत देने से इनकार

प्रयागराज : इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने चित्रकूट जिले के थाना कोतवाली कर्वी में मऊ से विधायक अब्बास अंसारी के खिलाफ गैंगस्टर अधिनियम के तहत दर्ज एक मामले में जमानत देने से बृहस्पतिवार को इनकार कर दिया। न्यायमूर्ति समित गोपाल ने जमानत अर्जी खारिज करते हुए बुधवार को कहा कि इस मामले के तथ्यों और अन्य संबंधित तथ्यों जैसे मौजूदा मामले में जांच अब भी लंबित है और इसी मामले में याचिकाकर्ता छह सितंबर, 2024 से जेल में निरुद्ध है, पर विचार करने के बाद हस्तक्षेप का कोई आधार नहीं बनता। इस मामले में अब्बास अंसारी, नवनीत सचान, नियाज अंसारी, फराज खान और शाहबाज आलम खान के खिलाफ 31 अगस्त, 2024 को थाना कोतवाली कर्वी, जिला चित्रकूट में गैंगस्टर कानून और असामाजिक गतिविधियां (निषेध) अधिनियम, 1986 के तहत मामला दर्ज किया गया था।

भारत का इलेक्ट्रिक वाहन बाजार 2030 तक 20 लाख करोड़ रुपये का होगा : गडकरी

नयी दिल्ली : केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारतीय इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बाजार का आकार 2030 तक 20 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने की संभावना है और इससे समूचे ईवी परिवेश में करीब पांच करोड़ नौकरियों का सृजन होगा। गडकरी ने ई-वाहन उद्योग की स्थिरता पर 8वें 'कैटलिस्ट कॉन्फ्रेंस- ईवी एक्सपो-2024' को संबोधित करते हुए कहा कि अनुमान है कि 2030 तक इलेक्ट्रिक वाहन के वित्तपोषण यानी फाइनेंस के बाजार का आकार करीब चार लाख करोड़ रुपये होगा। उन्होंने कहा, 'भारतीय इलेक्ट्रिक वाहन बाजार की क्षमता 2030 तक 20 लाख करोड़ रुपये होगी जिससे संपूर्ण ईवी परिवेश में पांच करोड़ नौकरियों का सृजन होगा।' सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री ने कहा कि भारत में 40 प्रतिशत वायु प्रदूषण के लिए परिवहन क्षेत्र जिम्मेदार है। गडकरी ने कहा, 'हम 22 लाख करोड़ रुपये मूल्य के जीवाश्म ईंधन का आयात करते हैं, जो एक बड़ी आर्थिक चुनौती है। जीवाश्म ईंधन का यह आयात हमारे देश में कई समस्याएं उत्पन्न कर रहा है।' मंत्री ने कहा कि सरकार हरित ऊर्जा पर ध्यान केंद्रित कर रही है क्योंकि भारत की 44 प्रतिशत बिजली की खपत सौर ऊर्जा पर आधारित है। उन्होंने कहा, 'हम जल विद्युत उसके बाद सौर ऊर्जा, हरित ऊर्जा खासकर 'बायोमास' के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहे हैं। अब सौर ऊर्जा हम सभी के लिए महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक है।' गडकरी ने देश में इलेक्ट्रिक बसों की समस्या पर भी प्रकाश

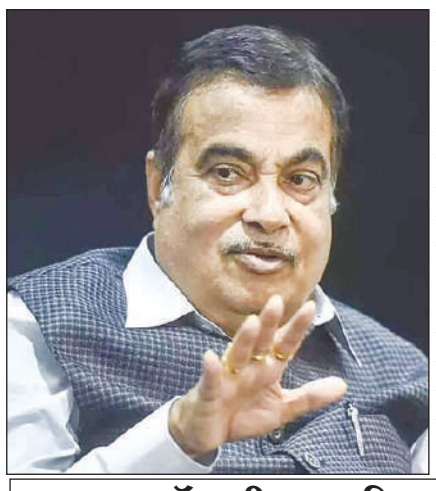

डाला। मंत्री ने कहा, 'हमारे देश को एक लाख इलेक्ट्रिक बसों की जरूरत है लेकिन अभी हमारे पास केवल 50 हजार बस हैं। मैं आप सभी से आग्रह करता हूं कि यही आपके लिए अपने कारखाने का विस्तार करने का सही समय है।' गडकरी ने इलेक्ट्रिक वाहन विनिर्माताओं से गुणवत्ता के साथ समझौता न करने की बात भी कही। उन्होंने कहा कि 2014 में जब उन्होंने परिवहन मंत्री का कार्यभार संभाला था तब मोटर वाहन उद्योग का आकार सात लाख करोड़ रुपये था। मंत्री ने कहा, 'आज यह (मोटर वाहन उद्योग का आकार) 22 लाख करोड़ रुपये है। हम दुनिया में तीसरे स्थान पर हैं। हमने हाल ही में जापान को पीछे छोड़ा है।' इस सूची में 78 लाख करोड़ रुपये के मोटर वाहन उद्योग के साथ अमेरिका पहले स्थान पर और चीन 47 लाख करोड़ रुपये के साथ दूसरे स्थान पर है।

एथनॉल-डीजल, हरित हाइड्रोजन उत्पादन में विविधीकरण का रास्ता तलाशे चीनी उद्योग : गडकरी

नयी दिल्ली : सड़क, परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बृहस्पतिवार को चीनी उद्योग से एथनॉल-डीजल मिश्रण और हरित हाइड्रोजन उत्पादन सहित विविधीकरण के लिए कई रास्ते तलाशने का आह्वान किया। भारतीय चीनी और जैव-ऊर्जा निर्माता संघ (इस्मा) की वार्षिक आम बैठक को वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए मंत्री ने निजी क्षेत्र की भागीदारी सहित एथनॉल और सीएनजी पंप स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। जीवाश्म ईंधन के विकल्प के रूप में फ्लेक्स इंजन, एथनॉल आधारित इंजन और बायो-सीएनजी की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि टाटा, सुजुकी और टोयोटा सहित पांच वाहन निर्माता बाजार में फ्लेक्स इंजन ईंधन कारें पेश करने के लिए तैयार हैं और उन्होंने ट्रैक्टर निर्माताओं से वैकल्पिक ईंधन पर ट्रैक्टर बनाना शुरू करने का आग्रह किया।

एनटीपीसी बिहार में परमाणु ऊर्जा संयंत्र लगाने पर कर रही विचार

पटना : सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी एनटीपीसी के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक गुरदीप सिंह ने बृहस्पतिवार को कहा कि कंपनी बिहार में एक परमाणु परियोजना स्थापित करने की योजना बना रही है जिससे कंपनी की कुल उत्पादन क्षमता में हरित ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ेगी। देश की प्रमुख बिजली उत्पादक कंपनी एनटीपीसी ने अपनी परमाणु योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए राज्य सरकार से एक उपयुक्त स्थान पर जमीन देने का आग्रह किया है। सिंह ने यहां वैश्विक निवेशक सम्मेलन 'बिहार बिजनेस कनेक्ट 2024' के एक सत्र को संबोधित करते हुए कहा, 'ऊर्जा क्षेत्र के भविष्य को देखते हुए परमाणु ऊर्जा 20-30 साल बाद संभवत: बिजली क्षेत्र के लिए काफी महत्वपूर्ण होगा। इसको देखते हुए एनटीपीसी अब परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में प्रवेश कर रही है।' उन्होंने इस बारे में विस्तार से कोई जानकारी नहीं दी। उन्होंने केवल इतना कहा कि एनटीपीसी बिहार में परमाणु परियोजना स्थापित करने की योजना को आगे बढ़ाने से पहले एक अध्ययन करेगी। उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार ने 11 सितंबर को भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम लि. (एनपीसीआईएल) और एनटीपीसी की संयुक्त उद्यम कंपनी अणुशक्ति विद्युत निगम लि. को परमाणु ऊर्जा अधिनियम के प्रावधानों के तहत देश में परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने, उसके स्वामित्व और संचालन के लिए अपनी मंजूरी दी थी। इस संयुक्त उद्यम में एनपीसीआईएल की 51 प्रतिशत और एनटीपीसी की 49 प्रतिशत हिस्सेदारी है। सिंह ने कहा कि एनटीपीसी राज्य में सौर संयंत्रों, पंप स्टोरेज और बैटरी ऊर्जा भंडारण परियोजनाओं के क्षेत्र में भी काम करने को इच्छुक है। उन्होंने कहा, 'हम उम्मीद करते हैं कि वर्ष 2032 तक अपनी 60,000 मेगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का बड़ा हिस्सा बिहार में होगा। उन्होंने कहा कि बिहार में एनटीपीसी की स्थापित क्षमता 8,850 मेगावाट है और लगभग 80,000 करोड़ रुपये का निवेश हुआ है। सिंह ने कहा कि एनटीपीसी बिहार में लगभग 3000-4000 मेगावाट घंटे (एमडब्ल्यूएच) की बैटरी भंडारण समाधान स्थापित करने की संभावना तलाशेगी। उन्होंने यह भी कहा कि नबीनगर पावर जनरेटिंग कंपनी लिमिटेड (एनपीजी-सीएल) ने बिहार में 2,400 मेगावाट की बिजली परियोजना पर काम करना शुरू कर दिया है।

रुपया पहली बार 85 प्रति डॉलर के पार, 19 पैसे टूटकर सर्वकालिक निचले स्तर पर बंद हुआ

मुंबई : अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया बृहस्पतिवार को 19 पैसे लुढ़ककर 85 प्रति डॉलर के स्तर को लांघ गया और कारोबार के अंत में 85.13 प्रति डॉलर के सर्वकालिक निचले स्तर पर बंद हुआ। अमेरिकी फेडरल रिजर्व के आक्रामक रुख के कारण डॉलर में व्यापक तेजी आने से रुपये में यह गिरावट देखी गई। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि रुपया पहली बार 85 के स्तर को लांघ कर अपने नए सर्वकालिक निचले स्तर पर पहुंच गया। अमेरिकी फेडरल रिजर्व के वर्ष 2025 के लिए अपने अनुमानों को समायोजित करने से भारतीय रुपये सहित उभरते बाजार की मुद्राओं पर दबाव पड़ा।

न्यूज अपडेट

सोना 800 रुपये टूटा, चांदी 2,000 रुपये लुढ़की

नयी दिल्ली : कमजोर वैश्विक रुख के बीच आभूषण विक्रेताओं की सुस्त मांग के कारण बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में सोने और चांदी की कीमतों में भारी गिरावट आई। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने यह जानकारी दी। 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाले सोने की कीमत 800 रुपये टूटकर 78,300 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गई। बुधवार के पिछले कारोबारी सत्र में यह 79,100 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था।

एनएचपीसी बिहार में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में 5,500 करोड़ रुपये का निवेश करेगी

पटना : एनएचपीसी के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक राज कुमार चौधरी ने बृहस्पतिवार को कहा कि कंपनी की बिहार में नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में 5,500 करोड़ रुपये का निवेश करने की योजना है। उन्होंने यहां वैश्विक निवेशक सम्मेलन 'बिहार बिजनेस कनेक्ट' के एक सत्र को संबोधित करते हुए यह भी कहा कि भविष्य की परियोजना की योजना बनाने से लेकर कार्यान्वयन तक राज्य सरकार का सहयोग और समर्थन जरूरी होगा। चौधरी ने कहा कि बिहार ने ऊर्जा क्षेत्र में प्रगति की है और एनएचपीसी राज्य में भारी निवेश करने को लेकर गंभीर है। उन्होंने कहा, 'नवीकरणीय ऊर्जा में, एनएचपीसी ने राज्य सरकार को पत्र लिखकर 5,500 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश की इच्छा जतायी है। हम सौर ऊर्जा, फ्लोटिंग सोलर (जलाशयों में लगने वाले सौर संयंत्र) और बैटरी भंडारण आदि परियोजनाओं के लिए राज्य सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर भी हस्ताक्षर करेंगे।' चौधरी ने कहा कि राज्य में कुल स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता लगभग 9,500 मेगावाट है, जिसमें से 9,000 मेगावाट तापीय है। इसको देखते हुए बैटरी भंडारण के साथ नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश की काफी गुंजाइश है। उन्होंने कहा कि एनएचपीसी पहले से ही मध्य प्रदेश, केरल और ओडिशा में 18 मेगावाट, 50 मेगावाट और 300 मेगावाट की जलाशयों में सौर परियोजनाएं विकसित कर रही है। उन्होंने कहा कि बिहार में भी इसी तरह के अवसर उपलब्ध हैं जहां उनकी कंपनी निवेश करना चाहेगी।

अदाणी समूह ने 'हम करके दिखाते हैं' अभियान का नया संस्करण किया पेश

नयी दिल्ली : उद्योगपति गौतम अदाणी के समूह ने बृहस्पतिवार को अपने अभियान 'हम करके दिखाते हैं' का नया संस्करण पेश किया। इस अभियान को अदाणी समूह पर अमेरिकी अधिकारियों द्वारा लगाए गए रिश्वत के आरोपों तथा कठोर अभियोग से उबरने की कोशिश माना जा रहा है। समूह ने बयान में कहा, 'अपने पिछले संस्करण की सफलता को आगे बढ़ाते हुए यह मल्टी-मीडिया, मल्टी-प्लेटफॉर्म अभियान सांख्यिकी तथा आंकड़ों पर जोर देने की पारंपरिक कॉर्पोरेट रणनीति से आगे बढ़कर मानव-हित की प्रेरक कहानियों पर ध्यान केंद्रित करता है। ये कहानियां लाखों भारतीयों के जीवन पर अदाणी की बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के व्यापक व सकारात्मक प्रभाव को बयां करती हैं।' अदाणी एंटरप्राइजेज लिमिटेड के निदेशक प्रणव अदाणी ने कहा, 'यह अभियान वास्तव में अदाणी समूह के सार को दर्शाता है। हमें हमारे आकार, गति तथा पैमाने के लिए जाना जाता है। इस पहल की खासियत यह है कि यह दिलों को छूने की शक्ति रखती है। यह सार्थक बदलाव के उत्प्रेरक के रूप में बुनियादी ढांचे का इस्तेमाल करने की हमारी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है। हमारे व्यवसायों के पीछे मानवीय कहानियों पर जोर देकर, हमारा मकसद गहरे भावनात्मक संबंध स्थापित करना और लाखों भारतीयों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए हमारे समर्पण को रेखांकित करना है।' गौरतलब है कि अमेरिका के न्याय मंत्रालय और अमेरिकी प्रतिभूति एवं विनिमय आयोग (एसईसी) ने 20 नवंबर 2024 को न्यूयॉर्क के पूर्वी जिले में अमेरिकी जिला न्यायालय में समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी, उनके भतीजे सागर अदाणी और प्रमुख कार्यकारी विनीत जैन के खिलाफ क्रमशः अभियोग तथा एक दीवानी शिकायत दाखिल की थी।

फेडरल रिजर्व के संकेतों से बिकवाली का जोर, सेंसेक्स 80,000 अंक से नीचे फिसला

मुंबई : अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व की तरफ से अगले साल ब्याज दरों में कम कटौती के संकेत मिलने के बाद बृहस्पतिवार को दुनियाभर के शेयर बाजारों में जबर्दस्त बिकवाली देखी गई। इसके चलते घरेलू शेयर बाजार का मानक सूचकांक सेंसेक्स करीब 965 अंक टूटकर 80,000 अंक के स्तर से नीचे आ गया। विश्-लेषकों ने कहा कि विदेशी कोषों की निकासी जारी रहने के बीच टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद, बैंकिंग और सूचना प्रौद्योगिकी शेयरों में भारी गिरावट ने भी निवेशकों की धारणा पर प्रतिकूल असर डाला। बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित सेंसेक्स 964.15 अंक यानी 1.20 प्रतिशत फिसलकर 79,218.05 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 1,162.12 अंक तक टूटकर 79,020.08 अंक पर आ गया था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का सूचकांक निफ्टी भी 247.15 अंक यानी 1.02 प्रतिशत गिरकर 24,000 अंक से नीचे 23,951.70 अंक पर आ गया। घरेलू शेयर

बाजार लगातार चौथे दिन गिरावट के साथ बंद हुए। गिरावट के इन चार दिनों में सेंसेक्स 2,915.07 अंक यानी 3.54 प्रतिशत नीचे आ चुका है जबकि निफ्टी में कुल 816.6 अंक यानी 3.29 प्रतिशत का नुकसान रहा है। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, 'ब्याज दरों पर अमेरिकी फेडरल रिजर्व के आक्रामक रुख अपनाने से वैश्विक स्तर पर हुई बिकवाली के बाद भारतीय बाजार में व्यापक गिरावट देखी गई। ब्याज दरों को लेकर संवेदनशील बैंकिंग एवं रियल एस्टेट जैसे क्षेत्रों पर इसका खासा असर पड़ा।' नायर ने कहा, 'हालांकि, ब्याज दर स्थिर रखने के बैंक ऑफ जापान के फैसले ने अर्थशास्त्रियों को चौंका दिया, जिससे बिकवाली का दबाव कम करने में थोड़ी मदद मिली। इसके बावजूद विदेशी संस्थागत निवेशकों की बिकवाली के बीच निवेशक सतर्क बने रहे।' सेंसेक्स की कंपनियों में से इन्फोसिस, बजाज फिनसर्व, जेएसडब्ल्यू स्टील, बजाज फाइनेंस, एशियन पेंट्स, आईसीआईसीआई बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, टाटा मोटर्स और महिंद्रा एंड महिंद्रा के शेयर नुकसान के साथ बंद हुए। इसके उलट, सन फार्मा, पावर ग्रिड और हिंदुस्तान यूनिलीवर के शेयरों में तेजी दर्ज की गई। मेहता इक्विटीज लिमिटेड में वरिष्ठ उपाध्यक्ष (शोध) प्रशांत तापसे ने कहा, 'फेडरल रिजर्व के कड़े रुख के बीच नकारात्मक वैश्विक संकेतों से बाजार लुढ़क गए और अपने मनोवैज्ञानिक स्तरों से नीचे आ गए। अमेरिकी बॉन्ड का प्रतिफल बढ़ने से रुपये पर भी दबाव पड़ा और यह नए निचले स्तर पर खिसक गया।' अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले रुपया पहली बार 85 प्रति डॉलर के स्तर से नीचे बंद हुआ है। व्यापक बाजार में बीएसई मिडकैप सूचकांक में 0.20 प्रतिशत की गिरावट देखी गई जबकि स्मालकैप 0.28 प्रतिशत नीचे आया।

न्यूज इन ब्रीफ

'पुष्पा 2' ने बॉक्स ऑफिस पर 1,500 करोड़ रुपये कमाई का आंकड़ा पार किया: निर्माता

नयी दिल्ली : अल्लू अर्जुन की फिल्म 'पुष्पा 2: द रूल' ने दुनियाभर में बॉक्स ऑफिस पर 1,500 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई कर ली है और यह इस आंकड़े तक सबसे जल्दी पहुंचने वाली भारतीय फिल्म बन गई है। निर्माताओं ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। सुपर हिट तेलुगु फिल्म 'पुष्पा: द राइज' 2021 में आई थी और इसका सीक्वल 'पुष्पा 2' पांच दिसंबर को रिलीज हुई थी। सुकुमार द्वारा निर्देशित इस फिल्म में रश्मिका मंदाना और फहाद फासिल भी हैं तथा इसे हिंदी, तमिल, कन्नड़, बांग्ला एवं मलयालम भाषाओं में भी रिलीज किया गया है।

दिल्ली सरकार ने शहर में पटाखों पर 'पूर्ण प्रतिबंध' लगाया

नयी दिल्ली : दिल्ली सरकार ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रीय राजधानी में पटाखों के निर्माण, इस्तेमाल और बिक्री पर ''पूर्ण प्रतिबंध'' लगा दिया। एक आधिकारिक आदेश में यह जानकारी दी गई। दिल्ली सरकार के प्रधान सचिव (पर्यावरण) ए. के. सिंह ने पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के तहत पटाखों यह प्रतिबंध लगाया है। आदेश में कहा गया कि दिल्ली में सभी प्रकार के पटाखों के विनिर्माण, भंडारण, बिक्री तथा इन्हें जलाने और ऑनलाइन विपणन मंचों के माध्यम से इनकी उपलब्धता पर प्रतिबंध शामिल है।

नौसेना का नया युद्धपोत आईएनएस तुशील रूस से भारत के लिए रवाना

नयी दिल्ली : भारतीय नौसेना का रूस निर्मित युद्धपोत आईएनएस तुशील रूस के कलिनिनग्राद से भारत के लिए रवाना हो गया है। इस युद्धपोत को नौ दिसंबर को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की उपस्थिति में कलिनिनग्राद में भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था। रूसी तथा भारतीय अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों एवं युद्धपोत निर्माण की सर्वोत्तम पद्धतियों के प्रभावशाली मिश्रण वाले इस पोत की लंबाई 125 मीटर और वजन 3900 टन है। इस युद्धपोत से हिंद महासागर में भारतीय नौसेना की परिचालन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है। हिंद महासागर में पिछले कुछ वर्षों के दौरान चीन की पीएलए नौसेना की सक्रियता बढ़ी है। भारतीय नौसेना ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारतीय नौसेना का नवीनतम बहु-भूमिका वाला आईएनएस तुशील 17 दिसंबर को रूस के कलिनिनग्राद से भारत के लिए रवाना हुआ और यह इसकी पहली परिचालन तैनाती की शुरुआत है। यह पोत बाल्टिक सागर, उत्तरी सागर, अटलांटिक महासागर तथा अंत में हिंद महासागर से होकर गुजरेगा और रास्ते में कई मित्र देशों के बंदरगाहों पर रुकेगा।

केंद्र ने राज्यों से नल जल कनेक्शन में तेजी लाने को कहा

नयी दिल्ली : केंद्र देश के उन राज्यों के साथ बातचीत कर रहा है, जहां अब तक ग्रामीण घरों में 100 प्रतिशत नल जल कनेक्शन नहीं लग पाया है । जल शक्ति मंत्री सी आर पाटिल ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। पाटिल ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में स्वीकार किया कि ग्रामीण भारत में नल के पानी की पहुंच सुनिश्चित करने की 2024 की समय सीमा बीत चुकी है। उन्होंने कहा, अब भी चार करोड़ घरों में नल के पानी का कनेक्शन नहीं है। मंत्रालय संबंधित राज्यों के साथ चर्चा कर रहा है और उनसे इस प्रक्रिया में तेजी लाने का आग्रह किया है। आधिकारिक आंकड़ों से पता चलता है कि अब तक 79 प्रतिशत (15,37,22,950) ग्रामीण परिवारों को नल के पानी का कनेक्शन उपलब्ध कराया जा चुका है। कवरेज के लिए 19 करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों की पहचान की गई है। आंकड़ों के अनुसार राज्यों में पश्चिम बंगाल में सबसे कम कवरेज 53.9 प्रतिशत है, जिसके बाद केरल में 54.13 प्रतिशत, झारखंड में 54.62 प्रतिशत और राजस्थान में 54.95 प्रतिशत है। जल जीवन मिशन के अंतर्गत ग्यारह राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने नल जल कनेक्शन का 100 प्रतिशत कवरेज हासिल कर लिया है।

भारत को अल्पसंख्यकों के बारे में दी जाती है सलाह, दूसरे देशों में जो हो रहा हम देख रहे हैं: भागवत

पुणे : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत को अक्सर अपने अल्पसंख्यकों के मुद्दों का समाधान करने की सलाह दी जाती है, लेकिन अब हम देख रहे हैं कि दूसरे देशों में अल्पसंख्यक समुदाय किस स्थिति का सामना कर रहे हैं। भागवत ने यहां 'हिंदू सेवा महोत्सव' की शुरुआत के अवसर पर यह भी कहा कि विश्व शांति की बात करके आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा, ''विश्व शांति के बारे में बड़ी-बड़ी बातें की जा रही हैं। हमें (भारत) भी विश्व शांति के बारे में सलाह दी जा

रही है, लेकिन साथ ही, युद्ध भी नहीं रुक रहे। हमें अक्सर अपने देश में अल्पसंख्यकों के बारे में चिंता करने के लिए कहा जाता है जबकि हम देख रहे हैं बाहर अल्पसंख्यक किस तरह की स्थिति का सामना कर रहे हैं।'' हालांकि आरएसएस प्रमुख ने पड़ोसी देश बांग्लादेश में हिंदू समुदाय के खिलाफ हिंसा का कोई उल्लेख नहीं किया, लेकिन आरएसएस शेख हसीना के सत्ता से हटने के बाद हाल के हफ्तों में बांग्लादेश में हिंदुओं की स्थिति के बारे में चिंता व्यक्त कर चुका है। भागवत ने कहा, ''मानव धर्म सभी धर्मों का शाश्वत धर्म है, जो विश्व धर्म है। इसे हिंदू धर्म भी कहा जाता है। हालांकि, दुनिया इस धर्म को भूल गई है। उनका धर्म एक ही है लेकिन वे भूल गए, और उसके कारण, आज हम पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं समेत विभिन्न प्रकार की समस्याएं देख रहे हैं।'' उन्होंने कहा कि हमारे देश के बाहर बहुत से लोग सोचते हैं कि भारत के भूमिका निभाए बिना विश्व शांति संभव नहीं है। आरएसएस प्रमुख भागवत ने कहा, ''उनका मानना है कि यह केवल भारत और इसकी समृद्ध परंपरा ही है जो ऐसा कर सकती है, जिस तरह से 3,000 वर्षों से हुआ है।

भागवत ने 'खुद के बारे में सोचने' के खिलाफ चेतावनी दी, कहा 'यह जनसंख्या में गिरावट का कारण'

पुणे : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत ने बृहस्पतिवार को लोगों को 'सिर्फ खुद के बारे में सोचने' के खिलाफ चेतावनी देते हुए कहा कि इससे जनसंख्या में गिरावट आ रही है। वे यहां 'हिंदू सेवा महोत्सव' के उद्घाटन को संबोधित कर रहे थे। आरएसएस प्रमुख ने कहा, सिर्फ खुद के बारे में सोचने वाले लोग परिवार नहीं चाहते। वे सोचते हैं शादी क्यों करनी चाहिए, उन्हें किसी का गुलाम क्यों बनना चाहिए। हां, करियर भी महत्वपूर्ण है लेकिन किसी को सिर्फ और सिर्फ खुद के बारे में नहीं सोचना चाहिए क्योंकि व्यक्ति समाज, पर्यावरण, ईश्वर और देश के कारण है और हम उनके बहुत आभारी हैं।

बांग्लादेश में हिंदुओं, अल्पसंख्यकों की स्थिति पर गहरी नजर रख रहा है भारत

नयी दिल्ली : भारत ने बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा की घटनाओं को लेकर चिंता जताते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि उनके जीवन और स्वतंत्रता की रक्षा करने की प्राथमिक जिम्मेदारी ढाका में अंतरिम सरकार की है। राज्यसभा में विदेश राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह का यह जवाब, विदेश सचिव विक्रम मिस्री के ढाका की यात्रा करने और बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के शीर्ष राजनीतिक अधिकारियों को इस मामले पर नयी दिल्ली की चिंताओं से अवगत कराने के कुछ दिनों बाद आया है। उन्होंने कहा कि भारत बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की स्थिति पर करीबी नजर रख रहा है। उन्होंने कहा कि उस देश की सरकार ने अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा के संबंध में कथित तौर पर 70 लोगों को गिरफ्तार किया है और 88 मामले दर्ज किए हैं। सिंह ने कहा, ''बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य सभी अल्पसंख्यक समुदायों की सुरक्षा सुनिश्चित करने को लेकर भारत की चिंताओं को बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के अधिकारियों के समक्ष विभिन्न अवसरों पर, उच्चतम स्तर पर भी, उठाया गया और दोहराया गया है।'' मंत्री ने बांग्लादेश की स्थिति पर अलग-अलग सवालों का जवाब देते हुए यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा, ''ढाका में भारत का उच्चायोग अल्पसंख्यकों के कल्याण के संबंध में बांग्लादेश के अधिकारियों के साथ नियमित संपर्क में है।'' उन्होंने कहा, ''अल्पसंख्यकों सहित बांग्लादेश के सभी नागरिकों के जीवन और स्वतंत्रता की सुरक्षा की प्राथमिक जिम्मेदारी बांग्लादेश सरकार की है।'' सिंह ने बांग्लादेश में हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों तथा उनके घरों, व्यवसायों और मंदिरों पर हमलों के उदाहरणों का भी हवाला दिया।

भारत में महिला-केंद्रित कृषि समाधान अपनाने के लिए अनुकूल माहौल: ईशा अंबानी

नयी दिल्ली : रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के निदेशक मंडल की सदस्य ईशा अंबानी पीरामल ने कृषि मूल्य शृंखला में लैंगिक-समावेशी नजरिया अपनाने का आह्वान करते हुए कहा है कि महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण से महिलाओं की अगुवाई वाले कृषि प्रौद्योगिकी समाधानों को अपनाने का अनुकूल माहौल तैयार है। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी की पुत्री ईशा ने बृहस्पतिवार को प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा है कि कृषि प्रौद्योगिकी में लैंगिक समावेशन को पारंपरिक रूप से सामाजिक नजर से देखा जाता रहा है। उन्होंने विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की 'महिला किसानों के लिए कृषि प्रौद्योगिकी: समावेशी विकास के लिए एक व्यावसायिक मामला' शीर्षक वाली अंतर्दृष्टि रिपोर्ट की प्रस्तावना में लिखा, ''शुक्र है कि हाल के वर्षों में निजी क्षेत्र ने यह बात स्वीकार की है कि महिला किसानों को प्राथमिकता देना आर्थिक और रणनीतिक दोनों दृष्टि से फायदेमंद होगा।'' उन्होंने कहा कि लैंगिक-समावेशी समाधान से कृषि मूल्य श्रृंखलाओं को कई महत्वपूर्ण तरह के फायदे हो सकते हैं, जिससे उत्पादकता तथा खाद्य सुरक्षा बढ़ेगी। ईशा के अगले महीने स्विट्जरलैंड के दावोस में विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की वार्षिक बैठक में हिस्सा लेने की उम्मीद है।

महिलाओं की भलाई के लिए कानून में सख्त प्रावधान, विवाह कोई व्यवसाय नहीं: उच्चतम न्यायालय

नयी दिल्ली : उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को कहा कि कानून के सख्त प्रावधान महिलाओं की भलाई के लिए हैं न कि उनके पतियों को 'दंडित करने, धमकाने, उन पर हावी होने या उनसे जबरन वसूली करने' के लिए। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति पंकज मिथल ने कहा कि हिंदू विवाह एक पवित्र प्रथा है, जो परिवार की नींव है, न कि कोई व्यावसायिक समझौता। पीठ ने कहा कि विशेष रूप से वैवाहिक विवादों से संबंधित अधिकांश शिकायतों में दुष्कर्म, आपराधिक धमकी और विवाहित महिला से क्रूरता करने सहित भारतीय दंड संहिता की कई धाराओं

को लगाने के लिए शीर्ष अदालत ने कई मौकों पर फटकार लगायी है। पीठ ने कहा, महिलाओं को इस बात को लेकर सावधान रहने की जरूरत है कि उनके हाथों में कानून के ये सख्त प्रावधान उनकी भलाई के लिए हैं, न कि उनके पतियों को दंडित करने, धमकाने, उन पर हावी होने या उनसे जबरन वसूली करने के साधन के रूप में हैं। पीठ ने यह टिप्पणी अलग-अलग रह रहे एक दंपति के विवाह को समाप्त करते हुए कहा कि यह रिश्ता पूरी तरह से टूट चुका है। पीठ ने कहा, आपराधिक कानून के प्रावधान महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तीकरण के लिए हैं लेकिन कभी-कभी कुछ महिलाएं इनका इस्तेमाल ऐसे उद्देश्यों के लिए करती हैं, जिनके लिए वे कभी नहीं होते। इस मामले में पति को एक महीने के भीतर अलग रह रही पत्नी को उसके सभी दावों के पूर्ण और अंतिम निपटान के रूप में स्थायी गुजारा भत्ता के रूप में 12 करोड़ रुपये का भुगतान करने का आदेश दिया गया था।

आतंकवाद मुक्त जम्मू कश्मीर का लक्ष्य जल्द ही हासिल किया जाएगा : गृह मंत्री अमित शाह

नयी दिल्ली : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बृहस्पतिवार को विश्वास जताया कि ''आतंकवाद मुक्त जम्मू-कश्मीर'' हासिल करने का लक्ष्य जल्द ही साकार होगा। उन्होंने सुरक्षा एजेंसियों को क्षेत्र में आतंकवाद पर पूरी तरह लगाम लगाने का निर्देश दिया। केंद्र शासित प्रदेश में सुरक्षा स्थिति की समीक्षा करने के लिए गृह मंत्रालय में एक उच्चस्तरीय बैठक के दौरान शाह ने कहा कि आतंकवाद के प्रति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ''कतई बर्दाश्त नहीं'' करने की नीति के अनुरूप ''हम जल्द से जल्द आतंकवाद मुक्त जम्मू-कश्मीर के लक्ष्य को हासिल करेंगे।'' मंत्रालय के एक आधिकारिक बयान में कहा

गया कि शाह ने आश्वासन दिया कि इस अभियान का समर्थन करने के लिए सभी आवश्यक संसाधन आवंटित किए जाएंगे। गृह मंत्री ने केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला और इस बात पर जोर दिया कि सभी सुरक्षाबलों के संयुक्त प्रयासों से जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को खत्म करने का दृढ़ संकल्प लिया गया है। उन्होंने विधानसभा और लोकसभा दोनों चुनावों में स्थानीय लोगों की उल्लेखनीय भागीदारी को लोकतंत्र में उनके विश्वास का प्रमाण बताया। हाल में हुए जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनाव के बाद केंद्र शासित प्रदेश में सुरक्षा स्थिति की समीक्षा के लिए शाह की यह पहली बैठक थी। सितंबर-अक्टूबर में हुए विधानसभा चुनाव में उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व में नेशनल कॉन्फ्रेंस की सरकार बनी है। बैठक में जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के अलावा सेना, अर्धसैनिक बलों, जम्मू-कश्मीर प्रशासन, खुफिया एजेंसियों और गृह मंत्रालय के शीर्ष अधिकारी शामिल हुए।

अजित पवार एक दिन मुख्यमंत्री बनेंगे : फडणवीस

नागपुर : महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह और उपमुख्यमंत्री अजित पवार तथा एकनाथ शिंदे 24 घंटे सातों दिन पालियों में काम करेंगे। देर रात तक काम करने के लिए पहचाने जाने वाले शिंदे का जिक्र करते हुए फडणवीस ने कहा, ''अजित पवार सुबह काम करेंगे, वे सुबह जल्दी उठ जाते हैं। मैं दोपहर 12 बजे से आधी रात तक काम पर रहता हूं, जबकि रात भर... आप सभी जानते हैं कि कौन (काम करता) है।'' वह नागपुर में मौजूदा शीतकालीन सत्र के दौरान राज्य विधानमंडल के दोनों सदनों में राज्यपाल के संयुक्त अभिभाषण के लिए धन्यवाद प्रस्ताव पर विधानसभा में हुई बहस का जवाब दे रहे थे। अजित पवार का जिक्र करते हुए फडणवीस ने कहा, ''आपको 'स्थायी उपमुख्यमंत्री' कहा जाता है... लेकिन मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं... आप एक दिन मुख्यमंत्री बनेंगे।'' अजित पवार ने पांच दिसंबर को छठी बार महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली। लोकसभा चुनाव में अजित पवार नीत राकांपा को केवल एक सीट मिली थी। इस करारी हार के बाद अजित पवार की पार्टी ने हाल ही में हुए राज्य विधानसभा चुनावों में जबरदस्त वापसी की तथा 57 निर्वाचन क्षेत्रों में से 41 सीट पर जी दर्ज की।

राष्ट्र निर्माण में आरएसएस के योगदान को कोई नजरअंदाज नहीं कर सकता: एकनाथ शिंदे

नागपुर : महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने बृहस्पतिवार सुबह यहां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के संस्थापक डॉ के बी हेडगेवार के स्मारक पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और कहा कि राष्ट्र निर्माण में कोई भी संघ के योगदान को नजरअंदाज नहीं कर सकता। शिंदे ने यहां रेशमीबाग स्थित डॉ. हेडगेवार स्मृति मंदिर का दौरा करने के बाद संवाददाताओं से कहा कि संघ परिवार एवं शिवसेना की विचारधारा समान है। इस मौके पर मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, सत्तारूढ़ महायुति के घटक दलों-भाजपा एवं शिवसेना के अन्य नेताओं ने भी डॉ हेडगेवार को श्रद्धांजलि अर्पित की। हालांकि, इस मौके पर महायुति के अन्य घटक राकांपा के नेता एवं उपमुख्यमंत्री अजित पवार मौजूद नहीं थे लेकिन उनकी पार्टी के दो विधायक स्मारक पहुंचे। महाराष्ट्र विधानमंडल का शीतकालीन सत्र इस समय नागपुर में हो रहा है। शिंदे ने कहा कि बतौर संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नि:स्वार्थ भाव से काम करता है। शिवसेना प्रमुख ने कहा कि वह पहले भी हेडगेवार स्मारक जा चुके हैं और उनका बचपन से ही संघ परिवार से संबंध रहा है। उन्होंने कहा, ''मैंने संघ की शाखा से शुरुआत की और फिर शिवसेना शाखा से। शिवसेना प्रमुख बालासाहेब ठाकरे की विचारधारा और आनंद दीघे साहब की शिक्षाओं से आगे बढ़ा। संघ परिवार और शिवसेना की विचारधारा एक जैसी है।

बकाया कर्ज से दोगुना से अधिक वसूलने के लिए राहत की मांग करूंगा: विजय माल्या

नयी दिल्ली : भगोड़े कारोबारी विजय माल्या ने कहा कि वह प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और बैंकों के उन पर बकाया कर्ज से दो गुना से अधिक कर्ज वसूलने के लिए राहत की मांग करेंगे। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के संसद में, कुर्क संपत्तियों से 14,130 करोड़ रुपये से अधिक की वसूली किए जाने की जानकारी देने के बाद माल्या ने यह टिप्पणी की है। माल्या ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, '' ऋण वसूली अधिकरण ने केएफए (किंगफिशर एयरलाइंस) का ऋण 1200 करोड़ रुपये ब्याज सहित 6203 करोड़ रुपये आंका है।'' उन्होंने लिखा, '' वित्त मंत्री ने संसद में घोषणा की कि ईडी के जरिये बैंकों ने मुझसे 6203 करोड़ रुपये के

ऋण के विरुद्ध 14,131.6 करोड़ रुपये वसूल लिए हैं और मैं अब भी एक आर्थिक अपराधी हूं।'' माल्या ने कहा, '' जब तक ईडी और बैंक कानूनी रूप से यह साबित नहीं कर देते कि उन्होंने दोगुना से अधिक कर्ज कैसे ले लिया, मैं राहत पाने का हकदार हूं और मैं इसके लिए प्रयास करूंगा।'' सीतारमण ने वर्ष 2024-25 के लिए अनुदानों की अनुपूरक मांगों पर मंगलवार को लोकसभा में चर्चा के दौरान कहा था कि भगोड़े विजय माल्या की 14,131.6 करोड़ रुपये की संपत्ति सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को वापस कर दी गई है। मार्च 2016 में ब्रिटेन भाग गए माल्या कई बैंकों द्वारा अब बंद हो चुकी किंगफिशर एयरलाइंस (केएफए) को दिए गए 9,000 करोड़ रुपये के ऋण की अदायगी में चूक के मामले में भारत में वांछित हैं। माल्या ने लिखा, '' केएफए ऋणों के गारंटर के रूप में मैंने अपनी देनदारियों के बारे में जो कुछ भी कहा है, वह कानूनी रूप से सत्यापन योग्य है। फिर भी मुझसे न्याय ऋण के अतिरिक्त 8000 करोड़ रुपये से अधिक की वसूली की गई है।''

न्यूज अपडेट

वक्फ समिति के समक्ष मुस्लिम धर्मगुरुओं के समूह ने किया विधेयक का समर्थन

नयी दिल्ली : शिक्षाविदों और मुस्लिम धर्मगुरुओं के एक समूह ने वक्फ (संशोधन) विधेयक पर विचार कर रही संसद की संयुक्त समिति की बैठक में बृहस्पतिवार को मसौदा कानून का समर्थन किया और उनमें से कुछ ने सुझाव दिया कि वक्फ संपत्तियों का उपयोग शैक्षणिक और स्वास्थ्य सुविधाएं खोलने के लिए भी किया जाना चाहिए। राजस्थान वक्फ बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष सैयद अबुबकर नकवी, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय (लखनऊ) के पूर्व कुलपति माहरुख मिर्जा और मजलिस-ए-उलेमा-ए-हिंद के मौलाना रजा हुसैन उन लोगों में शामिल थे जिन्होंने इस विधेयक का समर्थन किया। इन लोगों ने भारतीय जनता पार्टी के सांसद जगदंबिका पाल की अध्यक्षता वाली संयुक्त संसदीय समिति के समक्ष अपने विचार रखे। सूत्रों ने बताया कि नकवी ने विधेयक को प्रगतिशील बताया और कहा कि इससे देश के विकास को बढ़ावा मिलेगा तथा मौजूदा वक्फ कानून कमियों से भरा है। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित कानून में गरीब बच्चों और विधवाओं के लिए अच्छे प्रावधान हैं। सूत्रों ने कहा कि कुछ विपक्षी सांसदों ने विधेयक के समर्थन में समिति के सामने पेश हुए कुछ लोगों द्वारा दिए गए बयान पर सवाल उठाया। हुसैन ने कहा कि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए विधेयक एक अच्छा कदम है। सरकार ने वक्फ बोर्ड को नियंत्रित करने वाले कानून में संशोधन से संबंधित विधेयक गत आठ अगस्त को लोकसभा में पेश किया था जिसे सत्तापक्ष एवं विपक्ष के बीच तीखी नोकझोंक एवं चर्चा के बाद संयुक्त समिति को भेजने का फैसला हुआ था।

दहेज की मांग पूरी नहीं होने पर गर्भवती महिला को घर से निकाला

भदोही : उत्तर प्रदेश के भदोही शहर कोतवाली इलाके में दहेज की मांग पूरी नहीं करने पर एक गर्भवती महिला को ससुराल से निकालने का मामला सामने आया है। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि पीड़ित महिला की तहरीर पर पांच लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस अधीक्षक मीनाक्षी कात्यायन ने बताया कि आठ माह की गर्भवती महिला नाजिया अंसारी की शिकायत पर उसके पति वसीम अंसारी समेत पांच लोगों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 498ए, 323, 504, 506 और 3/4 (दहेज़ उत्पीड़न) का मुकदमा दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया की शहर कोतवाली इलाके के मर्यादपट्टी निवासी नाज़िया की शादी 21 अप्रैल 2024 को औराई थाना के जयरामपुर निवासी वसीम अंसारी से हुई थी। शादी के चार दिन बाद पति, सास, ननद और नन्दोई ने दहेज़ में एक लाख रुपये और एक मोटरसाइकिल की मांग को लेकर नाज़िया को शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करना शुरू कर दिया और सिर्फ दो महीने बाद 30 जून को गर्भवती हो चुकी नाज़िया को ससुराल से निकाल दिया गया। पुलिस अधीक्षक ने बताया सभी कोशिशों के बाद भी ससुराल वाले उसे रखने को तैयार नहीं हुए। इस पर महिला ने 10 दिसंबर को एक भावुक पत्र लिखकर इस थाना को भेजा जिसमें उसने ससुराल वालों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की गुहार लगाई। उन्होंने बताया इस संबंध में तहरीर के आधार पर नाजिया के पति समेत पांच लोगों के खिलाफ मंगलवार को मामला दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया।

सीडीएस जनरल रावत की मौत: समिति ने हेलीकॉप्टर दुर्घटना का कारण 'मानवीय चूक' बताया

नयी दिल्ली : देश के पहले प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल बिपिन रावत की मृत्यु के मामले में जांच के लिए गठित एक संसदीय समिति ने अपनी रिपोर्ट में आठ दिसंबर 2021 को हुई एमआई-17 वी5 हेलीकॉप्टर दुर्घटना के पीछे मानवीय चूक को वजह बताया है। जनरल रावत, उनकी पत्नी मधुलिका रावत और कई अन्य सशस्त्र बल कर्मियों की मृत्यु उस समय हो गई थी, जब उनका सैन्य हेलीकॉप्टर तमिलनाडु में कुन्नूर के निकट दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। संसद में मंगलवार को पेश की गई रिपोर्ट में रक्षा संबंधी स्थायी समिति ने 13वीं रक्षा योजना अवधि के दौरान हुई भारतीय वायुसेना के विमानों की दुर्घटनाओं की संख्या पर आंकड़े साझा किए। कुल 34 दुर्घटनाएं हुईं थीं, जिनमें 2021-22 में भारतीय वायुसेना के नौ विमानों के साथ दुर्घटनाएं हुईं और 2018-19 में 11 विमान दुर्घटनाएं शामिल हैं। रिपोर्ट में 'कारण' शीर्षक से एक स्तंभ है जिसमें दुर्घटना की वजह 'मानवीय चूक' को बताया गया है।

मोदी सरकार के तहत भारत रक्षा क्षेत्र में 'अभूतपूर्व' गति से आगे बढ़ रहा है : राजनाथ

नयी दिल्ली : रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत आधुनिक हथियारों और तकनीक के मामले में पीछे रह गया था, लेकिन मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद यह रक्षा क्षेत्र में ''अभूतपूर्व'' गति से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा है। सिंह ने एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आधुनिक युद्धकला तेजी से बदल रही है और राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए उच्चस्तरीय तकनीक अपनाये जाने की जरूरत है। रक्षा मंत्री ने वैज्ञानिकों और इंजीनियरों से बदलते समय के अनुरूप कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) और 'क्वांटम कंप्यूटिंग' जैसी महत्वपूर्ण

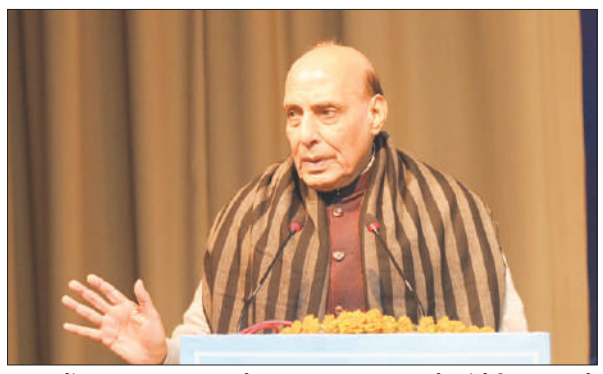

तकनीकों पर पकड़ मजबूत करने का आह्वान किया तथा उनसे भारत की विरासत को कभी न भूलने का आग्रह किया। सिंह आईआईटी दिल्ली में भारतीय राष्ट्रीय इंजीनियरिंग अकादमी के वार्षिक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। रक्षा मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि ये विशिष्ट प्रौद्योगिकियां आने वाले समय में लगभग हर क्षेत्र को बड़े पैमाने पर प्रभावित करेंगी। उन्होंने कहा, ''अभी हम शुरुआती चरण में हैं। हमारा लक्ष्य सबसे पहले इन तकनीकों पर पकड़ मजबूत करना होना चाहिए, ताकि भविष्य में इनका उपयोग लोगों के कल्याण के लिए किया जा सके और उनकी तत्काल बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।'' सिंह ने कहा कि दुनिया निरंतर विकसित हो रही है और रक्षा क्षेत्र इस परिवर्तन से बचा नहीं रह सकता। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, सिंह ने कहा कि पहले कुछ कारणों से भारत आधुनिक हथियारों और तकनीक के मामले में पीछे रह गया था, लेकिन जब से मोदी सरकार सत्ता में आई है, देश अभूतपूर्व गति से रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ा है।

पानबाजार (गुवाहाटी) के नए आरओबी के निर्माण में प्रगति जारी

मालीगांव, समाज्ञा : पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ट्रेन परिचालन में बुनियादी अवसंरचना और संरक्षा में सुधार के लिए अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करने की दिशा में प्रयासरत है। इसके तहत गुवाहाटी के पानबाजार स्थित पुराने रोड ओवर ब्रिज (आरओबी) को नए स्वरूप में बदलने का कार्य जारी है। नए चौड़े आरओबी का निर्माण कार्य पू. सी. रेलवे की कुशल टीम की देखरेख में तेजी से आगे बढ़ रहा है और जल्द ही पूरा होने की उम्मीद है। 1965 में निर्मित पुराना पानबाजार आरओबी संरचनात्मक और परिचालन संबंधी सीमाओं से बंधा था, जिसमें अपर्याप्त ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज क्लीयरेंस था। इसकी वजह से 15 किमी/घंटा की स्थायी गति सीमा थी और एक डेड वायर ज़ोन बन गया था और इलेक्ट्रिक इंजनों की सुचारू

आवाजाही को प्रभावित करता था। इसके अलावा, खासकर भारी बारिश के दौरान बार-बार जलजमाव की समस्या उत्पन्न होती थी, जिसके कारण सिग्नल फेल हो जाते थे और यातायात बाधित होता था, साथ ही साथ यात्रियों को असुविधा होती थी। पानबाजार क्षेत्र में नए आरओबी का उद्देश्य अपने पूर्ववर्ती सभी सीमाओं को दूर करना है, साथ ही उल्लेखनीय संवर्द्धन भी करना है। 60 मीटर के लंबे स्पान के साथ, यह बेहतर ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज निकासी प्रदान करेगा, गति प्रतिबंधों को समाप्त किया गया है और बाधा-मुक्त ट्रेन परिचालन को सक्षम किया गया है। ऊँचे रेल पटरी से जल जमाव की समस्या भी दूर होगी, जिससे मानसून के दौरान भी सुचारू परिचालन सुनिश्चित होगा। इसके अतिरिक्त, पुनः डिज़ाइन की गई संरचना गुवाहाटी स्टेशन पर यार्ड रिमॉडलिंग की सुविधा प्रदान करेगी, जिससे अतिरिक्त प्लेटफार्मों और यात्री सुविधाओं के लिए जगह रहेगी। यह नया आरओबी ओवर-डायमेंशनल कंसाइनमेंट और सभी प्रकार के इंजनों (इलेक्ट्रिक लोको) की आवाजाही को भी सक्षम बनाएगा, जिससे इस क्षेत्र की औद्योगिक और आर्थिक प्रगति को भी बढ़ावा मिलेगा। नए आरओबी में तीन लेन की चौड़ी सड़क होगी, जो केवल दो लेन वाले पुराने पुल का स्थान लेगी।

न्यूज इन ब्रीफ

तृषा के अर्धशतक से भारत ने महिला अंडर-19 एशिया कप में बांग्लादेश को हराया

कुआलालंपुर : जी तृषा के नाबाद अर्धशतक की मदद से भारत ने बृहस्पतिवार को यहां महिला अंडर-19 टी20 एशिया कप क्रिकेट टूर्नामेंट के अपने पहले सुपर चार मैच में बांग्लादेश को आठ विकेट से हरा दिया। बांग्लादेश के 81 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत ने तृषा की 46 गेंद में 10 चौकों की बदौलत नाबाद 58 रन से 12.1 ओवर में दो विकेट पर 86 रन बनाकर जीत दर्ज की। भारत की शुरुआत हालांकि खराब रही थी और उसने 22 रन के स्कोर पर ही सलामी बल्लेबाज जी कमालिनी (00) और सानिका चालके (01) के विकेट गंवा दिए थे। हालांकि तृषा और कप्तान निक्की प्रसाद (14 गेंद में नाबाद 22, एक चौका, दो छक्के) ने तीसरे विकेट के लिए 64 रन की अटूट साझेदारी करके भारत को लक्ष्य तक पहुंचा दिया। इससे पहले बाएं हाथ की स्पिनरों आयुषी शुक्ला (नौ रन पर तीन विकेट) और सोनम यादव (छह रन पर दो विकेट) ने मिलकर पांच विकेट चटकाए जिससे बांग्लादेश की टीम 20 ओवर में आठ विकेट पर 80 रन ही बना सकी। भारत अब सुपर चार तालिका में पांच अंक के साथ शीर्ष पर है। बांग्लादेश चार अंक के साथ दूसरे स्थान पर है।

यूपी योद्धाज ने गुजरात जायंट्स को हराया, शीर्ष दो स्थान की दौड़ में प्रवेश किया

पुणे : यूपी योद्धाज ने बृहस्पतिवार को यहां प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) मुकाबले में दबदबे भरा प्रदर्शन करते हुए गुजरात जायंट्स को 59-23 से शिकस्त दी। गगन गौड़ा ने 19 अंक जबकि भवानी राजपूत ने सुपर 10 और सुमित ने हाई 5 अंक जुटाये जिससे यूपी योद्धाज की टीम की आठ मैच में अजेय लय जारी है। इस जीत से यूपी योद्धाज की शीर्ष दो स्थान पर रहने की उम्मीद प्रबल हो गई है।

अश्विन ने स्वदेश लौटने पर कहा, किसी तरह का कोई खेद नहीं

चेन्नई : ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के बीच में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करने के एक दिन बाद रविचंद्रन अश्विन गुरुवार को जब स्वदेश लौटे तो यहां फूलों की पंखुड़ियों और बैंड बाजे के साथ उनका स्वागत किया गया जिसके बाद इस ऑफ स्पिनर ने कहा कि उन्हें अपने फैसले को लेकर किसी तरह का खेद नहीं है। अश्विन गुरुवार को तड़के चेन्नई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचे जहां राज्य क्रिकेट संघ के अधिकारी उन्हें बाहर लेकर आए। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 765 विकेट लेने वाले इस 38 वर्षीय खिलाड़ी ने यहां पर मीडियाकर्मियों से बात नहीं की तथा वह अपनी कार की तरफ चले गए जहां उनकी पत्नी पृथी और दोनों बेटियां उनका इंतजार कर रही थी। घर पहुंचने पर उन्होंने अपने माता-पिता का आशीर्वाद लिया और फिर इंतजार कर रहे पत्रकारों से भी बात की। ब्रिस्बेन में तीसरे टेस्ट मैच के बाद संन्यास लेने की घोषणा करने वाले अश्विन ने कहा, 'यह कई लोगों के लिए भावनात्मक हो सकता है और उन्हें इसे पचा पाने में थोड़ा समय लग सकता है लेकिन जहां तक मेरा सवाल है तो मेरे लिए यह बहुत राहत और संतुष्टि की बात है। मेरे लिए यह सहज फैसला था और पिछले कुछ समय से मैं इस पर विचार कर रहा था। मैच के चौथे दिन मुझे इसका अहसास हुआ और फिर मैंने इस फैसले की घोषणा कर दी।' उन्होंने कहा, 'जहां तक मेरी बात है तो मेरे लिए यह (संन्यास लेना) बहुत बड़ा फैसला नहीं था क्योंकि मैं अब एक नई डगर पर आगे बढ़ रहा हूं।' अश्विन से पूछा गया क्या उन्हें इस बात का खेद है कि वह कभी राष्ट्रीय टीम की कप्तानी नहीं कर पाए तो उन्होंने इसे सिरे से खारिज कर दिया। उन्होंने कहा, 'अब मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे इस तरह का कोई खेद नहीं है। सच्चाई यह है कि मुझे रत्ति भर भी खेद नहीं है। मैंने लोगों को पछतावा करते हुए देखा है लेकिन मुझे किसी तरह का कोई पछतावा नहीं है।'

पिता ने कहा अश्विन का अपमान हो रहा था, ऑफ स्पिनर ने 'पिता की टिप्पणी' को नहीं दिया तूल

चेन्नई : संन्यास लेने वाले रविचंद्रन अश्विन के पिता रविचंद्रन ने बृहस्पतिवार को यह दावा करके विवाद खड़ा कर दिया कि उनके बेटे के संन्यास लेने के पीछे एक कारण 'अपमान' भी हो सकता है लेकिन इस अनुभवी ऑफ स्पिनर ने 'पिता की टिप्पणी' को अधिक तवज्जो नहीं देते हुए इसके लिए मीडिया ट्रेनिंग की कमी को जिम्मेदार ठहराया। अश्विन ने बुधवार को ब्रिसबेन में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ड्रॉ हुए तीसरे टेस्ट के समाप्त होने के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करके एक बड़ा धमाका किया। वह उसी शाम चेन्नई के लिए रवाना हो गए और बृहस्पतिवार सुबह यहां उनके परिवार और मित्रों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। अश्विन ने अपने फैसले को दिल की आवाज सुनना बताया और कहा कि यह कुछ समय से उनके दिमाग में था। उनके पिता ने हालांकि अपमान सहित अन्य कारकों की ओर संकेत करके लोगों को चौंका दिया। रविचंद्रन ने 'सीएनएन न्यूज18' से कहा, 'मुझे भी आखिरी समय में पता चला। जिस तरह से उन्होंने संन्यास लिया उसके कई कारण हो सकते हैं। केवल अश्विन ही जानते हैं, शायद अपमान के कारण।' बाद में हालांकि अश्विन ने इस मामले को शांत करने की कोशिश की और कहा कि उनके पिता 'मीडिया से बात करने के लिए प्रशिक्षित' नहीं हैं और उनकी टिप्पणी को गंभीरता से नहीं लिया जाना चाहिए। अश्विन ने अपने पिता का बयान सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद चुटकी लेते हुए लिखा, 'मेरे पिता मीडिया प्रशिक्षित नहीं हैं, डे फादर इन्नेडा इथेलाम (यह सब क्या है, पिताजी)।

न्यूज अपडेट

चैंपियंस ट्रॉफी : भारत की टीम नहीं जाएगी पाकिस्तान, हाइब्रिड मॉडल पर आईसीसी ने लगाई मुहर

दुबई : चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी को लेकर तनातनी आखिरकार गुरुवार को खत्म हो गई जब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने घोषणा की कि भारत 50 ओवर के इस टूर्नामेंट में अपने मैच मेजबान देश पाकिस्तान के बजाय किसी तटस्थ स्थल पर खेलेगा। वहीं पाकिस्तान के लिए भी 2027 तक यही व्यवस्था लागू होगी और वह भारत में होने वाले टूर्नामेंट तटस्थ स्थलों पर खेलेगा। यह समझौता 2028 में पाकिस्तान में होने वाले महिला टी20 विश्व कप पर भी लागू होगा। हालांकि अभी तक कोई औपचारिक घोषणा नहीं की गई है लेकिन भारत के चैंपियंस ट्रॉफी मुकाबले संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में होने की संभावना है। आईसीसी का बयान पीटीआई द्वारा पांच दिसंबर को दी गई खबर की पुष्टि करता है। आईसीसी के अनुसार, 'आईसीसी बोर्ड ने मंजूरी दे दी है कि 2024 से 2027 तक मौजूदा चक्र (जो भारत या पाकिस्तान में आयोजित किए जाने हैं) के दौरान आईसीसी टूर्नामेंट में भारत और पाकिस्तान के बीच खेले जाने वाले सभी मैच टूर्नामेंट के मेजबान द्वारा प्रस्तावित तटस्थ स्थल पर खेले जाएंगे।' यह व्यवस्था चैंपियंस ट्रॉफी 2025 (पाकिस्तान), अगले साल भारत में होने वाले महिला क्रिकेट विश्व कप और 2026 में भारत और श्रीलंका में होने वाले टी20 विश्व कप में लागू होगी। एक सूत्र ने कहा, 'भारत के चैंपियंस ट्रॉफी के मैच संभवतः यूएई में खेले जाएंगे। जहां तक भारत में महिला वनडे विश्व कप का सवाल है तो भारत और पाकिस्तान के मैच श्रीलंका में हो सकते हैं।' भारत ने सुरक्षा चिंताओं के कारण फरवरी-मार्च में होने वाली चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान की यात्रा करने से इनकार कर दिया था। भारतीय खिलाड़ियों ने 2008 के मुंबई आतंकी हमलों के बाद से पाकिस्तान में कोई मैच नहीं खेला है जिसमें 150 लोग मारे गए थे। दोनों देशों के बीच आखिरी द्विपक्षीय टूर्नामेंट 2012 में हुआ था। पाकिस्तान की यात्रा के लिए भी भारत सरकार की मंजूरी की जरूरत होती है जो अपने फैसले पर अडिग है।

रिचा और स्मृति के अर्धशतक, भारत ने वेस्टइंडीज को 60 रन से हराकर महिला टी20 श्रृंखला जीती

नवी मुंबई, 19 दिसंबर (भाषा) रिचा घोष (54) ने महिला टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 18 गेंद में सबसे तेज अर्धशतक के विश्व रिकॉर्ड की बराबरी की जबकि सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना (77) ने भी अर्धशतक जड़ा जिससे भारत ने बृहस्पतिवार को यहां तीसरे और निर्णायक टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले में वेस्टइंडीज को 60 रन से हराकर तीन मैच की श्रृंखला 2-1 से अपने नाम की। भारतीय महिला टीम ने अक्टूबर 2019 के बाद घरेलू सरजमीं पर पहली टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला जीती है। भारत के 218 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए वेस्टइंडीज की टीम ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए और टीम नौ विकेट पर 157 रन ही बना सकी। चिनेल हेनरी 16 गेंद में चार छक्कों और तीन चौकों से 43 रन बनाकर टीम की शीर्ष स्कोरर रहीं जबकि डिएंड्रा डोटिन (25) और कप्तान हेली मैथ्यूज (22) ने भी उपयोगी पारियां खेलीं। मेजबान टीम की तरफ से स्पिनर राधा यादव ने 29 रन देकर चार विकेट चटकाए। भारत ने इससे पहले रिचा और स्मृति की पारियों से चार विकेट पर 217 रन बनाए जो इस प्रारूप में टीम का सर्वश्रेष्ठ स्कोर है। इस प्रारूप में इससे पहले भारत का सर्वश्रेष्ठ स्कोर पांच विकेट पर 201 रन था जो उसने इसी साल एशिया कप में यूएई के खिलाफ बनाया था।

विजय हजारे ट्रॉफी में बंगाल के शुरुआती मुकाबले के लिए शमी को आराम

कोलकाता : भारत के अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को शनिवार को हैदराबाद में दिल्ली के खिलाफ बंगाल के विजय हजारे टॉफी के शुरुआती मुकाबले में आराम दिया जायेगा। बंगाल क्रिकेट संघ (सीएबी) ने बृहस्पतिवार को यह घोषणा की। भारत के लिए अंतिम दफा 2023 वनडे विश्व कप में खेलने वाले शमी ने टखने की सर्जरी के बाद लंबे समय बाद घरेलू क्रिकेट में वापसी की थी। वह तब से बेंगलुरु में बीसीसीआई के उत्कृष्टता केंद्र में चोट से उबर रहे थे। उन्होंने बंगाल के लिए शानदार वापसी कर सात विकेट झटके और टीम को इस रणजी ट्रॉफी सत्र में पहली जीत दिलाने में मदद की। उन्होंने हाल में समाप्त हुई सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में नौ विकेट झटके। हालांकि उनके घुटने में सूजन अब भी चिंता का विषय बनी हुई जो घरेलू टी20 प्रतियोगिता के दौरान हुई थी। ब्रिस्बेन में ड्रॉ हुए तीसरे टेस्ट के बाद शमी की उपलब्धता के बारे में लगातार पूछे जाने पर रोहित शर्मा नाराज दिखे। उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि एनसीए (राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी) से किसी को उनके बारे में बात करनी चाहिए कि वह कहां रिहैबिलिटेशन कर रहे हैं। उन लोगों को ही आकर हमें कुछ अपडेट देने की जरूरत है। '' रोहित ने कहा, ''मैं समझता हूं कि वह घर पर बहुत क्रिकेट खेल रहे हैं लेकिन उनके घुटने को लेकर भी कुछ चिंतायें हैं। हम तब तक कोई जोखिम नहीं लेंगे जब तक कि हम उनकी फिटनेस के बारे में 200 प्रतिशत सुनिश्चित नहीं हों। '' विजय हजारे ट्रॉफी में शमी की भागीदारी को चैंपियंस ट्रॉफी सहित आगामी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट के लिए उनकी उपलब्धता निर्धारित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जा रहा है।

SCAN & REGISTER

VYAPAAR EXPO

Powered By

DECO DREAMS A 360° COMPLETE FURNISHING SOLUTION | ASIAN INSTITUTE OF EVENT MANAGEMENT

KOLKATA'S BIGGEST BUSINESS EXPO

20th FRIDAY | 21st SATURDAY | 22nd SUNDAY

DECEMBER 2024

TIME: 11AM TO 7PM

BISWA BANGLA EXHIBITION CENTRE, NEWTOWN

Guest Speaker ASHNEER GROVER

Guest Speaker KEWAL KISHAN

- VISITORS ENTRY FREE
- CLAIM YOUR FREE ₹999 BLUETOOTH NECKBAND BY SHOWING THIS AD AT RG CELLULAR STALL - FIRST 2000 VISITORS
- HOURLY 11 LUCKY DRAW WINNERS & MANY MORE SURPRISES...

ORGANIZED BY VYAPAAR ZONE Asli Business Ab Hoga

CO-SPONSOR SABURI PLYWOOD

*Visitors are Requested to Wear Formal Attire and Carry their Visiting Cards

ASSOCIATE SPONSORS: maithan alloys ltd | GST DOST क़ाबिल भी है और भरोसेमंद भी | Duckback | The Pep House

BROADCAST SPONSOR: GTPL KCBPL

BUSINESS AUTOMATION PARTNER: AUTOMATE BUSINESS | PHOTOGRAPHY PARTNER: NISHANT SHARMA PHOTOGRAPHY | COFFEE & TEA PARTNER: COFTEA | TECHNOLOGY PARTNER: REBIN INFOTECH | WHATSAPP MARKETING PARTNER: SHUBHAM COMMUNICATION | GIFTING PARTNER: RG Cellulars | MAGAZINE PARTNER: POLICE PUBLIC PRESS 9377100100, 9477100100 | DRIVER PARTNER: DRIVERS4ME | GREEN PARTNER: Sunflower | HOSPITALITY PARTNER: SMM | BANKING PARTNER: kotak Kotak Mahindra Bank | EMAIL PARTNER: OneXSolutions | RADIO PARTNER: 91.9 friends fm

www.vyapaarexpo.com +91 81008 49701

वर्ष 9, पूर्णांक 4094 अंक 244, RNI No WBHIN/2016/66788, सर्वांग प्रकाशन के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **सरोज राय** द्वारा 17, बालमुकुन्द मक्कर रोड, 2सरा तल्ला, कोलकाता-700 007 से प्रकाशित। एल. एस. पब्लिकेशन्स प्रा. लि. 4, कैनल वेस्ट रोड, कोलकाता-700 015 से मुद्रित।
सम्पादक- **अनिल कुमार राय** (पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी), विज्ञापन एवं प्रसार-9874555256/7044444522, ई-मेल news@samagya.in